"तं सन्तः श्रोतुमर्हन्ति
सदसद् - व्यक्ति - हेतवः ।
हेम्नः संलक्ष्यते ह्यग्नौ
विशुद्धिः श्यामिकापि वा ॥"

—कालिदास

प्रथम सर्ग

शील भरतक मध्य भारत उदित आभ्यक भानु
जागु जगमग ज्योति यश जग रूप माला भानु
बुद्धि विद्याबल-विभवसँ बढ़ल विश्वाँह नाम
ज्ञान गरिमा गुणक गणना सतत हो सभ ठाम

भूप नीतिक रीति पालथिं सतत रहु दक्ष
सुयश चन्द्रक चन्द्रिका जग चमक अतिशय स्वच्छ
द्वापरात्मक समय कुरुकुल विदित भारत धाम
हस्तिनापुर राजधानी नृपक परम ललाम

ताहि वंशक वंशधर दुइ कुमर भावी भूप
जेठ आन्हर, छोट रोगी भाग्यहिं क अनुरूप
जेठ कुमरक नाम छल धृतराष्ट्र जग-विख्यात
छोट पाण्डु कहाउ तनिकर बुद्धिबल अवदात.

जेठकेँ भेल बीस गाहो पुत्र परम नृशंस
एकसँ बढ़ि कुटिल छल सभ, भेल तेँ विध्वंस
छोट रोगी भव प्रतापी पुत्र पाओल पाँच
देव-अंशहिं कथित मुनिवर बात मानिअ साँच

धर्म अंशहिँसँ युधिष्ठिर, भीम वायुक अंश
इन्द्र-अंशहि वीर अर्जुन चन्द्रकुल-अवतंस
नकुल ओ सहदेव माद्रिक तनय जग-प्रख्यात
ई दुइ सोदर रहथि सुरवैद्य-अंशहि जात

यद्यपि पाँचो वीर अनुपम विदित जगत अनन्य
तदपि अर्जुन मध्यमणि सम सबहुमे अतिधन्य
पाण्डु-सुत पाँचोक पाण्डव नाम जग भरि जान
ख्यात कौरव जगतमे धृतराष्ट्रहिँक सन्तान

अन्ध जेँ धृतराष्ट्र तेँ नहि नृपति-पद जन देल
तय कनिष्ठो पाण्डु नृप-पद प्रतिष्ठित भेल
पाबि पाण्डु महीप-पद निज राजवंशक रीति
प्रजा-पालनमे प्रशंसित रहु प्रवीण सुनीति

नीतिमे अति निपुण मंत्री विदुर मान्य विशेष
राजकाजक मन्त्रणासँ सुयश पसरल देश
शाप वश तजि बाल बालक पाण्डु गेल सुरधाम
लेल तेँ धृतराष्ट्र ततक्षण भूप-पद तेहि ठाम

नव नृपति, नव नवे अनुमति करथि देश प्रचार
प्रजा रुचिकर वा अरुचिकर, न कर तकर विचार
होथि शिक्षित सबहुँ बालक मुख्य करतब मानि
विविध विधि आचार्य द्रोणाचार्यकेँ सनमानि

देल एक सय पाँच बालक तनिक संग लगाय
धनुर्विद्या सिखथि कौरव पाण्डवो मन लाय
जखन हो शिक्षा-परीक्षा जीति अर्जुन लेथि
कय प्रशंसा द्रोण सभ खन आशिषो शुभ देथि

बाहुसँ द्रोणहिँ छोड़ाओल जीति द्रुपदहिँ आनि
गुरु-प्रतिज्ञा पूर्ति कर गुरु-दक्षिणा मन मानि
द्रोण परम प्रसन्न मन, कहि 'पार्थ!' आशिष देल
ताहि दिनसँ पार्थ संज्ञा भय विशेषण गेल

अंग-अंगक गठन सुनि लखि जोश मनमे बाढ़
वीर रस तनु धारि कय जनु मेदनीमे ठाढ़
दण्ड भुज कोदण्ड सम दय जग उदण्डहि त्रास
सुनहि पार्थ प्रचण्ड शत्रुक कर घमण्डक नाश

काम-जग विजयी जनिक दृग-ज्योतिसँ जरि गेल
तनिक संगहु समरमे यश-अर्जन अर्जुन लेल
जनिक छविगुण अप्सरा मन मदन उन्मद चपल
तदपि ओ मग धर्म चलइत विपथ पद नहि धयल

नय अनय संसर्ग सहजे बुद्धि जग जन पाब
ओषधिक योगेँ रसायन विविध गुण ग्रहीत
सतत शकुनी सन कुसंगी रहथि कौरव संग
निरत कत कत कुटिलता पर दुष्टताक प्रसंग

रहथि दुष्टक सन सलाही मन्त्रणामे दक्ष
नीति धर्म सुचातुरी परिपूर्ण पाण्डव पक्ष
पाण्डवक मन नीति-रत, दुर्नीति कौरव ध्यान
दुहुक सम्मेलन बुझक थिक दूध-अम्ल समान

भाग्य सय, शकुनी सहायक अनयकूट-निधान
बढ़ल दुर्योधन-हृदयमे कूट-नीतिक ज्ञान
मिलटि जरि मरि जाय पाँचो जेँ ने पाबय राज
-ताहि हेतुक कतेक कौशल कयल रचि रचि ब्याज

राज भोगक लोभ ककरा होअ ने हिय-बीच
ताहि कारण काज कए कर जगत ऊँचो नीच
लोभ श्यामलस्वभावसम धिक बुधिभ्रम ताहिविचारि
बंश निज बनहुँ लपाक पर बंश लय कर मारि

भाग्य-भास्कर भारतक नभ शिखरसँ टरि गेल
तदपि भाग्य अखण्डता नय कूट बहुरत भेल
कूटनीति प्रचण्ड आतप, असह सभकाँ लाग
अनय-उष्णहि तापित भय कहुँ चाह सभ घर त्याग

दलक गजाहिसँ धुमी घन घुमड़ि नभ चढ़ि गेल
बात वातक प्रेरणासँ शान्ति मानि छुन लेल
बहुल कूट पिहाड़ि बड़का विपति कामक रुप
अंतमे तत्काल भय रह हारि शान्ति स्वरुप

कूट नीति प्रहार कौरव कयल कनओक खेरि
कृष्ण रक्षक पाण्डु-पुत्रक विकल कक बिनु देरि
प्रजा पीड़ित कए परस्पर असह दुर्दिन भेल
गृह-कलह नृप-बकक बुधिभ्य देश-रक्षा लै गेल

कुल-कलह की कुशल-कारक? करिय मन बिश्वास
वंश संरक्षक रचाइ अनर्थक वंश संरक्षक नाश
कयल भारत भाग दुइ एक लेल कौरव भाय
शेष पाण्डव पाँच भाइक हेतु देल बेराय

पाँच पाण्डव छेल गछि जे भेल हुनका देश
इन्द्रप्रस्थहि अपन स्थापित राजधानी बेश
सकल सुन्दरताक सीमा नगर रचना नीक
भुवनभरिमे भव्य एकरहि अवस कहबे ठीक

सुदक्ष शिल्पी अति प्रयत्नहि देहन कय रचि देल
जकर उपमा जगतमे कवि ताकि थकि रहि गेल
देखि शोभा नगर सुरपुर भूप मन ललचाय
तनय सुखदायक विचारहिं रहथि हिय हरषाय

राज-भवनक भव्यतासँ भव्यता भय हीन
भवहि की कहु ताहि लोकक लेल छवि जनु छीनि
सौधपर दड़ दण्ड मण्डित ध्वजा रह फहराय
भव्य हम इन्द्रासनहुसँ, कहय हाथ उठाय

अँ सुमेरु सुमेरु अचलक सँ कि तुलना पात्र
नित्य नव रचनाक शोभा की छोड़य दरसाव
विश्व परिखाले पड़ल लखि गहन छोड़ह भान
सौध छाड़ो दुसर पलिगृह हेतु कयल पयान

नभ चिचुम्बित सौधपर मणि-खचित कलश प्रकाश
अवगनित रवि छवि छ्हि कर जनु दिवसपतिसँ हास
दिव्य दीपक दीप्ति द्युतिमय चमक चकमक देखि
नखत नभ तजि नगर-शोभा जनु रहल निसि पेखि

राजपथ राजित अनूपम सतत सिञ्चित वारि
पार्श्व पथ तरुवरक शोभा पथिक जन सुखकारि
धवल वीथी बहुल चहुदिशि विविध भाँति सँभारि
स्वच्छ नभ सन धवल रह से मलिन वस्तुहि टारि

वाटिका विटपावली फलयुत नमित बहु डारि
धनी मानी नम्र भय रहु, कहय जनु परचारि
दिवस-निशि भरना भहरि रह वाटिका बर बीच
जनु प्रगटि पाताल-गंगा सतत रहु जल सींचि

कुसुम कानन कुञ्ज गुञ्जित भ्रमत भ्रमरक भीर
रसिक रस-लम्पट रमित रस रहत जैं नहि थीर
सुधासम सलिलहिँ भरल सर निरखि सुरसर क्षुब्ध
फटिकमणिसँ रचित थल भल जगत जन मन लुब्ध

हंस सारस चक्रवाकादिक चहक चहुँ ओर
कञ्ज कुमुदिनि कुसुम रञ्जित रसिक-चित जनु चोर
वस्तु विश्वक विविध विधिसँ वृत्त बीच बजार
गणक गण गणना-प्रवृत्तहुँ पावि सक नहिँ पार

नृप युधिष्ठिर नीतिरत नित चारि भाय सहाय
प्रजा पूरल सम्पदासँ सतत रह हरषाय
प्रजा प्रभुकेँ पूज्य मानय देवदेव समान
थिकथि नृप पालक पिता सम राखि मनमे ध्यान

नृपति नियमहिँ निरत नय-पथ अनय धर नहिँ कान
कपट शिसि दृग भ्रमहुँ नहि पड़ ओष अघ से जान
रहय सभ मन सुखित सभ जन बहि लहरि आनन्द
प्रजा पाण्डव-राजमे सभ बूझि पड़ निर्द्वन्द्व

ही प्रद्योपहिँ शब्दमे तहँ दीप शब्द उचार
नववधू रति रमित पतिसँ करय क्रोध प्रचार
रागमे अनुराग गायक मात्रकेँ दिन-याम
दिनक गणना मध्य आबय ततय सोमक नाम

शब्द विग्रह श्रवण सुनि पड़ देवप्रतिमहि ठाम
द्वेध कोकिल–काक ठामे पुत्र पोषक काम
कविअहिँक चित निरत चिन्ता चारु चरणक लत्त
नारि नव दृग-चोर सुच-मन-धन हरणमे दत्त

पापहिँक भय सभक मनमे, धर्महिँक एक लोभ
मोह मानस मनुज जनमक, मरणहिँक चित क्षोभ
इन्द्रप्रस्थक शत्रुजित छथि पार्थ रक्षक वीर
विभव बल यश बढ़य नित नित निरखि शत्रु अधीर

देखि दुर्योधन दुखितमन द्वेष द्विगुणित जागु
युक्ति यतनहिँ दुष्टता करबाक पथमे लागु
अर्जुनक के कहि सकै अछि सकल शौर्य-प्रताप
यशकथा जग मध्य जनिकर एकसँ एक व्याप

द्रौपदी-उद्वाह हेतुक द्रुपद नरपति धाम
भूप भरि भुवनक भरल भल सभा शोभा ठाम
एकसँ छल एक वीरक मण्डली जुटि गेल
मोछ पर दय ताव पुनि पुनि कमर कसि कसि लेल

लक्ष्यवेधी प्रण पुरबमे जगत वीर ने दक्ष
पार्थ नाम सदर्थ कय कहु वेधि देलन्हि दक्ष
उठल जयजयकार सुमनस कयल सुमनक वृष्टि
पायकेँ जयमाल दय कहु द्रौपदिक हिय हृष्टि

जीति जग नृप बिच स्वयंवर द्रुपद-तनया लेल
जैं जगतमे शोर विजयक अर्जुनक भय गेल
मानि माइक बात पाँचो भाय कयल विवाह
मातृभक्तिक भाव रत भय करथि सत्र निर्वाह

देखि दिनचर्या सभक मन ई करय विश्वास
प्रकृति पाँचो मर्मइन्द्रिय संग कर सुख वास
सबहुँकाँ सौजन्य सभसँ भ्रातभाव विशेष
कैयो किनकहुँसँ ने कहुलन धरथि मन विश्लेष

जेँ द्रुपदतनया-स्वरूपक लालची जग भूप
तेँ कहक थिक हुनक सन अछि एक हुनके रूप
विशदवर्णन करबमे जोँ केयो कवि मन देथि
सोन पीतरि तुल्य कहि कहि व्यर्थ अपयश लेथि

एक पुरुषकेँ नारि अनेको पूर्वकालसँ देखी
एक नारिकेँ पाँच पुरुष, ई नवे रीतिकेँ लेखी
धर्म-भीरु पाण्डव कटु धर्मक कयल कियेँ अपमाने
पड़त गहन संकटमे की हो, कै कय सक अनुमाने

उनटल काज अवश दुखदायक जेँ ई जग जन जान
तेँ ई चिन्ता चित मे सब खन होअ न आनक आन
श्रीकृष्णक मन रहक सभ खन बनल रहथि सभ ठाम
तेँ देखक थिक सभकाँ मन दय की होइछ परिणाम

द्वितीय सर्ग

श्रीकृष्ण रक्षक प्रत्यक्ष सदैव जाहि
आपद् अनेक हुन मेँ टरि जाय ताहि
दैवात दुःखक दशा यदि होअ प्राप्त
ओ कौतुकीक किछु कौतुक मात्र व्याप्त

धर्मैक-चिन्तन सदा अनुरक्त चित्त
धर्मानुसार सभ कर्महिँमे प्रवृत्त
धर्मावलम्बि छथि धर्मक अंश-जात
तेँ धर्म नामहि युधिष्ठिर विश्वख्यात

बीभत्सु भीम नकुलादिक जे कनिष्ठ
सद्धर्म चिन्तक सदा सत्कर्मनिष्ठ
आज्ञा अधीन नृपहीक विराजमान
श्रीकृष्ण रक्षक सदा मन मध्य ध्यान

हो नित्य-कृत्यक क्रिया समयानुकूल
जे किन्तु हो सबहिमे धर्मैक-मूल
से दृष्टि राखथि सदा सभ राजभृत्य
तेँ धर्मराज-यश बाढ़ै नित्य नित्य

मन्त्री सुमन्त्र सविशेष सुमन्त्र दक्ष
धर्माधिकारिक विचार विशेष स्वच्छ
अन्यान्य भृत्य निज कर्मक पालु पक्ष
बाढ़ै यशोधन सुपुण्य सभैक लक्ष

मुक्तादि रत्न खचितो रचितो विशेष
चञ्चातपो कनक - दंडहि बद्ध वेश
सिंहासनो सजल हीरहिं सँ अनूप
के पार पाब महि अद्भुत रोचि रूप

शोभा असीम छल सभ्य सभाक वेश
भूपाल भव्य सभ बैसल देश देश
तृष्णाऽऽतुरे दर्शहि भूपक बाट पेख
स्वातीक चातक यथा धन दीश देख

भूपाल भ्रातृगण संगहि सँ पधार
भै गेल सभ्य सभ स्वागत हेतु ठाढ़
मोदें उचारु विरुदावलि बन्दि - वृन्द
दुहुँ ओर छुहि चल चामर मन्द मन्द

आसीन धर्म नृप - आसन उच्च जाय
अन्यासनो पर विराजल चारि भाय
जे मन्त्रणाक नृपसँ गहि भार लेल
से सावधानहि उपस्थित आबि भेल

राजै सुछत्र छवि सुन्दर श्वेत वेश
ओने छपाकर छटा छिति छापि वेश
मुक्ताक-झालरि विलक्षण तरहि छाज
हो भान संग शशि तारकवृन्द राज

धै चारु चामर सुधारि सुचारि नारि
ढारैत कञ्ज कर कङ्कण झंकारि
बोधो कराए रह भूषण सावधान
आस्वादनार्थ करु आकुल भृङ्गगान

भूपेन्द्र मौलि मुकुटायत दीप्ति देखि
माणिक्य मौक्ति रत्नादि अनूप पेखि
ई भान हो नृपति नीक हृदै विचारि
नीक स्थले - ग्रह गणो रह रूप धारि

केयूर कुण्डल विराजित की अनूप
अन्यान्य भूषण विभूषित अंग भूप
वस्त्रादि दिव्य महिपोचित सज्जवेश
जे देख मानथि मने महि मे सुरेश

दण्डार्थे दण्ड भल राखल ताहि ठाम
जैओ कदापि कहिओ नहि होअ काम
राजाक हेतु थिक राखब ई अवश्य
तेँ कैल धारण युधिष्ठिर नीतिवश्य

देशैक सभ्य रचने परमेष्ठि रूप
नारायणे सन प्रजा परिपाल भूप
आराति हेतु हर क्रोधित होथि भान
एकै युधिष्ठिर विभाति त्रिमूर्तिमान

ने हो नृपेन्द्र मद सँ मन मे विकार
ई सर्वदा नियम सँ हिय मे विचार
मानी प्रजा सबहि पुत्रहु सँ विशेष
जे राज मे नहि कदापि पड़ै कलेश

पालू प्रजा परम प्रीति क रीति राखि
जे आब भेँटु मुद सँ मृदु वैन भाखि
कै देथि पूर्ति अभिलाष अवश्य ताहि
दानादि मध्य कहियो नहि हो कोताहि

प्रच्छन्न भेष चलि देखु प्रजाक कष्ट
भार्ता मनुष्यक दशा करु अति नष्ट
आचार शुद्ध सभ निर्भयरूप ज्ञान
शुद्धे प्रवन्धु यम शासक भूप मान

न्यायाधिकारिगण धर्महुमे सुधीर
प्रख्यात न्यायक विवेचन क्षीर - नीर
जे हो विचार समकाल विशुद्ध न्याय
न्यायार्थ व्यक्ति कहिओ विमुखो न जाय

शास्त्रीक सूत्रधर शासनभार धारि
कर्त्तव्य पालन कठोर करु विचारि
हो राज काजक विवेचन की अनूप
जे देखि ताहि पथ मे चलु आन भूप

प्रत्येक काजक निमित्त विचारि काज
सम्पादनार्थ नियमेँ पृथके समाज
सम्मान्य सम्मति प्रजाक विशेष ध्यान
जैँ ने प्रजाक खिन्न हो कहिओ मलान

कोषो धनाधिपक कोषहुँसँ विशेष
रत्नादि वस्त्र रह सञ्चित धान्य वेश
आधारहीनहुँ प्रचारित आय आव
धर्मादि पुन्य कहु के गनि पार पाव

रक्षार्थ राज बहुसैन्य रखैक ठीक
ई राजनीतिक विचार विचारि नीक
सन्नद्ध राखु चतुरंग प्रवीण वीर
जे देखि देखि अरि हो मन मे अधीर

से वीर-व्यूह रचना रचि अङ्ग अङ्ग
जानो कला अमित युद्ध जितैक ढंग
अभ्यास हेतु नित कौतुक मध्य लीन
जैँ युद्ध शास्त्र निधि पारहु हो प्रवीन

चारो नियुक्त वहुतो बहु भेष धारि
की हो कतै सतत देखि रहै विचारि
चर्चा चलाय शुभ रैयति चित्त भाव
एकान्त पाबि प्रभुकेँ सभ से सुनाव

भूपाल संग सचिवादि अनेक दक्ष
हो मंत्रणा कठिन कोटिक राखि लक्ष
गूढ़ाशयी पर अमात्यक जे विचार
तर्कें निमग्न मन सोचथि वार बार

आकस्मिके मधुर शब्दहिँ युद्ध गान
दूरस्थितेँ सबहिँ मन्द सुनैत कान
की थीक ताहि हित चंचल चित्त भेल
भूमे ने देखि पड़ने नभ दृष्टि देल

से देखि देखि सभ भेल विचारग्रस्त
तर्कों वितर्क कत कै रहु भेल व्यस्त
जे जे विचारि बजला सब व्यर्थ भेल
तैओ कतोक जन सोचि सुनाय देल

दु:खोपरान्त सुख राज करैत जानि
आनन्द बोधक प्रयास विशुद्ध मानि
कों इन्द्र आबथि एतै मिलबाक काज
गन्धर्व गान करसंगहि वीण बाज

की करएँ अर्जुन कुछ मतभेद जानि
जैँ से निवृत्त भय जाय सुयुक्ति ठानि
तेँ आबि चाहथि निवारण होअ द्वन्द्व
ई तेज तप लपनैक हुअए अमन्द

मौनावलम्ब किछु काल करैत तर्क
ई पाकशासन थिका अथवा कि अर्क
से सोच बीचहि युधिष्ठिर कै विचार
आकाश देखि अति हर्षहिँ ई उचार

देखु दिनेश-रथ मार्गहि मध्य जाय
इन्द्रैक नेत्रगण दीपित ने देखाय
ने ई थिकाह रवि, इन्द्र ने ताहि जानु
ई किन्तु आन महिमामय मूर्ति मानु

की आइ पुण्य क प्रभाव प्रत्यक्ष भेल
की दुर्दशाक दिवसो सभ दूर गेल
की दिव्य देह दिवि देखि पड़ैछ चैह
देवर्षि नारद अवश्य थिकाह सैह

की ऊर्ध्व पुण्ड्रक प्रभा चमकैछ भाल
अंकस्थ तुम्बरु विराजित दिव्य ताल
माला विशाल गर शोभित की अनूप
देखू प्रत्यक्ष छवि नारद दिव्य रूप

की पुण्य पुञ्जक प्रभा प्रकटायमान
प्रत्यक्ष तेज तप दीपित भासमान
अन्तस्थ इष्ट-पदपंकज मध्य ध्यान
दै ताल शुद्ध स्वरसँ रत सामगान

निश्चै विचारि सभ स्वागत हेतु धाय
लै पाद्य-अर्घ पथ बीचहिँ दौड़ि जाय
भूमे उपस्थित विलोकि महामुनीश
पञ्चाङ्ग पाण्डव पदाम्बुज राखु शीश

भै ठाढ़ पाण्डव प्रसन्न नवाय माथ
आनन्दमग्नहि विनम्रहि जोड़ि हाथ
मौनावलम्ब किछु काल हृदै विचारु
भक्तानुरक्त धर्म भूपति ई उचारु

"से धाम धन्य, नर धन्य कहैक थीक
जे पाय पूत पद-पद्म-पराग नीक
जे देवदेव नित सेवथि पूर्ण काम
से आबि भाग्यहि उपस्थित एहि ठाम

दिव्यासनो पर सुआदर युक्त आनि
पूजा विधान नृप कै रहु श्रेष्ठ मानि
हो पाँच भाइक हृदै पुलकायमान
की पाँच तत्त्व तन मध्यहि प्राप्त प्राण

धै हाथ पद्म पद धोयल शुद्ध वारि
भक्तानुरक्त सभ मस्तक लेल ढारि
अन्यार्चनो कर'क योजनमे समस्त
थी नारदागमहिँ सँ सभ भेल व्यस्त

ई नम्रता स्वजनता सदसद्विवेक
ई भक्ति भाव विनयान्वित जे अनेक
आनन्द भै कहु मुनीश कथा अनूप
ई थीक पैघ कुलजातक शुद्ध रूप

ई सुनि कै रहल पाण्डव मौन धारि
सुनैछ थीक तकरा मनमे विचारि
आनन्त्र आसन विलोकथि पाद पद्म
ले मानि लेथि मन मंगल मोद सद्म

ई देखि नारद उचारल बात बेश
व्यर्थे करी जनु अहाँ अतिशै कलेश
से भेल आदर विशेष कऽ निवृत्त
आज्ञानुरक्त लखि भेल प्रमोदचित्त

कुन्ती मुनीश शुभ आगम भेल जानि
हा हर्ष करइत पुण्यहि प्राप्त मानि
लै द्रौपदी सपदि आगत ताहि ठाम
आनन्त्र नाथहिं करु मुनिकेँ प्रणाम

आशीष देल शुभ हर्षहि ई सुनाय
सुपथ्य विश्वविजयीक कहाउ माय
दाजेँ विनम्रहि दुहु कर जोड़ि ठाढ़ि
कुन्ती सुनाउ निज मानस आर्ति बाढ़ि

"संसार सार सुख नागरि मान सेह
पुत्रक पुत्र नहि कोर खेलाय जेह
ई लालसा हृदय पुकारिक हे कृपालु
भेटी पुराउ जन जाहिर हौ दयालु"

साधु मुनीश सभ पूरत चित्त आश
धैर्यावलम्बि, जनु होउ अहाँ उदास
माली प्रयत्न बहुतेँ ब्रतती लगाउ
बालें विलोकि फल हर्ष विशेष पाउ"

ई सुनि गुनि मन पूरल मानि काम
कुन्तीक संग पुनि द्रौपदि कै प्रणाम
आशावलम्बि दुहु हर्षित होय भेलि
आज्ञानुसार गृह-मारग मध्य गेलि

बद्धाञ्जली नृपति सोदर संग ठाढ़
भक्तानुरक्त मन मोद अमन्द बाढ़
आनन्द-अश्रुक प्रवाह चलैत नैन
इच्छा प्रकाश मनमे, मुखमे न बैन

ई देखि नारद उचारु दयार्द्र-चित्त
"वत्स, सुनू हमर आगम की निमित्त
पाञ्चाल राज प्रतिपालिअ राजनीति
से थीक भूप भुविहक सुयोग्य रीति

संसार मे सभ चलौ सत मार्ग धारि
ई कै विचार सभकेँ हम दी उचारि
हैँ तीन लोकहुँ भ्रमी अहँलोक जानि
से थीक साधुक क्रिया करतव्य मानि

हेमन्त सूर्य सनमान प्रजाक ध्यान
मध्याह्न ग्रीष्म रवि शत्रुक चित्त जान
न्यायाधिकार रत पावस सूर्य रूप
ई थीक रीति नित राखथु भूमिभूप

जे पुत्रहीन तकरा हित पुत्र रूप
जे तातहीन जन ताहि पिता स्वरूप
माता विहीन जन रक्षक रूप माय
वित्तेँ विहीनक सदा विभवेँ सहाय

नाथो अनाथ जन हेतु अमूल्य भृत्य
जे बन्धुहीन तकरा कृत बन्धु-कृत्य
राखी सदा एहि प्रकारक चित्त ध्यान
ई थीक भूपक क्रिया सब काल जान

जे उन्नतोन्नत व्रती तकरा लथाड़
जे हीन दीन तकरा बल दै उठाड़
जे जाहि योग्य ततबे फल लेथ नीक
मालीक रूप नृपकेँ रहबाक थीक

देखीअ दोष-रहिते सभ राजकाज
पाली प्रजा परम प्रीतिहिँ त्यागि व्याज
दुर्भिक्ष दुःख-दलनार्थक जे प्रबन्ध
दै चित्त चिन्तन करी कत कै निबन्ध

जैँ रीतिनीतिक विचारहिँ राज काज
जैँ भाइ नेहहुँ कदापि न किछु व्याज
जैँ उत्तमोत्तम प्रबन्धक नित्य ध्यान
तेँ देवराजक सभा यश होअ गान

कर्त्तव्य बन्धुक हिताहित आबि देव
होथी छुटायब थिकै अघभार लेब
आचार भूपक तुलै सब लोक-वेद
तेँ दोष सूनि मम आगम ई सखेद

थी चन्द्रमाक गुण तेजि कलङ्क बाज
ई छिद्र दर्शक जनैक सदैव काज
से मोँ स रूपहिँ कथा कइ कान आय
ई क्षुद्र रीति श्रुति स्वर्गहुँमे लजाय

जौँ नीति रीतिक निबाहबमे प्रवृत्त
तौँ ई कोना सबहुँ कैल महा कुवृत्त
जे सुनि कै अनुचिते मन मध्य लाग
ई कीर्त्ति पूर्ण शशि लागल दोष दाग

की एक नागरि विआहल पाँच भाय
से कोन शास्त्रक मतेँ मन मानि न्याय
हैते अवश्य सभकाँ हृदयैक शूल
मानू किया अहँक ई झगड़ैक मूल

सोमो बृहस्पति दशा नहि देखि लेल
ताराक हेतु हुनका गति कोन भेल
तैयो अहाँ सबहुँ कैलहुँ ई अकर्म
ने बुझि लेलहुँ गृहस्थक कोन धर्म"

ई सूनि नम्र नत अर्जुन भै विनीत
जे थीक पैघक ओतै वजबाक रीति
बद्धाञ्जली कहल ई "सुनु योग-लीन
जैँ रीति बीतल कही हम व्याज हीन

ने भेल भाइ सभमे किछु मात्र भेद
पाञ्चालि चित्त नहि मानल किछु खेद
आनन्दमग्न रहिकै नियमीक हीन
जैँ बीति गेल सुखसँ बहुतोक दीन"

से सूनि मन्द हँसिकै गुन बाजु बात
"की ई अहाँ सबहिँ काँ अछिए न ज्ञात
देखी चरित्र जग जानि करी विचार
संसार सोदर-विभेदक द्रव्य द्वार

सुन्दोपसुन्द दुइ सोदर दैत्य-राज
महाबलें अवश जीतल देव-राज
भै गेल द्वन्द्व छवि देखि तिलोत्तमाक
भेला दुहु दुहु करें युधि मृत्युभाक

राजाक काज पर रैयति राख दृष्टि
कर्त्तव्य पालन करै गुनि सौख्य-सृष्टि
जँ पहि रूपहिं प्रजा करए कुकर्म्म
तँ की कहाँ सबहिंकाँ नहि हो अधर्म्म

आदर्श मानि सभ पैघक काज देखि
ई ठीक नीक मन मध्यहिं लेइ लेखि
तेँ पैघकाँ करक ठीक विचारि नीति
जेँ देश मध्य नहिँ व्यापि सकै अनीति

भूपाल नीति विपर्यँ यदि देश देखि
धर्म्मों धुरीण अयशो जग मध्य लेथि
लोकोक्ति मध्य सबकाँ सभ ई कहैछ
पैघैक रीति मत छोट जनो चलैछ

तेँ ई कहाँ सबहिंसौं नहि भेल नीक
ई आत्म-द्रोहकहु भय बीज ठीक
तेँ युक्ति किछु करबे थिक ई विचारि
पाञ्चालि आरि पहिलो यदि गेल धारि

ई सभ पाण्डव सुनाओल ई विनीत
"दैवात कारण यदि करलौँ अनीति
माताक बात सब मानव नीक जानि
तेँ पाँच भाइ हम ई मत लेल मानि

माता पिता कहथि से कर्तव्य ठीक
ई शास्त्रकारक कथा नहिएँ अलीक
जेँ रामचन्द्र प्रतिपालल तात-बात
तेँ मानि लेल जगमे यश भेल ख्यात

पाञ्चालि जीति पथसँ हिय हर्ष धारि
'मा! ई सनेस अनलौं' कहलौं पुकारि
से सुनि कै घरहिंसँ कहलैन्हि माय
भोगू सहर्ष सुखसँ मिलि पाँच भाय

आज्ञाव्रती व्रत निबाहब मानि नीति
तेँ भै प्रवृत्त सभ कैलहुँ ई अनीति
भावी अमङ्गल विनाशक युक्ति नीक
हे देव! पूज्य कृपया कहबाक ठीक

ई नम्र भावक कथा मुनि सुनि लेल
कै कै विचार मन मे पुनि बाजि देल
"जेँ द्वन्द्व होए नहिँ मारग नीक जानि
तेँ किछु बात हमरो सभ लीअ मानि

बाँटीअ पाँच हर दै कहु वर्ष दीन
जे हो समान सभमे नहि किछु हीन
से मानि लीअ मनमे सभ भोग भाग
ई काल भिन्न थिक द्रौपदि गेह त्याग

जे आन अंश दिन मध्य करी प्रवेश
से वर्ष बारह न आबिअ गेह देश
भै कै व्रती रहिअ कानन कै निवास
की तीर्थ देश भ्रमणे कय दोष नाश

जे रीतिसँ सबहुकेँ सुलभो सुभाय
ताही क्रमे नियम राखिय पाँच भाय
सौकार्य्य जे सभक देखिय सैह नीक
सौहार्द्र हानि नहि हो, करबाक थीक"

ई युक्ति उत्तम विचारल जे मुनीश
स्वीकार कैल सभ सानुज ओ महीश
पाली अवश्य एकरा कह धर्म्म जानि
दोषीक दण्ड सहने नहि होअ हानि

ताहीक सम्मुख करी प्रण चित्त धारि
तेज स्वरूप अपने तपने विचारि
मानी कथा कहल जे अहँ बूझि न्याय
आयो पर्णे प्रणहु पालब पाँच भाय

ई बात सुनि अति हर्षित भै मुनीश
भै माथ हाथ हँसि देलन्हि ई अशीश
बाढ़ौ पराक्रम सदा दिन वृद्धि धर्म्म
दुःखो सहैत नहि त्याग करी सुकर्म्म

पुरुष पुरुषकेँ विपत्ति निकष पर होअ परीक्षा
की मनुष युद्धाग्नि मध्य हो तकर समीक्षा
तेँ करतव-पथ त्याग करथ नहि निक शिक जानु
विपत्ति-तिमिर पड़ि धीरक प्रज्ञाद्युति पड़ मानु

सभ नत-शिर सुनल मुनि-वच सबहुँ चित्त लगाय
तखन पाण्डव जोड़ि युग कर कहल अति हरषाय कै
करी किन्तु विशति हम पुनि सुनिय मुनि मन लाय कै
हमर अभिमत जेहन आछि से अवश पुराय कै

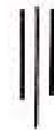
माया प्रबल सदा रही नहि बुझी की काज कोना करी
ताहूमे नय कूट कोटि पड़ने चिन्ता-निमग्ने रही
दोषो कै कहु किन्तु बूझि न पड़ै तेँ ई करी प्रार्थना
चैतन्यैक निमित्त आबि अपने शिक्षा करी सर्वदा

कर्त्तव्ये थिक साधु संतक सदा रोही क नाशी व्यथा
रोगार्तो हित वैद्य रूपहिँ बुझू वैचर्यि भाषू कथा
जैथे आय पिता समीप कहि कै प्रस्थान कै देल से
पाँचो पाण्डव कै प्रणाम फिरला आनन्द हृद् भेल से

प्रण कै प्रण पालन कठिन ई जग कै नहि जान
विधि वश विघटन काल मे देखक थिक दृढ़ मान

प्रणक पराभव पड़नहिँ
हो प्रण जाँच
पुरुष प्रशंसित दृढ़ रह
जानिअ साँच

कौतुकी कृष्णक कला कहु के कहै
छनहि छन आनैक आनै कय रहै
रहथि जनिका पर सदय निश्चै कही
दुखक परिणति सुखहिँ मे कय रह सही



तृतीय सर्ग

श्री समृद्धि सुख सहित सबहि सहजहि नित पावथि
सपनहुँमे नहि कैखो शोक सोचब मन लावथि
राखथि निज कुलधर्म मर्म नैतिक सभ जानथि
पाण्डव पाँचो भाय सुजन गुरुजन सम्मानथि

राज-काज सभ होअ उचित नृपनीति नियाहथि
घरक काजमे अधिक बात सभ जन प्रतिपालथि
भेद-भाव भय अमहुँ होअ नहिं किनकहु मनमे
मानू एके प्राण बसै छथि पाँचो तनमे

शान्ति-सहित सुख राज-भोग रत दिन कागे
भाग्य-चक्र परिभ्रमण पाबि छित दुखमय भेले
उकर भावना अमहुँ कैअखो कखनहुँ नहि कैले
अकस्मात से विषय राजगृह आबि तुलैले

भाग्य चक्रहिंक भ्रमण मनुजकैं सुख-दुख-दायक
भाग्य चक्रहिंक भ्रमण करै रघुहु महिनायक
भाग्य चक्र भ्रमि करै छनहिंमे अनरथ भारी
प्रात राम नृप होइत भेला तिय संग बन चारी

भाबी थिक अति प्रबल ताहि निश्चय कय मानू
छनमे आनक आन होअ मिथ्या जनु जानू
छला सामवत वेद-न्याय-ज्ञाता यश भारी
इन्द्र-जाल. गति सामवती भेला से नारी

कालक वश भव विलय चराचरकैं अनुमानिय
कालक वश सुर असुर विष्णु हर अजकैं जानिय
काल क्रूर कर्त्तव्य-निरत त्रुटि छन नहिं लाबय
कालक वश दिन सुखद रैनि भयप्रदो लखावय

छल निशीथमे थकित विश्व निद्रा-वश भेले
बुझि पड़ जगत प्रपञ्च सकल समदल भै गेले
शान्त समय मे शब्द स्वभाविक जे सुनि पाबी
थिक भव निद्रा श्वास नासिका से मन लाबी

झिलमिलाय किछु काल ज्योति शशि भय गेल मन्दा
जनु-तुराइ तम तानि सुतल आलस-वश चन्दा
ताराबलि निज पतिक खोजमे क्रम-क्रम आबथि
उल्का रूपहिं कैअखो भूमिमे ताकय धाबथि

नगर कोलाहल शान्त शान्तिमय जगकैं देखिय
पड़ै शब्द किछु कान ताहि अपवादे लेखिय
नृप-गृह घण्टा घड़ी-घड़ीमे पहरु जगावै
तरु-शाखा पर घूक बाजि कय डरक डरावै

कखनहुँ कतहुँ शृगाल भूकि कय शोर मचावै
पहरु-गण औंघाय ताहि ललकारि जगावै
उल्का-मुख मुख खोलि चोरकैं बाट देखावै
अथवा प्रेतक नाच समय दीपक हरसावैं

कालरात्रिसँ घोर अन्हारो भेल विशेषे
जनु निशि अवसर पाबि घाइ कलि नगर प्रवेशे
शीघ्र दिव्य द्युति देखि द्वापरक भय मन भेले
तैँ से बाहर नगर मध्य व्यापित भय गेले

सभी लेल विश्राम शान्ति प्राण भरि सुखलायब
पड़ल शान्तिमय राज्य प्राप्त होइत की पायब
चलय उचक्का चोर चौंकि चुपचुप व्यभिचारी
जाहि सिखल नहिँ शक्ति ताहि के हो सहकारी

रक्षक नगर सुदत्त लक्ष्य निज राज्य सब खन
जँ ने होअ अपहरण कतहु किछु रैयति जन धन
गुप्त प्रगटसँ भेद नगर जन जनहिंक राखै
तैओ तस्कर क्षुद्र अपन अभिमत अभिलाषै

पाण्डव राजक सुयश शोर जग के नहिँ जानै
तैं कि तस्कर रहै सबहुँ मनमे अनुमानै
आबी भूत प्रच्छन्न रूप तस्कर भै धाओल
जकर पराभव परम पार्थ परतच्छे पाओल

सम तस्कर ततहुनहि चोराखोल चन्दा-चाली
प्रिया पडुक मन जुगुति चोराखोल अवसर जानी
निद्रा क्रम-क्रम जगत जनक चित चैन चोरौलक
आबी अर्जुन राजसुखक चोरी चित धैलक

न्यायी नृप मन मानि नगर निर्भय निशि मानै
जतय ततयः रह पड़ल विभव छुति मन नहि आनै
गोवर्धन धिक दीप देखि द्विज ताहि ने बान्हथि
दोहन कालहिँ ताहि हाँकि निज निज घर आनथि

जगत जीव जत सबहुँ सतत सन्तान सिनेही
लगहि रहो की दूर कतहुँ विलगय नहि तेही
निशि मे विप्रक गाय जाय बाछा लग बैसल
निद्रित गृहपति जानि चोर चुपहि घर पैसल

तन पर अपर ने वस्त्र शिखा सिर नहिए मानो
तन छवि सम निशि मिलित भेद मन भ्रमहुँ न आनी
चक्षु चपल चहुँ ओर चकी श्रुति रह समधाने
पद पिपीलिका गतिहिँ कह के चोरहि जानै

चलल चोर लय गाय हुँकरि ताकल बाछा दिशि
जनु कह रहब सचेत बेनु भयप्रद अछि ई निशि
बाछा करुणा नाद कैल द्विज दौड़ल आयल
देखल तस्कर दुष्ट गाय लय जाय पड़ायल

दौड़ि पकड़ि द्विज गाय कहल पर धन किए लेलेँ
धर्मी नृपतिक राज-मध्य ई अनुचित कैलैँ
ब्राह्मण बलसँ बली चोर छोड़ल नहि गोधन
कहो नृपतिसँ जाय युक्ति द्विज आनल ई मन

धाय राज प्रासाद आर्त भै विप्र पुकारल
हाय ! गाय मोर हरल चोरसँ लड़ि हम हारल
क्षत्री कर धनु बाण आर्त परित्राण निमित्ते
उठथु नाथु भट पार्थ हरथु दुख जे द्विज चित्ते

द्वारी कह, सुनु बात पार्थकेँ किये जगायब
सेनापतिकेँ कहू धेनु अहँ बिनु श्रम पायब
क्रोधहिँ भाषल विप्र, अर्जुनहिँ जौँ न जगायब
देब शाप हम घोर अवश अहँ नशिए जायब

सुनितहिँ द्वारी दौड़ि जा कहैत पार्थ जगौलक
विप्रक जे आक्रोश आर्ति से शीघ्र सुनौलक
सुनि अर्जुन घहराय विप्रकेँ लगहि बजाओल
कहि सन्तोषक कथा बहुत विधि हुनहिँ बुझाओल

विप्र कहल धन-धेनु विप्रगण मुख्ये मानथि
दूध दही घृत पंच गव्य संग्रह चित आनथि
देव पितर ऋषि मनुज यज्ञ साधक ई जानू
कर्मच्युत द्विज धेनु-हीन निश्चय मन मानू

कहल पार्थ अहँ एक धेनु हित सोच ने आनू
देव गाय वश द्विज पयस्विनि निश्चय मानू
पाण्डव-कुल जन-दुःख दूर करवामे पारथ
तत्काले लिय हाँकि बात मम बुझू यथारथ

भाषु विप्र थिकि सुरभि रक्षिणी आन जगत जन
नृपक हेतु ई मुख्य धर्म श्रुति शास्त्र वचन मन
की छल ओ चाण्डाल चोर ई नियम भ जानी
गोहरणी गोहनन पाप निश्चय सभ मानी

नृपति नीतिमे प्रथम प्रजा-पालन मन मानिय
आन आन जे बात सबहुकेँ गौणेँ जानिय
राज-मूल थिक प्रजा, तकर रक्षा बिनु कैने
की फल यश धन धर्म कैओ भूपति छथि लैने

आवेशहिँ कह पुनः "पार्थ! ई निश्चय मानू
उत्तम वंश नृप लेथि प्रजा-रक्षण हित जानू
जौं ने हमर ओ धेनु चोरसौं अहाँ छोड़ायब
तौं पापी पद अवश पाण्डुकुल सभ जन पायब

पार्थ विप्र-वच सुनल, सुनल मुख सोचहिँ भारी
जनु विधि चाहथि करै पाण्डवहु अत्याचारी
धर्म नामसँ जनिक जगतमे यश भल जागै
से निरङ्क शशि अंक पङ्क ई चाहै लागै

कहल विप्र अहँ एखन सोच की मनमे लावी
गाइक महिमा रोम-रोम बुझि की अनठावी
जन्मावधि दय दूध मनुजकाँ पालन करनी
अन्त समयमे होथि गाय वैतरणी तरणी

गो ब्राह्मण रक्ष पाल धर्म क्षत्रिक सभ जानै
प्रण पालब मे अति प्रवीण पाण्डव कुल मानै
सङ्कट दुहुक विचारि आइ आलस जौं करबे
अयश शोर जग होएत घोर नरकहुमे पड़बे

कहल पार्थ की एक गाय हित गञ्जन भाषी
के हम, के अहँ, तकर भेद किछु मन नहि राखी
होअ जतेक अभिलाष धेनु ततबा हम देबै
के सभ विधि सन्तुष्ट पापभागी नहिँ हैबै

ई सुनि कै द्विज कहल तुरत जे कहलहुँ वाणी
चोरक डरसँ अहाँ बनैछी धेनुक दानी
पाण्डव-कुलमे पार्थ नामसँ छी प्रख्याते
तैओ कायर किऐ बनै छी अजगुत बाते

मिथ्या पौरुष पार्थ धर्म-आडम्बर मिथ्या
मिथ्या यश विस्तार प्रजा पालक प्रण मिथ्या
मिथ्या रत नृप देश बात सुख मानी मिथ्या
मिथ्या गौरव करब कौरवक प्रति मति मिथ्या

पार्थ कहल, बस बहुत कहल चुप रहु जनु भागी
हमहुँ पाण्डुकुल-जात मनहिँ कुल-गौरव राखी
धन-प्राण द्विज जानि कहल हम कथा अनेको
फणिपति फणहि पहार आब बाजब थिक एको

गिरि आयहु चल होथि, अचल निज नाम मेटाबथि
उदधि त्यागि निज नियम उछलि संसार डुबाबथि
बारिद बरिसथि बह्नि, बह्नि निज तेजो टारथि
पाण्डव कुल नहिँ धर्म्म विपथ सपनहुँ पद धारथि।

ई कहि अर्जुन मुग्ध मनहि कर्त्तव्य विचारथि
धनुष द्रौपदी-भवन भूप निज समय बितावथि
छुटै न बिनु धनु धेनु, धनुष अनने गृह-त्यागी
दुइ-नृप शासन पड़ल प्रजा सन मन दुख भागी

पार्थ नाम धै आर्त-जनक हित चित नहि जागत
तँ पुरुषार्थक सुयश घोष तेजि दोषे बाजत
नष्ट होअ बरु देह ने धर्म्मक मेँड़ नशायब
प्राण-प्रणे एहि काज साधनहिँमे मन लायब

लायब धनुष अवश्य विप्रहुँक धेनु छोड़ायब
प्रात होइत हिय हर्ष सहित बन तीर्थहुँ जायब
रहत वीर कुल सुयश जगतमे युग-युग जानी
छिः अनित्य ई देह, सत्य तकरा कय मानी

चलल चित्तमे सोचि द्रौपदी- शयनक गेहे
आएल तेहि छन उमड़ि वेग मन प्रिया सिनेहे
पद थिर चञ्चल चालि चलय कै धैलक रीती
चल विश्रब्ध नवोढ़ केलि-गृह मन भय प्रीती

आबि द्वार भै ठाढ़ गाढ़ दुख मनमे जागल
सोचि सुमरि प्रण पूर्व प्रेमपथसँ मन टारल
करी अपन कर्त्तव्य पराभव पड़ै ने शैले
धै केवाड़ मृदु स्वरहिँ जगाबक उपक्रम कैले

प्रिये ! प्रिये !! नहिँ नृपति-प्रिये ! सुनु सुनु मम बानी
आयब मन्दिर मध्य काज आरत निज जानी
सुनि अति आतुर शब्द चेति चित सुधि बिसराओलि
उठली चौंकि घबड़ाय द्रौपदी द्वार छोड़ाओलि

कहलि, आउ अहँ एखन भूप निद्रा वश जानू
कहु-कहु की भेल कतै, भेद जनु किछु मन आनू
की किछु कैल प्रपञ्च शत्रु ,की थिक किछु आने
भेल कोनो उत्पात नगरमे, हो अनुमाने

जाय भवन लै अस्त्र शस्त्र अर्जुन ई भाषल
अयलहुँ एही हेतु एतै ई जैँ छल राखल
महादोष भै गेल तकर प्रतिकारो करबे
प्रण पालबमे विपथ बनहु पद एक ने धरबे

पार्थ प्रौढ़ निज प्रणहि जाय कै धनु लै आनल
विप्र-धेनु हित खैँचि कान धरि डोरी तानल
धाय जाय ललकारि चोरसँ गाय छोड़ाओल
दै द्विज धेनु अशेष आशिषो मुनिसँ पाओल

जागल सुनि ललकार कोलाहल नगरहिँ भेले
की थिक दौड़ल सबहिँ पार्थ पथमे चल गेले
देखल गाय छोड़ाय परम हर्षित चल आबथि
ई रक्षक सभ काल रहथु सभ देव मनाबथि

आबि शास कय लेल महल बाहर तत्कालहिँ
भवन गमन नहि थीक उचित बिच बारह सालहिँ
मानल मनमे हर्ष सुयश थिर निज कुल राखल
त्यागि राज सुख भोग शोक मनमे नहि माँखल

आतुर कुरुसँ द्रुपदसुता नृपपद गहि लेले
चौंकि चकित से पुछल किऐ निद्राच्युत कैले
कहल द्रौपदी, भेल नगर किछु बड़ उत्पाते
आबि अनवसर पार्थ लेल शर धनु निज हाथे

सुनितहिँ नृप अकुलाय जाय बाहर ई देखल
राजभोग तृण तुल्य मानि कय पार्थ उपेखल
पुछि बूझि सभ बात भूपकेँ अति दुख भेले
जनु छुरि मर्म्महिँ अकस्मात् शले धसि गेले

कहल पार्थसँ उचित थीक नहिँ अहँ गृह त्यागी
कै विवेचना बुझू अहाँ नहिँ दोषक भागी
जेठ केलिगृह गमन छोट दोषी नहिँ मानी
थिकथि पिता सम जेठ, बात ई शास्त्रक जानी

पुनि अर्जुन कर जोड़ि विनय युत वचन सुनाओल
बुधि पड़ बन्धु ममत्व मुकुर मतिकेँ अन्हराओल
भेलहुँ मुनिक समीप वचनबद्धो एक संगे
तखन भवन जौं रही होयत से की प्रण-भंगे

कहल भूप जौं शास्त्र वचन पर करी विचारे
शास्त्र-अवज्ञा अवश दोष थिक कह संसारे
द्वार त्याग वनवास तुल्य थिक नीतिक वाणी
से बरु द्वादश वर्ष रही एकरा हम मानी

कह अर्जुन ई कथा पढ़ल सन हम अनुमानी
बाल अबोधक बोध हेतु जनु भाषी वाणी
धर्म्मक गति अति सूक्ष्म कहल अपनहि से जानी
तखन कही ई कथा कोना भै कछु दृढ़ ज्ञानी

कहल युधिष्ठिर तीर्थ वनक गमने प्रण कैलहुँ
तीर्थ वनो निज राज भ्रमू वन-वासी भेलहुँ
रहत सदा सम्मिलन सबहुँसँ, अरि भय मानत
प्रण मर्य्यादा रहत जकर यश जग जन जानत

कह अर्जुन रघुनाथ पितहुँ प्रणके प्रति पालल
चौदह वर्ष सहर्ष अपन राजहिँकेँ त्यागल
की नहिँ छल ओहि राज विपिन तैँ अनतै गेला
सहि सहि कष्ट कतेक प्रणहि वनवासी भेला

कालागमने राम निषेधल जे जन आओत
तकर हेतु प्रण कयल अवश फल मरणे पाओत
दुर्व्वासागम भेने लखमणो दोषक भागी
राम दण्ड दै देल, यद्यपि अतिशय अनुरागी

ऋषि दधीचि दए अस्थि अपन प्रण पालन कैले
बनल इन्द्र कर अस्त्र जाहिसँ जग यश लेले
थिक अनित्य ई देह नित्य थिक धर्म्मक काजे
जाहि पुण्य बल मनुज जाय बस देव-समाजे

नृप शिवि पक्षी प्राण रक्षणक प्रण मन मानल
दै देव देहक मांस बाजसँ बाजी ठानल
अंग काटि सभ देल मोह ममता नहि राखल
पूरि अङ्क पुनु विष्णु मुदित बच सादर भाषल

सहस गाय नित दान करथि नृप नृग सन दानी
एक धेनु देल दान दोष ई भ्रमवश मानी
तेँ गिरगिट भै अन्धकूप मे दिवस गमाओल
धर्मक गति अति टेढ़ निगम-आगम समुझाओल

सभ जन अपनहुँ कहल धर्म गति सूक्ष्मे जानू
युक्ति प्रपञ्चक कथा ईश वंचक मन मानू
धर्म स्वच्छता चाह मलिनता पाप बिकारी
जे अग से पथ गहथि होथि नरकक अधिकारी

क्षण-भंगुर संसार कियो ने रहल ने रहते
भव सागरक प्रवाह पड़ल सब क्रम-क्रम बहते
रहत जगतमे लीक पाथरक धर्म अधर्मक
तेँ थिक सभकेँ करक चित्त चिन्ता शुभ कर्मक

सहि कै कत-कत कष्ट सबहुँ मिलि काल गमाओल
जेँ प्रण-पालक मध्य प्रथम गणना यश पाओल
जौं रिपुसैँ पद देब सुयश नशते ध्रुव जानू
बहु धन-सञ्चित सदन आगि फूकब सन मानू

सुनि पार्थ मुख बैन यथारथ बात विचारल
युक्ति यतनसँ सोचि नृपति निज मनमे हारल
कहल रहब नहिँ अहाँ ताहिसँ होयत हानी
दुष्टक प्रबल प्रपञ्च पुञ्ज रक्षक नहि जानी

अहिँक बलक सभ काल शत्रु गण भय मन मानथि
होयत पराभव अवश ताहि निश्चय जिय जानथि
तँ कय अरि छल छद्म नाश करबे मन लाओत
सिंह-शून्य वन जानि जम्बुको धूम मचाओत

अहँक परोक्षेँ परम पराभव हम सभ पैबै
बुझि पड़ शत्रुक कूट-नीतिसौं नशिए जैबै
अहँ बिनु हम ई कहो कथ्य से तथ्ये मानू
बिनु प्राणक पुतरी समान पाण्डव-कुल जानू

कर्ण कर्ण-पथ पड़ल जखन तसु अभिमत वाणी
अवश आबि उत्पात करत से; हम अनुमानी
धीर रहत नहि केओ युद्ध साजत ओ जखने
जिबितहिँ अर्जुन जितल पाण्डवहुँ भाखत तखने

चढ़त धनु लै चपल चित्त अरि रण मदमाती
अस्त्र-शस्त्रसँ सज्ज संग गज-वाजि-पदाती
करत घोर संग्राम पराभव पड़तै भारी
के बिनु अर्जुन होयत प्राणहुक रक्षा-कारी

पड़त पराभव परम बात जौं ई हम जनितहुँ
तौं नारद कृत नियम कठहुँ की कानहि धरितहुँ
भेद-भाव नहि छलैः पूर्व त सब मिलि रहितहुँ
पड़इत जौं किछु दोष रोष तेजि से बरु सहितहुँ

जनिक नाम सुनि शत्रु सतत भय पावै भारी
जनिक जगत यश जागि रहल रण रिपु-संहारी
जनिक बाहु-बल बलेँ रही निश्शङ्क सभ जन
सदन सहोदर त्यागि हाय से करथि गमन वन

कहल पार्थ जनु करी सोच हम नहि बिलमायब
देखब देश विदेश तीर्थ वन परिचय पायब
बारह वर्ष बिताय फेरि हम घुरि घर आयब
शत्रुक कृत जे कष्ट तकर सभ कसरि मेटायब

भीमक सन भल आए बली रहक भै रहता
हुनक गदा - आघात शत्रुमे कहु के सहता
उद्यत रणमे ठाढ़ देखिकै के अरि भिड़ता
फफरि दर्प थिक क्रुद्ध सर्प - फणि कर भै भिड़ता

दीन - जनक दुख दूर करब जग थिक पुरुषारथ
पड़ि असमञ्जस धैर्य धरब करतब पुरुषारथ
प्रण कय प्रण - पथ गहन गमन जन कह पुरुषारथ
विकट संकटक बीच डटब साँचे पुरुषारथ

कह नृप; अहँ धर्मज्ञ मर्म सभ तत्त्वक ज्ञानी
विद्या बुद्धि विवेक पौरुषक पूजक , मानी
सभ विधि हो निश्चिन्त्य तखन बहुतो की कहबे
अवधि शान्त धरि अनुज विछोहक दुख सभ सहबे

बहुत शोकक वेगने लखि नृपतिकैँ अर्जुन तहाँ
कहु भ्रातृ - प्रेम-समुद्र उमड़ल ताहिमे भसलौं अहाँ
धैर्य - तट अवलम्ब मानी उचित विपतिक कालमे
रही निश्चय सतत ई थिक सहज गुण भूपालमे

कहैछी विनम्रे सुनू ई कथाकैँ
मने धैर्य धै कै बिसारू व्यथाकैँ
रहू स्वास्थ्य चित्तेँ कथा मोर मानू
कते पार्थ आश्वास वाणी बखानू

श्री रामचन्द्र फिरि कैल न , राजभोग
पाओल की ने पुनि कै नल राज योग
व्यामोह त्यागु, धरु धैर्य, विचार बात
हेमन्त दीर्घ निशि की नहिँ हो प्रभात

देल गीर्वाण - पति - गर्व कैँ चूर्ण कै
मेरु नख - नोक अग्रहि उठौने
एहन श्रीकृष्ण परतच्छ जेहि पक्ष मे
रहथि सभ काल ई जग जनौने

जे कैथो ताहिसँ उद्धतँ युद्धरत
सहजमे नशत से अवश जानू
चित्तमे धैर्य धरु सोचकैँ त्याग करु
शत्रुसँ जनु डरु बात मानू



चतुर्थ सर्ग

श्री युधिष्ठिर अर्जुनक युत - गीतिका सन सुनि कथा
निशि तिमिर पट समटि चलि भेलि मानि कै मनमे व्यथा
रंजित दिक्पति नारि पहिरलि श्वेत अम्बर आय की
अकचकाय उषा विलोकलि वदन-पट उनटाय की

तखन नभसँ छुपल से लखि एहन सन अनुमान हो
जेहन उसरल सभा गेने सभ्य थल सुनसान हो
अथह वायु बहारि नभकेँ स्वच्छ कैलक भान हो
नारि नभ हेरालि बिछलन्हि हार लै, ई ध्यान हो

निशि निहारि निशेश निधुवन - निरत तारा सङ्गमे
दुलहिने छपकै छली ओ भङ्ग करु रस — रङ्गमे
तारका - गण ताकि थाकलि परम व्याकुलि जे भेली
मुख मलीनहि हारि प्रातहि लाजसँ की छपि गेली

प्रात होइतहिँ पूर्व दिशाबे लालिमा नभ भेल जे
अरुण स्वागत हेतु अरुणेँ फरस डिग सजि देल से
अनल - कोणक अनल दक्षिण - अनिल पाबि प्रचण्ड भै
पसरल पलाही सैह जानू कल्प अन्तक रूप धै

वृष्टिमे सभ कर्मनिष्ठे होय, ई मन मानि कै
पैघ व्रत अनुसरत छोटे ईन्दु, ई अनुमानि कै
प्रात कालहि देल आहुति हव्य अनलहि आनि की
पूर्व दिश तकरे शिखाहिक लालिमा थिक, जानि ली

चढ़ल तरु पर चिड़इ चह - चह करै चेतन जग भरै
निरखि दिनमणि - ज्योति मोदहि गान मङ्गल अनुसरै
पत्र-अग्रहि ओस - कण भर पुष्प - युत ई बुझि पड़ै
दिवसपतिकेँ सकल तरुवर अर्घ्य लै अर्पण करै

निशि निशाचर चलय तेँ जनु रहलि भूमि डेराय कै
पुनु पताल ने जाय लै कहु धरत मोहि लुकाय कै
ओस-कण रहु घाम भरि तन दूबि रोमहि छाय जै
प्रात दक्षिण - पवन परसहि सुखहि जाय सुखाय से

पाबि निशि जग कत कुकर्मी करय पाप अपार जेँ
ताहि सँ भय जाय अतिशय असह भू केँ भार तैँ
श्रमहि श्रमकण अङ्ग-अङ्गहि मध्य रह छवि छाय कै
दूबि रोमहि प्रगट प्रातहि रहय जग दरशाय कै

उच्च उदयाचलहि प्रातहि उदित रवि - छवि भेल जे
इन्द्र वरुणो - बालकेँ यत् रचल कन्दुक - खेल से
ई प्रतच्छे थीक आबय गगन गलिसँ ध्यानमे
प्रात साँझ प्रमोद युद्ध जस करथि नभ मैदानमे

पूर्व दिक्पति शपित मन्त्रक कै रहल छवि साधना
ताहि लै निज तन समारधि उपकरण आराधना
लालिमा नभ लाल पहिरन वस्त्र थिक ई भान हो
बिम्ब रवि थिक भाल सिन्दुर - बिन्दु, ई अनुमान हो

वेद स्वर-युत विप्र-बटु रहु छुब्ध कर कुश धारि कै
करथि प्रातक कृत्य मन दै उचित मन्त्र उचारि कै
देथि आहुति शुचिहिमे शुचि स्रुवहि आज्य समारि कै
पाठ--पूजा निरत सभ जन ध्यान चित निरधारि कै

पथिक पथ प्रस्थान कै रहु बान्हि पाथे संगमे
कृषिक कर्मक बस्न लागल कृषक आस उमङ्गमे
पंक्ति पनिभरनीक पहुँचलि प्रात पनिघट ठाम जे
यूथ-यूथक गमन-आगम परम शोभित धाम से

मुदित चकवा-दम्पतिक चित सम्मिलन दुहु पाय कै
मुदित देखिअ धेनु वत्सहि दूध पान कराय कै
मुदित बुझि पड़ सर सरोरुह पुञ्ज-पुञ्ज विकासमे
पवन परसहि भूमि झुकि रह कुमुदिनिक परिहासमे

दुखित तजि मुद कुमुद भै रह मुनल मुख पछताय कै
दुखित अतिशय बग्गु उलूको वृक्ष-कोटर जाय कै
दुखित दग मुनि बादुरो तरुवे लटकि रह, मानि लो
ककरो सुखद ककरो दुखद सन जग पहेलो जानि लो

प्रात प्रमुदित जगत जन लखि बुझि पड़ै अकुलाय कै
शोक सम्पहि भूप भवनहिमे बसल जनु आय कै
जे सकल आमोद उत्सल हर्म्यहिमे दुख पाबि कै
शेष भय जनु से मिझायल मोद-दीपक आबि कै

पंथ हेतुक वस्तु प्रस्तुत पार्थ निज-हित कैल जे
स्वल्प रूपहि निज निर्वाहक उपकरण भरि लेल से
माय गृहिणी राज-भवनक त्यागु भोग अनूपकेँ
तुच्छ धन-जन-मोह जहिना आत्म-ज्ञानी रूपकेँ

पार्थ प्रातक कृत्य कै सभ लोक लेल बजाय कै
चलक थिक बन आब सत्वर कहल से समुझाय कै
सज्ज भै निज अस्त्र-शस्त्रहिँ भूप भीम प्रणाम कै
आशिषो सहदेव नकुलहिँ देल शुभ मन-काम कै

कहल सभ मिलि रहब सभखन सहय जेठक बातकेँ
छोड़हुक परितोष राखब रोष मनसँ कात कै
वचन थैधनकेँ यथायथ सद्विवेकक कर्मसँ
प्रबल परिपन्थक प्रपञ्चहिँ पड़ब नहि एहि कर्मसँ

धर्म्म नर्म्महि कहल, की कहु जे कहल अछि पूर्वमे
मौन भै रहबैक भेलो सुनत बात अपूर्व जे
देखि कै घर जन दशा जे उचित करतब से करू
जैं न दोषी होइ हम सभ असह दुख सहबो बरू

भीम भाषल, कहब की हम अहाँ छोड़ै भाइ छी
दुष्ट दुर्ज्जन बीच सभकेँ छोड़ि कै बन जाइ छी
एक आशा अछिक निशिदिन हो विपत्तिक कालमे
अहँक गेने बुझि पड़ै अछि पड़ब दुःखक जालमे

ठाढ़ गाढ़ विपत्ति मे रहु नकुल सहदेवो दुहू
दुसह भाइ विछोह सँ हत ज्ञान भै गेला जनू
कहथि नहि किछु, टकटकी दग लखू भरि भरि नोर सौं
मन विथा थिक पैघ बूझू विकरि कानथ शोर सौं

दुखित लखि, कहु पार्थ, की भय करी बुझू बात कैँ
शश शृगाल समान अरि की सहत भीमक घात कैँ
अरि कर्ण-करि कर आक्रमण तौं केहरी सन आबवे
मारि मस्तक फारि मुक्ता फल-सुयश जग पाबवे

मातु कुन्ती कहथि कहइन्हि, देख नारद ढाक ई !
परहुँ मेघ बनहिँ अदरस की प्रतिज्ञा खाक ई !
हमि तपासी प्रकटि निशि दिन रहथि चकाकित शुक्ति में
दोसु लग अग दैँ अनाथथि छी निरत पथ मुक्ति में

करति कहलनि जानि कुन्ती, दोष कम्सक थीक ई
कहाँ ओ वनवास मेने प्राण रह से नीक की
धन्य माद्री दैँ कहक विक प्राणपति सँग गेलि जे
सुत-वियोगक दुःख ने देखलि स्वर्गवासी भेलि से

प्रभु पापी तन देअल नहिँ कष्ट लग धरि आएकै
पार्थ ! पार्थ !! पुकारि फुटुदय महय आश लगाएकै
पुत्र वियोगिनि यति अभागलि नाम जगत धराएकै
अर्जुन पारद् दरप निरखे लतत नोर बहाएकै

[illegible] मेदिनि-मपन-दुःख सों नोर बहइत देखबे
खीलिआई कोमल अधन दैँ सुदृढ मन कै लेखबे
परिजनकेंगिनि पूत्र जग में रहै सबकाल कालि के
[illegible] से हम मुना बालु मही निश्चय मानि कै

[illegible], भार नैन रहलो भेल शान्तिक प्राण नवै
पावन योरहि युत पदाहुत कुटीरे में भोजन लवै
परि विश्रान्ति अन्हार जग पथ अन्हुआ सब भेलि कहीं
पानि नव धन पगए वर्षा तुमर बहु लखइत कहीं

एखा दोना देखि माइक दुखित मन अति भेल जैँ
पार्थ पढ़ि के शोक-सागर सुनमला गहि लेल जैँ
माय दूजा लोकिक ई गति, कप प्रभुक पुनि भावना
[illegible] उपदेश में पड़ल मन हुइ निवाहब दृश कोना

पार्थ मनकै धीर कए कहु, मा ! गुरु मन बात ई
प्रभुक पालन मध्य एतय करथ शहँ आघात की
राम वन पठाइ तेहि छन शोकितो मन माथ से
विदा कैलन्हि आदरहिं सों बात करा सहुलाय से

रहल पर, की कहत एतया, तीनि भुवन क लोक जे
की सुपुत्र क मथा जेने माय कैँ नहिँ शोक हो
रहल अरैँ नाहिँ रहब एनहुँ दोष रहले हान मे
माय-पुत्रक कथा सुन-सुन कहि नाना दुःखान मे

आबय कै सुत-वचन कुन्ती कुपितसी भेली जहाँ
आशु पीड़क ब्याज गगनक रहित दय देलन्हि तहाँ
भेल हेरेँ बदर नव घन घोर शब्द सुनाय के
शान्ति छवि छन में लजाय सुन्दर दुइ बरसाय ए

कहलि कुन्ती, कहि कथा की क्यो कहको [illegible] हा !
अतुल थिथि थोथी मनहुँ कैँ इहुँ धीर धर कहाँ
परख पारद् दुइ पवनैँ कहा सब जे मान के
पाँति अपनहुँ उलाय नयनहुँ रही शान्त मानि कै

पार्थ ई सुनि कहल, मा ! कहलहुँ बहुत पुनि की कहू ?
माय-ममता-[illegible] स्थापि की कर से रहू ?
[illegible] ई देवपि [illegible] श्राप देला तँ सुनू
जगत अपयश, कुलक नाशो एक सँग होतो पुनू

सहलि कुन्ती श्राप वच सुनि कहलि अति अकुलाय कै
कहु प्रभु पालन अवश्ये वन विदेशहुँ जाय कै
दी कुशाशिष हम सब सौं विरह में ई भावकै
मोह-सम्भुनि-ककुजित सब कथा पुर्वाह गावकै

पूज्य छथि कुल-देवता रक्षक अवश्ये होथु से
जे इष्टदेव अहाँक हमरो इष्ट फल वर देथु से
देव देवी अनेक जे जग पुरथु से मन कामना
वनहुँ में वनदेवि रक्षिथि रहथु घर मे हम जेना

तखने माताक पद पर पार्थ कर शिर राखि कैँ
कर प्रणाम विनीत भावहिँ वचन करुणहिँ भाषि कै
क्षमब सभ अपराध जे मन, अनुज सुत कृत जानि कै
दोष बालक क्षम्य सभ खन थीक, ई मन मानि कै

अति उदासी मनहिँ दासी आबि कहु बिलखाय कै
दुखित चित छथि ठाढ़ि द्रौपदि भवन-द्वारहिँ आय कै
कहलि, दरशन चरण पाबी विनय देथ सुनाय ई
कृपा सागर कै कृपा अभिलाष देथु पुराय ई

पार्थ, द्रौपदि, आर्त मन सुनि कयल तहँ प्रस्थान ओ
ताहि छनक तरंग हृदिगत बुझि उकत के आन ओ
नेह गृहणी, गेह सुधि पुनि चाह चित बिलमायबे
प्रण - प्रतिज्ञा - पूर्ति हेतुक कह अवस वन जायबे

सोचि, पद पथ देथि मन में करथि कत कत भावना
की कथा कहतीह कलुषित, करब की तसु साधना
हाय विकसित कमल सन मुख देखितहुँ विहुसैत जे
देखब दुख - गज गञ्जिरे सन नयन नोर ढरैत से

देल दर्शन द्रौपदी कैँ दूर द्वारहि सौँ जहाँ
दुखित दीना दौड़ि दुहु पद ऊपर ओ खसली तहाँ
यथा तरु अवलम्ब हेतुक चल लता ललचाय कै
पाबि नहि आधार, मूलहिँ जाए खसु लपटाय कै

कण्ठ कुण्ठित कुहरि कानथि परसि प्रिय-पद हाथ सौँ
चिकुर चहुँदिस भूमि लोटए वसन विगलित माथ सौँ
नयन नोर प्रवाह अविरल दीन - वदना द्रौपदी
बहए ओभरायल सेमारेँ कमल सौँ कमला नदी

कहल अर्जुन, सुनु प्रिये ! किछु धैर्य मनमे धारि कै
कखन की कर्त्तव्य थिक से बात देखु विचारि कै
पिता कुल पति कुलक दिश दृग दै थम्हू हिय शोककेँ
विपति पड़ने धैर्य धरबे उचित थिक जग लोककेँ'

ताकि पति-मुख नमित-शिर भै द्रौपदी कहु कानि कै
'ई विपति पड़ि गेल अहँकाँ एक हमरहिँ आनि कै
नारदो उतपात कैलन्हि नियमबद्ध बनाय ई
घात छल ओ विषम विष सन अमिअ देल घुराय ई

की कहब ककरा कहब हम कर्म्महीना छी सुनू
दुःख भोगक हेतु नारिक देह हम पैलहुँ जनू
की कतहु संसारमे पति पाँच हो एक नारिकेँ
भेल की नहि होयत को नहि एक वचने हारि कैँ

की कहब की दशा होयत भ्रमित भागक चकरसँ
काल सन ई काल बुझि पड़ दिवसहिँक अति चकरसँ
मनहि बुझि पड़ एखन हमरा पहन सन गति भेल हा
उदधि उपगत लखि परसमनि परसितहिँ बहि गेल हा

द्रौपदी - मुख दुखद बानी पार्थ सुनि दुःखित भेला
कोन विधि बोधब प्रियाकेँ सोच मे से पड़ि गेला
गमन सुनि कै ई दशा अछि तेजि कै जौँ जायबे
अगम आदर शून्य निज घर द्रौपदीसँ पायबे

हास शृङ्गारक प्रमोदहिँ हाय दिन बीतै जतै
कलपि करुणा - कथन कृष्णा कै रहथि सम्प्रति ततै
जतै लाली ओठ राजित पान-बीड़ा खायकै
ततै देखिअ पानि बिनु से मूहँ रहल सुखायकै

सोच मे किछु काल मग्नहि पार्थ रहला मौनमे
की कोना परितोषु हिनका विघ्न नहि हो गौनमे
जौं न सम्बोधीय तौं ई अवश मानिअ बातकेँ
प्राणप्यारिक प्राण एहिखन त्यागते एहि गातकेँ

द्रौपदीकेँ दुहु करसँ पार्थ लेल उठाय कै
बाहु - पाशहि बद्ध भै को गेलिह अङ्क समाय जै
नीलमक लतिका कनकगिरिमे लपटु अनुमान हो
ग्रीष्म ऊपन विरह तापित श्याम सन दुति भान हो

दम्पतिक दुख-दलित मानस विकलता अति बाढ़ हो
बरष बारह कष्ट कटत की सोच हियमेँ गाढ़ हो
अश्रु नहि थिक नैन द्रौपदि थीक विरह प्रवाह ई
क्रमहि डाहय धैरजक तट बाढ़ि बाढ़ अथाह ई

धैर्य धै कहु पार्थ भाषल, सुनु प्रिये ! हमरो कथा
उचित सम्प्रति थीक त्यागी अहाँ ई मानस-व्यथा
समय प्रस्थानक उपस्थित मे अमङ्गल थीक ई
तेँ अवस मम कथा मानी बात बुझि कै नीक ई

जौँ रहब घर नारि पश कहि हँसत जगतक लोक जे
दम्पतिक दुर्नाम पसरत करत बूढ़े शोक से
पुरुष तन धै कीर्त्ति - अर्जन करब मुख्ये जानबे
अयश भागी जनक जीवन मरन सन कै मानबे

पतिक प्रण हित बेचि देले तन तिया हरिचन्द्र जे
कष्ट सहि दासी द्विजक भय रहलि छलि दिन मन्द से
अयशसँ बचबाक हित सिय अनलकुण्डहि धसि गेली
जे प्रशंसित पुण्यनामा जगत मध्य यशी भेली

पतिक प्रण पथ नारि कण्टक भै रहै नहि नीक ई
बरष बारह अवधि दुखमय उदधि दुर्गम थीक ई
द्रौपदी कह, हारि मानिअ विधि विधानक भेदसँ
मरब जीडब बीचमे रहि दिन बितायब खेदसँ

पाँच तत्त्वहि सृष्टि रचना होअ सभ जग जान ई
थिकहुँ पाँचो तत्त्व पाँचो भाय मम मन मान ई
मध्यमे रह तेज से अछि जीवनक आधार जी
अहँक बिन तृण तुच्छ तन धारण करब दुख भार ई

पार्थ कहलन्हि, हमर निवहि सकत कहुँ नित मानये
सतत शुभ मन कामनासँ इष्ट देव मनायबे
सुनि द्रौपदि कानि कहलन्हि पति वचन थिक मानबे
शोक धारि पिपास हृदय सब दशा मम जानबे

पार्थ कह, हम वचन-बद्धहि वन पयान करैत छी
पालबे प्रण उचित तैं भय निठुर आइ तेजैत छी
धर्म्म जे कुलकामिनिक से करब अहँ मन मानि कै
माक सेवामें ले श्रुति छी ध्यान राखब जानि कै

कहल द्रौपदि, थिकहुँ दासी अवश वचनो पालबे
अगहुँ हम आशाक विपथेँ पद एको नहि घालबे
देव-पितरक पद मनायब अहाँ नित सुख सँ रही
अवधि जितबे हुन एको अहँ नहि रहब अनतैं कहीं

पूर्व जन्म कुकर्म्मेंक फल आइ हमरा भेल हा
मरबहुक अवकाश सम्प्रति नहि विधाता देल हा
अछि अभागलि हमर सनि नहि जगत मे तिय आन हा
प्राणपति प्रस्थान पर नहि कर पयानो प्राण हा

गनब अवधिक दिवस सभखन जय क माला मानि कै
सुमरि सुरति गुनगनो गनि दिन वितायब कानि कै
तन रहो निर्लज्ज प्राणक धर्म्म रूप जनाय कै
होयत अनुगामी मने सुख निन्द संग लगाय कै

कहब कोना अहँ जाउ, मना करब नहि धर्म्म थिक
अहीं उचित चित लाउ, आशाधीना थिकहुँ हम
दै सान्त्वना अर्जुन कैल यात्रा
पाञ्चालि चित्तें बढ़ु शोक मात्रा

देखू दशा मूरति चित्त आनू
ओ इन्द्रवज्राहत भेलि जानू
द्वारैक भित्त्याश्रित ठाढ़ि भेली
चिन्ताकुलें चेत बिसारि देली
ओ निर्निमेषे टकसँ निरेखू
पाञ्चालि पाञ्चालिकै भेलि लेखू

भेल नगर भरि शोर पार्थ यात्रा वन कैलन्हि
द्विजक धेनु हित प्रणक पूर्त्ति पथमे पद देलन्हि
चौंकि चकित चित बाल वृद्ध व्याकुल अति भेले
प्रजा कञ्जपर अवइ शोक-पाला पड़ि गेले

क्यो कह द्विज वश धेनु त्यागि की ई हठ ठानल
प्रण कठोर तौं सुने नगर भरि सभकाँ आनल
क्यो नारदकेँ निन्द कथा कत कोपहि भाषै
क्यो कर तर्क-वितर्क फेरि साविय अभिलाषै

सुनि श्रुति जे श्रुति जान भक्त जे आत्मज्ञानी
पौराणिक पुनु ऊर्ध्वरेतसँ जे छल ध्यानी
ऋषिक भिक्षुको अपर अनेको जन यश नेहे
संगहि पार्थक चलक हेतु सभ त्यागल गेहे

धनु निषङ्ग लै संग-नगन नगन सुर मनहि मन
कस कस कसकय अङ्ग जनु रिपु सन रन रङ्गले

श्रीकृष्ण कृष्ण कहि कय मनमे प्रणाम
बीभत्सु त्यागि चललाह स्वदेश धाम
ज्ञानी यथा जगत जीवन तुच्छ जान
मायाप्रपञ्च तेजि लागथि इष्ट-ध्यान

पाँचम सर्ग

मनहिँ थी मनमोहन ध्यान धै
गृह विलोइक विरहिँ ज्ञान कै
चलथि पार्थ ततच्छन रूप जे
'द्रुतविलम्बितहीक स्वरूप जे

प्रणक पत्त छोड़ावय गेहसँ
मन विमोहित देश सिनेहसँ
पथ पयानहुँ पार्थक रूप तैँ
'द्रुतविलम्बित'हीक स्वरूप जैँ

मुनिक शापक जे जगमे प्रथा
सुमरि कै पुनि भाइक ओ व्यथा
गमनमे चित दोचित भै रहै
द्रुतविलम्बित तैँ गति भै रहै

कुलक गौरव दीस देखैत से
पुनु प्रियाक दशा सुमरैत से
उठ छने-छन भाव अशेष जैँ
द्रुतविलम्बित चालि विशेष तैँ



प्रणक पूर्तिक हेतुक शीघ्रता
सुमरि गेह दशा गति-मन्दता
पड़ल द्वैधहिमे मन जाहिसँ
द्रुतविलम्बित हो गति ताहिसँ

निरखि पार्थ पधारथि देशसँ
विकल व्यग्र प्रजा अति क्लेशसँ
चलल संगहि त्यागि स्वगेहकैँ
कर विछोह विवर्जित नेहकैँ

सबहिँ छोड़ि चलू गृह-काजकैँ
अवश त्याग करू एहि राजकैँ
विरह कातर भै. कछु कानिकै
रह प्रजा वच गद्‌गद मानिकै

अहह नाथ! सुनू किछु प्रार्थना
छुनहु ठाढ़ रहू कय वन्दना
जहँ चली अपने तहँ जायबे
सकल सौख्य तहीँ हम पायबे

सकल सेवकके गति की कह
कहत कै प्रभु देशहिंमे रह
मनहिमे रह देव मनायकै
सुयश लेथु कृपालु फिरायकै

सबहुँ व्याकुलतैँ मनसँ तहाँ
कहय कातर भै दुखसँ महा
विधि निशीथहिँमे कर हाय की
घरक दीप उठा चलु हाय ई

कय अओ हम जौं घर मे रही
अयश शोर न होयत की मही
कहल पार्थ करी हठ ने तहाँ
सुयश धर्म कहाँ, घर ई कहाँ

कत प्रजा पशुआश्रय लागु जौं
कहल पार्थ चली जनु आगु तौं
अवधि पूरण कै हम आयबे
तखन मोद महा सभ पायबे

मुनिक सम्मुखमे प्रण कैल ई
तकर पूर्ति पथेँ पद धैल ई
नहि करी प्रण, जौं करबे करी
तखन प्राण अछैतहुँ ने टरी

सबहुँ भाय कहैत कथा कते
खचरि देब निदान करी अते
रह सदा सभकाँ गमनागमो
नहि दुखी मन हो घर त्यागनो

कहल अर्जुन त्यागिअ मोहकैँ
बिसरि जाइ विवाद-विछोहकैँ
दिन बितैत बिलम्ब कहू कतैं
प्रणक पूर्तिक प्रातहि छी पतै

बहुत दूर ने दी अरियात ई
बुझिअ शास्त्र-विरोधक बात ई
थिक अमंगल मानु पयानमे
फिरब नीक विचारिअ ध्यानमे

कहु वृकोदर सत्य कहैत छी
सबहुँ शास्त्रक शास्ति सहैत छी
बुझिअ चुम्बक भाइक मोह जे
करय कर्षण ई मन लोहकैँ

कहल पार्थ, भली नहि मोहमे
धरिअ धैरज बन्धु-विछोह मे
अवश आब अवास सुखे फिरी
विनय अन्तिम ई चितमे धरी

करथि जे किछु श्री भगवान औ
शुभक हेतुहिँ ई करु ध्यान औ
कहिअ निर्दय तौं पिछितो दया
घन-घमण्ड यथा चपला-प्रभा

करु समर्पण जीवन ईशकैँ
रहु निचिन्त भले जगदीशकैँ
जखन जे सुख-दुःखक भावना
पड़य तौं करु कृष्णक चिन्तना

बहुत भेल कथा दुहु ओरसँ
भिजल वस्त्र कते दृग-नोरसँ
विवश भै फिरबे मन लायकैँ
सबहु फीरि विदा करु भायकैँ

चलथि ताकथि फीरि दुहु दुहू
नृपतिसँ कहु भीम रहू रहू
पथहुँ मे जतबा धरि देखबे
सफल लालच लोचन लेखबे

दृग फिराय-फिराय सिनेहमे
निरखु अर्जुन जा धरि गोदकेँ
एहि विछोहक वर्णनकेँ कनी
लिखि सकै कहु की कवि-लेखनी

चलल कानन पंथहि पार्थ ओ
सकल त्यागल सौख्यक स्वार्थ ओ
तृतिय आश्रम मध्य प्रवेश कै
सहथि जैँ जगमे जन क्लेश कैँ

पथहि पांथ कते मिलु संगमे
चलल जाथि कथाक उमंगमे
बिसरि आतप वेग बसातकेँ
सहि कते पद कण्टक घातकेँ

बह सुगन्धित मन्द बसात जे
करय शीतल पांथक गात से
श्रमित बैसथि गाछक छाँहमे
बुझथि जीवनदायक दाहमे

बहु सुगन्धित पीबथि पानि जे
धरहिँ स्वादित वस्तुहिँ छानि से
पथहिँ पोखरि-कूपक पानिकेँ
पिबथि स्वाद सुधा सन मानिकेँ

सुभग कञ्चन-मन्दिर मे जतै
शयन दूधक फेन सने सतै
शयन कैनहु ने सुख जान से
तृणहिँ तोसक तुलयहिँ मान से

अखन साँझ समीप बुझा पड़ै
निशि निवासक आतुरता बढ़ै
पुछथि मारग वासक ठाम से
कतेक दूर कहू तसु नाम जे

पहुन तौ कहिओ होयबो करै
विवश पाँतरमे रहबो पड़ै
तरुक छाहहिँ भूखल वास कैं
मन व्रती सन रोकु पिआसकैं

निशिचरीक रथो सुनि कानसँ
रहु सचेत सशङ्कहि ध्यानसँ
रजनि जागि बितावथि ओ तेना
जग धनी भय चोरकसँ जेना

करथि ने मनमे किछु शोक ओ
सहथि मानस कष्ट कतोक ओ
विधि-विधान बली जिय जानिकै
चलल जाथि ने तैं दुख मानिकै

पहुँचि कानन देखल भव्यता
कहत के जत चित्त प्रफुल्लता
रचल पर्ण-कुटी थलमे तहाँ
छल नदी झरना लगमे जहाँ

सुभग सेब, अनार, ललाम ओ
बड़हरो, अखरोट, बदाम ओ
पनस, आमक वृक्ष सुशोभि कै
रहल तैं थल ओ मन लोभि कै

विपिन, श्रेष्ठक आगम मानिकै
करथ आदर पाहुन जानिकै
समटि कै सुख भावन बीच से
सजल लाय निवास लगीच से

विविध पुष्पलता तरु शोभ से
सुमन सौरभसँ मन लोभ से
भ्रमर भीर रहै तहँ छाय कै
मधुर मन्दहि शब्द सुनाय कै

कतहु कोकिल काकलिराव जे
करए उद्भव ई मन-भाव से
प्रकृति-गाइनि गीत सुनायकै
करए स्वागत को हरषायकै

करथि नित्य क्रिया सब प्रेमसँ
विमुख होथि ने कर्मक नेमसँ
वनक फूल फले नित खायकै
रहथि कष्टक काल बिताय कै

कहथि जे जन पार्थक संग मे
निरखि अद्भुत प्राकृत ढंग कैँ
वनक तौं कमने कमनीयता
नगर मे कहँ ई रमणीयता

मृग चरै चख चौंकि निहारि कै
विपए निःसृत पर्वत वारि कैं
मन भयप्रद शब्द अकानि कैं
चलय यूथक यूथहि कानि कैं

कतहु ठाढ़ि मृगी मृग संग मे
चपल लिघ घसै पति-अंग मे
शिशु पिआवय चाटय देह कैँ
प्रगट कै रहु औ पशु नेह कैँ

चलय पंक्तिक पंक्ति विनोदसँ
रचय नाच तहाँ मन मोदसँ
लखि चमत्कृत चित्त विभोर मे
हरए मोर तहाँ मन मोर कैँ

चहक चाह चिड़ै तरु-पुञ्ज मे
कतहु गाय चरैछ निकुंज मे
करि कपोल मलै तरु सँ जतै
सुरभि लै पवनो पसरै ततै

पवन कीचक बीच प्रवेश कै
मधुर शब्द करै सविशेष कै
धनक हँसि करै कत गान जे
चलय वाद्धन सौं अनुमान से

कतहु शैल नदीक तरंग जे
कलकलेँ कर व्यक्त उमंग से
कतहु घोर निनाद मचाय कै
चलय कूलक वृक्ष बहाय कै

वन-लता तरु-डारि लपेटि कै
मिलु परस्पर बाँहि समेटि कै
अछह अंकम दम्पति संग ई
मनुज पाब कहाँ थिर रंग ई

तरु कदम्ब प्रफुल्लित देखि कै
निरत नर्तहिँ ई मन लेखि कै
सुमरि कृष्णक रासक रंग ओ
पुलक पूरित भै रहु अंग ओ

बड़क गाछक देखु सहिष्णुता
सहय शीत अलो रवि उष्णता
बहु जटा-युत दीढ़हि ठाढ़ भै
तप निमग्न रहै मन गाढ़ भै

विटप ताल विशाल विराज जे
जन जनाथ रहै तन व्याज से
जगत मानव थीक असार ई
मम विलोकु हरै बिनु सार ई

गनिअ सीमर वृक्ष महान मे
तकर फूल-फरो थरु ध्यान मे
रहु विमोहित जे भव रूप मे
विफल अत पड़ै अघ कूप मे

बसथि जे यति कै वन-आश्रमी
रहथि भै हरि-ध्यान परिश्रमी
अलय क्रोध ने लोभक लेश हो
सुभग शुद्ध सतोगुण भेष हो

सरस सौरभ भार स्वभाव ई
अगत जन्तुक जीव लोभाव ई
भरल फूल फलैँ बहु वृक्ष जे
प्रगट राजस रूप प्रतक्ष से

गरज केहरि बाघ हुरार जे
करय साँप कतौ फुफुकार, से
बुझु तमोगुण व्यापित भै रहू,
त्रिगुणमय वन के ने कियै कहू

पढ़ श्लोक विधान महान जे
सुलभ तैं वन कोष महान से
जखन जे जतबा रुचि हो जहाँ
तखन तैं सभ पावित्र से तहाँ

तरुक छाहरि आसन मानवे
सुफल मूलहि भोजन जानवे
पिबक निर्झर नीर रहै जहाँ
सतत प्रस्तुत गेहहुँ ई कहाँ

बिनु प्रयासहिँ भोजन प्राप्त हो
नहिँ कृषीक क्रिया किछु व्याप्त हो
बहुत तर्क-वितर्क करी कही
घरहुँ सौँ वन तैँ सुखदै सही

तरुक देखु महान उदारता
परक दानहिँ मे सरदारता
फल न खाय खोआबय आनकेँ
अवश त्याग सिखाब महानके

अबस कै निज लोकक बात ई
कहल पार्थ सुदै पश्चात ई
वन विनोदक उत्तम ठाम ई
पढ़ श्लोक ने धाम ललाम ई

नव श्लोक उदाहरणो कते
वनक बीच विराजि रहै एते
कवि करी जतबा मन कल्पना
प्रकृति अद्‌य कोष धन्य बना

मधुलता-लति वृक्ष लपेट कै
मधुलता रचु कुञ्ज सहेट से
सुमन सज्जित हो शयनो जहाँ
वन विहार चले वन मे तहाँ

लस लता बहु फूलक भार सौं
रह नदी तट झूकि कतार सौं
सजि सिंगार किदा हित कामिनी
लखय दर्पण मे मुख भामिनी

प्रति प्रसून प्रसून भ्रमै जहाँ
षट्‌पद लम्पटता चसको तहाँ
सभक संग सिनेह समान जैं
मधुप दक्षिण नायक भान तैं

विकच चम्पक चारु सुगन्धि सौं
महमहो वन हो तेहि गन्ध सौं
पुरुष मान भने अलि मेल जैं
शतय तीं गमनो तेजि पेल तैं

सुनु सुनू, मधु कोकिल काकली
जगत मानिनि हीक प्रिया अली
कुहु कुहू, कहि काम अलाप से
सुरहिँ प्रीतम संग मिलाप से

तरु लता लखु पुष्प-विहीन जो
दुहु परस्पर संग न हीन जो
छवि विरूप उदास निहारि कै
कहिअ प्रोषित रूप विचारि कै

रस सिंगारक ई सभ साधना
वन विलोकि प्रतच्छ लखी जेना
रसिक रञ्जनकेँ चित चाह जे
तकर तुल्यहिँ आब निगाह से

कपि-कुलैक लला हनुमानजी
उदधि फानि गेला जग जान ई
विटप फानि महोदधि फानथे
कपि क्रिया रस हास बखानथे

शिशिव बालक भिल्लक पाबि कै
कत विहंग खसू महि आबि कै
कत किलोल पलङ्कक हो अते
द्रवित चित्त करै करुणा तते

चलय भिल्लक भीर शिकार मे
मगन पौरुष बात उचार मे
हमहिँ बाधक मस्तक फारबे
प्रगट रौद्र रसे छवि धारबे

हनय बाघहिँ औ शर लक्ष्य कै
झपट बाघ तते परतच्छ भै
लखन देखि परस्पर धीरता
बुझि पड़ै प्रगटै रस वीरता

पद्क घातहिँ क्रोध बढ़ै जहाँ
वन विलोकिअ अद्भुत ई तहाँ
नव त्रिया पद घात चलाओले
तरु अशोक प्रफुल्ल हँसाओले

निशि अमावस प्रेतक नाच मे
किलकिलैँ कत कौतुक माच ने
करथ गर्जन हिंसक जे जहाँ
रस भयानक ई बुझि ली तहाँ

कत कोलाहल कोल करै ततै
कर विभाग शिकारक ओ जतै
बहय शोणित माँस ओ मेद जे
रस विभत्स प्रतच्छ अभेद से

बसथि शिष्य-समूह सुचित्त सँ
कटु कथा नहिँ होअ निमित्त सँ
मुनिक सुन्दर आश्रम देखि कै
परम शान्त रसे लिअ लेखि कै

कहि कथा कत कौतुक हास मे
दिन बितावथि ओ वनवास मे
रहय चित्त न चिन्तन आन मे
मन सदा भए पूरन ध्यान मे

भ्रमण कै कखनो वन बीच मे
बसथि थाकि कतौ गिरि नीच मे
लखथि कौतुक कोल किरात कैँ
सुनथि ओ मन दै कहु बात कैँ

विविध गीत किरातिनि गाय जे
मगन नाचहिँ खेलि हँसाय से
बहु विनोद रचै वन प्रान्त मे
सुखद बुझि पड़ै चित शान्त मे

लखथि कानन हिंसक जे जहाँ
अवस जीवक रहहिँ सौं तहाँ
कर शरासन बाण सुधारि कै
तुरत देखि तहाँ तेहि मारि कै

मुनि निवास कुटी पर जाय कै
सुनथि नीति-कथा मन लाय कै
कर विवेचन सृष्टिक तत्व कैँ
बुझथि तत्व मनुष्य ममत्व कैँ

थिक बने वर शिक्षण-धाम ई
परम तत्व विवेचन ठाम ई
बन बानी नर ताहि विचारि कै
जगत जाल विशाल बिसारि कै

बसि निरन्तर मे रत ध्यान हो
जगत मध्य अनित्यक ज्ञान हो
सकल संशय चित्तक नाश हो
परम तत्वक ज्योति प्रकाश हो

छुटय मानस सँ सभ वासना
रहय शीतल ने किछु कामना
टुटय जीवक बन्धन जाहिसँ
सुलभ मुक्ति बुझू वन ताहिसँ

जहँ अगस्त कौशिक उद्दालक शुक शृङ्गी तप गाढ़
अरणी गालव मुनि मिलि निशि दिन एक पाद रहु ठाढ़
शिव मुकुन्द मिलु ठाम पढ़न ई सेवि सतत सत्संग
द्रोपत की नहिँ सहजहिँ से थल सभ विधि भवरुज भंग

बसथि पर्ण-कुटी निज आय कै
दिवस अंत समै लगिचाय कै
करथि साँझक कृत्य सुचित्त भै
निशि बिताबथि पार्थ सुचित्त भै

विधि - विधान विचित्र विचारि कै
रहथि लुब्ध मने निरधारि कै
मनुज भै थिक भोगव कर्म कैँ
कहि बुझावथि जीवन मर्म कैँ

विपिन बिच निवासेँ मास गेला अनेको
सुख दुखक समै मे भोग कैलो कतेको
सकल ऋतुक शोभा देखि लोभाय मानो
प्रण पुरक प्रतिज्ञा चित्त मे राखु ध्यानो

नभ निरखहिँ जहँ श्याम घन नयनहिँ भरी सयान
नय-निधान नवनीत नव चोरन नर्तन ध्यान
श्री कृष्ण चरणाम्भोज कय प्रणाम नतेँ शिरेँ
सर्वदा आपदेँ ध्यान लाउ निर्भय कामने.

—०—

षष्ठ सर्ग

सुभग ऋतु वसन्ते थीक साम्राज्य देखू
जग चर अचरो मे मोद माधुर्य पेखू
प्रकृति प्रमति डोरेँ गाँथि कै पुष्प-माला
नव वरप-प्रिया मे मालिनी देति माला

(वसन्त)

मधुमय मधु मासेँ माधवी माँति गेली
नव-नव बहु फूलेँ गौरवेँ फूल बेली
बकुल कुसुम कुन्दो मालती-भा लजावै
सुमन सजल साजी मालिनी लोढ़ि लावै

फुल भरल पलासो, पाँड़री ओ नेवारी
फुलल बहु गुलाबो दिव्य देखू कियारी
यदपि कुटिल काँटे विद्ध पंखो अली कै
रसक चसक भेने त्यागु ने ओ गली कै

फुल बन महँ चम्पा दिव्य बेलाक शोभा
भ्रमर पुर विराजै मोद-पूरैक लोभा
मदन-पुर वसन्ते मोहनारम्भ जानू
कोइल खगक शोरेँ फाल्गुनी दुःख मानू

(मास बन्ध चित्र)

क्रम-क्रम कए शीतो ताप मन्दे बढ़ावै
ऋतुक सम स्वभावो लोक तैं मोद पावै
नय-निरत नरेन्द्रैं के प्रजा ने सुखी हो
अवस सभ सभै मे नाति-हीने दुखी हो

नव दल नव फूलो दृश्य रंगो-बिरंगे
लखि लखि वन-शोभा पार्थ संगीक संगे
निज-निज मन भावै भावना ताहि लेना
करथि सभ प्रकाशो चित्त सँ ताहि तेना

शिशिर असह शीतैं जीव कैं कष्ट देले
सुनि-सुनि ऋतु राजा क्रोध सँ क्षुब्ध भेले
असमय अधिकारी ताहिसँ छीनि लेले
अदि तिथि सुदि माघे सूचना ताहि देले

अतिशय अपमाने म्लान पलाक रूपे
विटप-विटप घूमै कानि दीन स्वरूपे
हमु हमु मम हाते आर्त वाणी सुनावै
धिक ऋतु शिशिरे ई कोइली लोक गावै

हिम शिशिर सतौने गाछ जे म्लान भेले
उपवन-वन-शोभा ताहिसँ हन्त गेले
अभिलहिं ऋतुराजा जैं दया-दृष्टि देले
नव दल फल फूलैं वैभवो पूर्ण भेले

तेजल दल पुरानो जीर्ण वास स्वरूपे
अरुण दल नवीने वस्त्र धारै अनूपे
विकच मुकुल फले भूषणो दिव्य राजै
ऋतुपतिक निदेशैं वृन्द ई साज साजै

वियत वर वितानो श्यामलो दिव्य रूपे
शशि नखत विराजै दीप-माला स्वरूपे
सज अनिल फरासो फर्श फूलैं, विशेषे
अतनु अलख श्रोता आब ई चित्त लेखे

बनल पिक नकीबो चूत चूड़े पुकारै
नृप मदन सवारी सैन्य संगे पधारै
खग दलक रहो जे ढोल ढक्का बजावै
कए सभ सत्कारो त्रुटि होमै न पावै

सजल भल छत्रो केसरी पुष्प पेखू
सदृश सुभग पातो चामरो चारु लेखू
रुचिर मुकुल बेली शोभ मोती कमाले
तिलक-तिलक फूलो बेन्दु की दिव्य भाले

चहु-चहु चटकाली मोदसँ गीत गावै
मधुप-मधुर वीणा मन्द सूरैं बजावै
पवन सह लताली लास्य नृत्ये लखावै
तरु-गण बहु फूलो पाद-पद्मे चढ़ावै

तरु-तरु नव पातैं लालिमा जे लगावै
लखि अनुपम शोभा भाव से चित्त लावै
प्रकृति मुदित छिरैं कुंकुमे फागु खेले
उड़ल अति अबीरे सैह ई व्याप्त भेले

षट्पद अति अनेको आम्र-शाखा विराजै
अनु धनुष फलैको यत्नसँ दिव्य साजै
सहस सहस तीखो मञ्जरी तीर तानैं
मधु ऋतु पच बाणो प्रस्तुतो लाख बाने

अतनु मत वसन्तो घोषणा ई प्रचारू
पिक तनिक सिपाही उच्च शोरेँ बचारू
जगत सकल जीवो मानि कन्दर्प-वाणी
रहथु रस-विनोदेँ मग्न ज्ञानी कि ध्यानी

जग सुनि नृप-आज्ञा भेल कामान्ध जानू
चर-अचर जहाँ जे मोद मे मस्त मानू
भट लपट लता तेँ वृक्षसँ काम भावै
मनुज मद-विभोरेँ गारि गीतो सुनावै

सुनि सुनि पिक-वाणी कन्दरा लेल योगी
मदन मनक भीतेँ मौन धारू वियोगी
युवक-युवतिक संगे दैव-योगे जहाँ जे
मुदित मद मनक्के मस्त मानू तहाँ से

मधु सुमन सुगन्धेँ दक्षिणी पौन आवै
कुहु कुहु कल कण्ठेँ कोकिला गीत गावै
पहन सुख समै मे जे विशेषे गमावै
अरसिक गणना मे नाम कैओ गनावै

कट कटल कतेको आब पेला ने कन्तो
विरहिनि गण जाने काल आएल अन्तो
पुनि-पुनि पिक पापी 'पी कहाँ' ई पुकारै
बुझि पड़य वसन्तो अन्तके मैं पधारै

लखि ऋतुपति-लीला पार्थ ई चित्त धैले
बुझि वनहिं वियोगी क्रूरता काम कैले
मए पुरुक प्रतिज्ञा माणसँ पैघ जानी
कलुषितहिं मनो जेँ भाषु ई तीव्र वाणी

कुसुम धनुष धै कै मञ्जरी तीर तानै
मदन-मन विमोहै कोइली कंठ गानै
सह-सुरभि समीरो चेतना केँ चोरावै
छल-बलहिं छली तौ की वियोगी सतावै

लहि ऋतुपति संगो रे अनंगो गुमानी
कत कत कर घातो क्योंतखौं ताहि जानी
शिव तप नशि माने विश्व केँ जीति लेले
मनु जगत ब्रती केँ काल प्रत्यक्ष भेले

शिव थिकहुँ ने ध्याने मग्न तौँ मोहि पैबेँ
चुप-चुप शर पाँचो चातुरीसँ चलैबेँ
तन धार धर वाणो तौँ लड़ै जौँ प्रतक्षे
तखन बुझ कौना तौँ बाँचबेँ पार्थ लक्ष्ये

सुख-दुखक कथा मे बीत गेले वसन्तो
मनहि मन मनावै हो कौना काल अन्तो
अतिशय दुखदायी गीरखी ग्रीष्म आवै
जग चर अचरोँ केँ दीर्घ दाहेँ सतावै

(ग्रीष्म)

तरणि पुहुमि तापो तापसँ तप्त कैले
सरक सरस नीरो शैत्यकेँ त्यागि देले
तपन अपन संज्ञा सार्थके कैल जानू
कहक कित निदाघे दाघ दायी बखानू

दिन-दिन ऋतु ग्रीष्मो क्रूर भूपाल रूपे
कयल निज प्रतापेँ भूमि आवा स्वरूपे
जल-जल चढ़ तापो व्याकुले प्राण काजे
तत चल रवि आश्रय हेतुएँ हीम राजे

जल घटल नदी मे भेल शोभा - विहीनो
विकल सकल जीवो कच्छपादीक मीनो
अपचयि नृप कर्त्वें कोपकेँ क्षीणतासँ
रह विकल प्रजा जैँ सेवको व्यग्रतासँ

दिवस बढय मानू द्रौपदी - वस्त्र रूपे
निशि अति घटि गेले किन्तु वस्त्र स्वरूपे
उपम-विषम लागै गेह आबा समाने
घट न घट पिआसो कै घटो पानि पाने

लखि-लखि मृग तृष्णा धावमाने मृगा हो
विफल विकल चित्तेँ मूर्च्छिते ओ तहाँ हो
विलथ धनिक गेहेँ व्यग्रता ग्रस्त भेने
मनुज विकल हो जैँ मान आशा गमौने

विपिन विकल बाघो त्यागु दावाग्नि डरें
तपित वृषभ आवै तीव्र तिग्मांशु तापे
भुजग मयुर मूसो तप्त भै आबि गेले
बड़तर बिनु ओहेँ रूप कैलाश भेले

घर तर तहखाना सींचलो वारि धारेँ
रचि तहँ खस खाना कञ्ज सेजो सवारेँ
रमित रतिहिं श्यामा कौतुके पूर्ण देखू
रसिक रस निमग्ने तुच्छ कै ग्रीष्म लेखू

व्यजन अपन हाथे भै श्रमी जे डोलावै
कर श्रमहिँ न लाभे से कि आनन्द पावै
मृदु हँसित नवीना संग बैसे सयानो
कर विअनि बसाते तृप्ति हो भाग्य मानो

नव तिय पति संगे गोपनो अंग कैने
सुतलि यदि सचले निन्दसँ ग्रस्त भेने
तन भरल पसेना आननो के उघारे
पति चुमय कपोले चेति ओ चित्त हारे

सुति सरसिज सेजे वृद्धि हो ताप देहे
सुमय बरथ चढ़ि बर्फसँ सिक्त गेहे
घट ने तनक तापो चन्दनो लेर देने
विरहिनिक दशा ई ग्रीष्म के आबि गेने

विकल अति किसानो तीव्र तिग्मांशु भेने
कय सकय ने खेती पानि के सूखि गेने
नित उठि-उठि ताकै मेघमाला अकाशे
दिधि मनहिँ मनावै वारिधाराक आशे

विरचित गृह लाक्षा अग्निसँ दीप्त भेने
बरकि खसल लाहो देह, कँ दग्ध कैने
सहल पहन कष्टो पार्थ जे शोक गावै
तपन अपन तापेँ ताहि सौं की डेरावै

कत-कत दुख दैके गेल ग्रीष्मो गुमानी
उपगत निज साजेँ पावसो दुष्ट मानी
नव घनक घमण्डेँ घोषणा ई सुनावै
मदन अपन सैना साजि कै आब आनै

(पावस)

नभ-नभ नव मेघो शब्द कै कै डरावै
घन घुमड़ घमण्डे चञ्चला कैं देखावै
धुमि पड़ दल सैना वारिदे वायु थामे
कर गहि करवाले कोषसँ खैंचि तानै

सजल धनुष शक्रो क्रोध सौं व्योम देखू
घहर-घन घनेरो दुन्दभी घोष लेखू
जग युवति युवा से मान कैं त्यागु आजे
गहु शरण मनोभै ताप सौं त्राण काजे

गगन गरज मेघो चञ्चला ज्योति देखू
कड़कि कुलिश पातो भय प्रदे ताहि लेखू
जनु मदन निदेशैं पावसी सैन्य भारी
निधन करय चाहै प्रोषिता विश्व नारी

वन तेजल तपस्वी धैल मेढोक आरो
थिक न वन निवासो पावसो चारि मासे
बसथि वन व्रती जे या व्रतं पूर्ण भारैं
सहथि असह कष्टो कर्म भोगानुसारैं

वन फुलल कदम्बो मालती कुंज कुंजे
पसरु पवन लै लै सौरभो पुंज-पुंजे
उपगत ऋतु वर्षा हर्षदा विश्व आनी
रसमय जग भेलै लोक कामान्ध मानी

घन-छन नव मेघें देखि आकाश कारी
मदहि मति मयूरो मोद सौं नृत्य-कारी
सुखित चित पपीहा 'पीउ' वाणी सुनावै
विरहिनिक मनो मे काम ज्वाला जगावै

नहि नभहिं घनाली धूम ई व्याप्त भेले
शुभि पड़ परषा ई अस्त्र आग्नेय लेले
छन-छन चपलाक्षो शान दै साजि राखै
अनल कण झरै जे लोक खद्योत भाखै

दिश-दिश दल वर्षा यत्न सौं सज्ज कैले
रचन धनुष व्यूहैं मध्य मे चित्त देले
सब अपन पताका रंग रंगैक राखै
सुरपति धनु व्यर्थें ताहि संसार भाखै

निशि दिनुक विभेदो बूझवो भेल भारी
शशि रवि नहि देखी व्यापु जैं मेघ कारी
उपगत ऋतु वर्षा श्रान्ति शान्त्यर्थ दुनू
सुति सुखमय सेजे निन्द सौं आँखि मूनू

सखि ललित सबै ई साजि झूला लगावै
पति सह झुलि मोदैं राग मल्लार गावै
विरहिनि वनिता कैं काम क्रोधैं सतावै
सखि विलखि व्यथा सौं हारि नोरैं बहावै

लघु लघु जलस्रोतो पानि सँ पूर्ण भेने
चनल अति गुमानो वेग कैं तीव्र कैने
लघु जन धन पौने आत्म रूपा बिसारै
बड़ जन समता लै गर्व सँ स्वाँग धारै

अलि अवलि ने गुञ्जे कुंज पुंजे दुकैले
अवरन ऋतु वर्षा कोकिला मौन भेले
गुरु दिनक प्रभावैं नीच ऊँचे जनावै
मलिन जल निवासी दादुरो गीत गावै

अभिमत जल योगैं वर्द्धितो खेत धानो
वरिसय वर बुन्दो मोद मानै किसानो
मन-मन गुन भावी आय आशा अनूपे
धन विहुन जनो जैं स्वप्न राज्य स्वरूपे

बढ़ल जल नदी सँ बाढ़ि मे भास धानो
खाति कृषहिँक भेने छोभ खिसो किसानो
पुन पुन कर खेती धीरता धैर्य धारै
विजित नृपति रूपेँ फेरि फौजे समारै

विवश बस विदेशेँ त्यागि जे गेह आशा
मनहि मन मसूसैँ सोचि प्यारी हताशा
कह चुप रह पापी 'पी' ने भाषू पपीहा
सुनि दुखमय वाणी प्यारि त्यागै न जी हा

तरल मद तरंगे तीव्रते वेग धैने
उमगि विपथ गामी कूल के नाशकैने
जग जन दुखदायी हो महा छोभकारी
लघु कुटिल नदी ई पुंश्चली रूप नारी

सजि सजि घन आवै वायुयाने अकाशे
प्रहरि प्रहरि घूमै लोक कैँ दै तरासे
करय कुलिश पातो दर्प सँ ओ गुमानी
तर्जि-तर्जि अति कोपेँ भाषु बीभत्सु वाणी

घन घहरि कहाँ तोँ मेघ माला डेरावै
छन छन बिजुली ई चोख अस्त्रो देखावै
कड़कि कुलिश पाते त्रस्त की हो गुमानी
हम निज भुज दापेँ विश्व कैँ तुच्छ जानी

गरज गगन मे की बूझि दुर्भेद्य ठामे
आपन शरक वर्षा कै रहैँ आडयामे
कर शर धनु धैने बूझि ले तो प्रमाणेँ
नभ भुवन पतालो पार्थ कैँ तौँ समाने

झर झर झर बुन्देँ झंझ बातो सतौने
घनहि लघु कुटी मे काल कष्टेँ बितौने
कहथि शरद ऐने तैँ कि आनन्द पैबै
दुर दिनक प्रभावे दीन दुःखेँ बितैबै

(शरद)

अइह शरद सत्ये सात्विके रूपधारी
कर निरमल पृथ्वी आबि आनन्दकारी
सुर पतिक प्रकोपेँ राखु ई सृष्टि भारी
चर अचर सुखी तैँ मोद मग्ने विहारी

शरद विशद रूपेँ शुभ्रता भूमि देले
सुर पितर प्रसन्ने मेदिनी आबि गेले
नर घर-घर पूजा कै रहू मग्न ध्याने
अवश एहि समय मे भूमि स्वर्गो समाने

शरदक सरदारी देखि कै ने सराहै
पथ परखि प्रशस्तो पांथ प्रस्थान चाहै
प्रण पुरय पपीहा पानि स्वाती पिआबै
निशि दिनक समाने मान कैँ ई लखाबै

चुप चुप चलि भेको आब पाताल गेले
दुर जल दुरगन्धो सर्वथा नष्ट भेले
खपगत कुल हंसो हर्ष सौं ताहि देखू
दुरजन दुर गेने सज्जने संग लेखू

प्रमुदित शशि सूरो स्वच्छ देखू अकाशे
कुमुदिनि कल हाँसे विश्व कै हो हुलासे
अतिशय सुख माने नारि स्वामीक ऐने
सहज सुखद दाता शारदी काल भेने

जल भरल तड़ागो प्रस्फुटो कंज राजै
विकच सिंगरहारो की अनूपे विराजै
मधुकर मधु लोभी झुण्ड झुण्डे लखावै
विभव विशद भेने याचको जूटि आवै

शशिक सरस शोभें शोभमाने अकाशे
अगणित नख तारो कें लखु ताहि पासे
सुखद शरद अने कृष्ण केलि स्वरूपे
रचु नभ घन वृन्दा रास क्रीड़ा अनूपे

शशि मुख छवि धारें खञ्जनो नैन रूपे
कमल सह मृणालो हाथ बाहु स्वरूपे
छवि उरज चकेवा काम तापो बढ़ावै
शरद ऋतु युवा कें नारि रूपे लखावै

शरद सुखद स्वाती बुन्द पीयूष मानो
कपुर सुभग मोती ताहि सँ जन्म जानो
अहि मुख पड़ने से बीख वृन्दे प्रमानो
सुजन कुजन संगे भेद एतबहु जानो

उपगत युग त्रेता शारदी मध्य देखू
रघुवर कृत लीला लोक आख्यात लेखू
नरपति रण रंगे मोद सँ सैन्य साजै
करइत विधि यात्रा शब्द डंकाक बाजै

महि तपल निदाघें तैं दया इन्द्र कैले
घन दल सजि भारी वारि वर्षा क देले
महि डुबल जलौघें शान्त होमैक भावें
जनु धवल पताका काश पुष्पे लखावै

परब दिन दियारी दीप दीपीत देखू
पितरक पर थाने ऊक आलोक लेखू
घर घर पुज लक्ष्मी द्यूत कौतुक लागू
वधु कृत रव सूपें दुख दारिद्र भागू

जनिक पति विदेशें पूजि देवी मनावै
भगवति शरदो मे जौं भला नाथ आवै
करब विशद पूजा सर्व साजें भवानी
तिय गति तिय जानै होउ मा ! प्राणदानी

तेजल मुख प्रिया श्री चन्द्रमा निष्कलंकी
कहल हद्द प्रये ई फाल्गुनी भै निशङ्की
शरद शशि कलंकी ताहि लों की देखावै
जनु कर गहि काचे जौहरी कें लोभावै

शरद समय गेने आय हेमन्त औते
दिन लघु निशि दीर्घें शीत भीते सतौते
सहब धिक अवश्ये जे रहै भोग्य भावो
कुदिन सुदिन हैते जन्म संसार पावो

(हेमन्त)

हिम ऋतुक अबैतें शीत सर्वत्र व्यापै
विनु अनलक सेवें जाड़ सँ हाड़ कापै
जत जत बहु शीते मानि के चित्त त्रासे
तत करु तपनो तैं अग्नि-कोणेक आशे

रवि रथ भय शीतें शीघ्रतें धावमानो
शितहिं सहमि सुस्तें जाय चन्द्राक यानो
दिन घटि निशि बाढ़ै कारणो येह मानू
अकथ कहथि जे से व्यर्थ कें ताहि जानू

पवन अपर प्रान्ते पूर्वे हवे प्रभाही
पसरु पुहुम पाला यामिनी योग आही
प्रबल पहल तूरे शीत - रक्षा क भावैं
प्रकृति मंह सहेली भै दयाद्रैं ओढ़ावै

उपगनहिँ हिमन्तो शीतता कैँ बढ़ावै
निशि बढ़ि चकवा कें चित्त चैनो चोरावै
करमठ वय वृद्धो ब्राह्मणो कैँ सतावै
विरहिनि वनिता कें काम ज्वाला जगावै

तन थर थर काँपै पंथ जैबो ने भावै
वपु सकुचित जंघा बीच मे माथ लावै
श्रवण सुनथ शोरैँ हीम शीत प्रभावे
निरधनक युवो हा ! वृद्ध रूपे लखावे

कृषि धनक चली जे मोद सँ' मस्त मातू
भर घर धन धाने धन्य भाग्ये बखानू
सहज सुखक स्वादी हो गरीबो विशेषे
उदर भर कुटुम्बो जन्म साफल्य लेखे
नहिँ मलि तन तेलै ने तमोले चिबाई
नहिँ तरणिक तेजैँ शीत प्राबल्य जाई
तरुणि लपटि लेटै पातरो चीर - धारी
हिम ऋतुक किया ई सौख्यदायी विचारी

लघु ऊत दरवाज़ा पूर्ण पर्दा लगौने
नभ भरल तुराई तोशको कैँ बिछौने
अनल भरि अँगैँठी राखि कै रैनि,जागी
विरहिनि कँपि शीतैँ काल काटै अभागी

लग बसि नव श्यामा पान-बीड़ा खोआवै
वरय घर अँगैँठी धूप काठो जरावै
शयन सज गलीचा ओढ़ि शाले रजाई
लखि सुखित सँयोगी हीम हारे लजाई

तन तपित विशेषैँ ताप विच्छेद भारी
सुखद वसन मेही देह सँ राखि टारी
हठहु हठ न त्यागे पार्थ कैँ तों ने जाने
तलथ हिम प्रपञ्चो की किया कोटि ठाने

हिम ऋतुक समै ई कष्टदो सद्य कैलै
शिशिर हिमक संगी भार आगाँक लेले
सुखद जगत जानै जे सुखी मग्न गाने
दुखित जनक लेखैँ धीक दुर्भीक थाने

(शिशिर)

क्रम-क्रम दिन बाढ़ै राति मे न्यूनता हो
पवन परस पौने जाड़ मे शून्यता हो
किछु किछु तिग्म तेजो तापनो मध्य देखू
शिशिर ऋतुक औने ई दशा आब पेखू

सरवर भल शोभे पद्म - पत्रो अनेको
विकच मुकुल कंजो शोभमाने कतेको
लखि-लखि कवि ज्ञानो चित्त मे मानि लेले
विघटल विभवी कैँ वैभवो फेरि औले

डफ रव करतालैँ गीत अश्लील गावै
मन मतल मतङ्गे लै अबीरो उड़ावै
भरि-भरि पिचकारी रंग दै दै भिजावै
जग धनिक गरीबो भेद पर्बे मेटावै

कखनहुँ तिख तापेँ उष्मता बोध - कारी
कखनहुँ बहि बातो कै रहै जाड़ भारी
शिशिर ऋतु स्वभावे थीक ई चित्त आवै
जनु शिशु छनमतिया खेलि रूपे लेखावै

दिन दिनकर तेजेँ जाड़ भेले गुमानी
नहि दोहरि तुराई मोदवायी बखानी
निशि उपगत भेने लस्करे रूप आवै
प्रखर पवन संगे जाड़ हाड़े गड़ावै

रस रसि हँटि सूतै आपकै सेज कोने
हरठहिँ हठ न त्यागी लाख यत्नी मनौने
अहह शिशिर शीते ! धन्य कै तोहि मानी
सिसकि ससरि सूते अंक मे से सयानी

छुन छुन तन लागी आँचरो कैँ हटावै
पथ पथ चलबा मे चार बारे लजावै
पुलक भर शरीरो के हटो भानु आली
सखि शिशिर समीरे देखु ने ई खेआली

घर घर मच होरी भंग रंगे उमंगे
जलप छुटल ओढ़ी से रचै काम-रंगे
लखि परिजन मोदी जी जरे दग्ध छाती
विरहिनि चिप जानै रंग होरीक घाती

शिशिर वयस वृद्धो वूझबा योग्य भेले
अथ तरु दल रोमो ग्लानता अंग लेले
वन उपवन शोभा को कहाँ ताहि ताकू
जनु सब धन लूटै पश्चिमी पौन डाकू

हिम ऋतु हिम देले ऊष्म ग्रीष्मौक लेलेँ
पर धनक धनी मे पार्थ के की डेरोलेँ
हर तपक समै मे सहा अभ्यास जानी
शिशिर यतन कष्टो देव व्यर्थं प्रमानी

× × ×

बितै षट ऋतु निज स्वभावहिँ सतत सम जन जान
तदपि सुख - दुखमय प्रबोधक जे जेना से मान
कोकिला कलरव घटा शशि शील आतप देखि
सहज सुख मानै सँयोगी दुख वियोगी लेखि

शैल वन वास महँ काल पहि रीतिएँ
कैल सम भोग वन पार्थ दुख जीति कैँ
धैल मन मध्य चलि तीर्थ रटना करी
हो सुफल जन्म नर सिन्धु भव कैँ तरी

धन जन तन मन मान गान
आन मान गुन ध्यान
छुन छुन पुन प्रन प्रान सन
शान वान जन जान

(विंशतिपत्र कमल - बन्ध चित्र)

श्री कृष्ण कैँ ध्यान मे देखि कै आशाक आभा मने लेखि कै
शुद्धे सुलग्नो शुभे जानु से यात्राक इच्छा हदै आनु से

—०—

सप्तम सर्ग

श्री हरिपद सुमिरन कए अर्जुन तीर्थ गमन-पथ धैल
मग चलइत प्रण-पूर्ति हेतुएँ ई विचार चित कैल
तीर्थ भ्रमण सँग सहजहिं देखब बहुत भूपहुँक राज
ई लोकोक्ति होएत चरितारथ एक पंथ दुइ काज

छल शुभ दिवस नक्षत्रादिक सौं लक्षित सिद्धे योग
ताहू मे पुनि लग्न-विचारें परमोत्तम ग्रह-भोग
द्वादश वसु गृह शून्य जानि शुभ दैवशहिं ई दान
सुनइत श्रुति धुनि विप्र-वटुक मुख अर्जुन कैल पयान

चलिनहिं दृष्टि पड़ल वाछायुत धेनु गाय बिनु भीत
सधवा सुत-युत भरल कलश लै मोदहिं गबइत गीत
मालुक भार, दही, घृत, मोरो दहिनहिं हरिण अनेक
वाम शृगाल; कपोत खञ्जनो शुभद एक सँ एक

सगुन फलाफल बूझि विनोदहिं रहथि मनहिं हरखाय
चलइत चर्चा मोद सहित सभ करथि तकर मन लाय
वनवासक दिन अधलसुभक थिक निशिदल कृष्णस्वरूप
से बितने ई सगुन शुक्ल पख पड़िय चन्द्रमा रूप

पथक दुहू दिस कत कत देखथि नगर ग्राम पुनि टोल
सज्जन धनी कृषक बनिहारो बसय भिल्ल ओ कोल
देखल कतहु सजल फुलवाड़ी, कतहु फलक बड़ बाग
कतहु कूप वापी सर सुन्दर सरसिज-सहित तड़ाग

देखल कतहु धनी धन मद सौं बैसल मसनद लागि
परिचर पंखा पवन प्रचारहिं परम प्रमोदहिं पागि
पुरजन पड़ल पराभव पर नहिं पड़य दया-दृग-कोर
बुझि पड़ पाहन उपरहिं चिक्कन भीतर परम कठोर

देखल कतहु दीन दुखिया कैं दुःखहिं दूबर देह
भूखल भवन भवन भरमय कत करुणहिं कह किछु देह
गेह-विहीन, देह नहिं परिहन कष्टहिं गोपय अंग
कनइत करुणा कर कत अबला लहु लहु संतति संग

दया-द्रवित चित पार्थ विचारथि कैहन नृपक ई देश
जे नहिं देखि दुरावथि द्रुतगति दुखित प्रजागण क्लेश
दीनक आह आगि विद्रोहक प्रथकास्रोत ई जानि
सभ खन प्रजा प्रेम-रत रहये नृप कैं व्रत लिअ मानि

कतहु शंख घण्टा-रव मन्दिर, कतहु मधुर धुनि गान
कतहु कोलाहल कलह कान पड़, कतहु दुखित जन कान
सुखमय की दुखमय महि थिक, ई कहब कठिन जे जान
समय प्रतच्छ रूप सौं सभ कौं दरशावय हो भान

तीर्थ नदी संगम सर देखइत कृत्य करथि सभ ठाम
वन-उपवन गिरि गुहा विलोकथि करथि कतहु विश्राम
देखथि देश भेप भाषा सौं परिचय करथि अनेक
चलइत पथ-श्रम बिसरथि करइत तकरे कथा कतेक

गोधूली' गोधूली - कालक पावन पथ छवि वेश
गाय - वृन्द हुँकरति चलि आलय सन्तानक आवेश
गौरी राग गोपालक बालक गौरव सँ सभ गाउ
गाइक गरदनि बाँधल घंटी रव मिलि मोद बढ़ाउ

चहकि चहकि चल चिड़ै गगन मे निज नीड़क टक लाय
कत कत काक कोलाहल कै रहु बुझि पड़ से अकुलाय
देखि दिवाकर दिश पश्चिम गत निशि भर मन अनुमानि
जग जन कैँ जनु चेत कराबय ई लिय मन मे मानि

जानि साँझ सविता रथ शीघ्रहिँ चल चरमाचल वास
कमल कोष रस लम्पट षट्पद बभल सरस रस - आश
आशा आबि घोर डर पैसल, धुव जन हृदय अनंग
हरप बसल हिय नारि प्रगल्भा भय नव नागरि अङ्ग

पंथहि साँझ साँझ भेल उगत, रवि अस्ताचल धाम
प्रान्त प्रतीची छन छन बदलै शोभा परम ललाम
लखि लखि सबहि विचारि व्यङ्गसँ निज मत करथि प्रकाश
निरत विनोद पथक श्रम बिसरथि मानथि मनहि हुलास

की थिक उच्च ठाम मे टाङल विद्युत ज्योतिक दीप
उदधि पोत-चालक बुझबा लै थल विश्राम समीप
थाकल पोतक पथिक पधारथु आबथु आश पयान
से सूचक थिक बिम्ब ने रवि कहु ई निश्चय मन मान

की चरणक वनिता आतुर तेँ आगत सन्ध्या जानि
साजलि दीप उदधि-पूजा लै तट मे राखलि आनि
की थिक नभ-गत नमित पेटारा कौतुक हो आभास
रविक बिम्ब नहिँ कहिय ताहिकेँ करत जगत उपहास

चौंकलि चकवी चकित-चित्त चढ़ चख चकवा दिश फेर
चिन्तहिँ चूर चरब तजु बिलखित पति-समीप नहि हेर
कुमुदिनि विहुँसलि खोलि खेद पट सुख संगम शशि जानि
दिन भरि चकवो रभस हँसित सों न रह सकुचि गलानि

अभिसारक अभिलाषेँ सन्ध्या पहिरै सारी लाल
आभूषण माणिक मणिक से ज्योति जागि रह भाल
से आगत सौतिनि निशि लखितहिँ लाजहिँ जाय नुकाय
ई कौतुक लौं प्रान्त प्रतीची प्रतिदिन देखना जाय

अर्जुन सभक कथा सुनि सुनि कै मन्द मन्द हँसि देथि
सबहिक तर्क विलक्षण बुझि बुझि आनन्दक रस लेथि
ई विनोद-रत सभकेँ देखइत मन मे मानु हुलास
काव्य कल्पना-रत भै कवि ई वचन करथि परकास

कर्णक करनी लखि लखि सोचथि करथि मनहि अनुमान
हमर तत य कौरव पछुलगुआ ई थिक अति अपमान
कुसुत-कुकर्म देखब सँ उत्तम मरणो मन अनुमानि
उद्‌वेगि डुबै रवि जाथि बचाबथि करुण मित्र घर आनि

प्रान्त प्रतीचिक लाल लसहि कै सूर्य्यं अस्त भै गेल
दृग फेरइत प्राची दिश घुमतहिँ पूर्ण चन्द्र लखि लेल
प्रकृति कौतुकिक कुहुक कला ई अद्‌भुत छवि दरशाब
पश्चिम दिश जे झाँपल से जनु पूर्वहिं प्रगट देखाब।

गगनहिँ नखत ज्योति नहिँ थिक ई बुधगण के अनुमान
नभ गंगा मे देव-दारिका दीपावलि कर दान
पहुँ चलि कैथो कैथो पथ मे छुटि करथि कैथो समधान
तैँ क्रम कम संख्या ई बढ़इत घूमू जनु किछु आन

साँझ दीपिता गगनक छत मे शशि-प्रभ दीपक बार
चकमक चहुँ दिश शीतल सुखकर ज्योतिक जाल पसार
फूलहिँ कुलवतीक कलाधर छवि कर कौतुक केलि
मुदित कुमुदिनी आगतपतिका लइ लइ आशा बेलि

की शशि स्रवित सुधारस पसरल की कपूरमय भेल
की महि मण्डल तबक खानी की दूधहिँ धोअल गेल
की कौतुक प्रिय प्रकृतिक थिक ई अति अद्‌भुतमय हास
कहि कहि करथि कथा कत चलितहुँ चाहथि रजनि निवास

पथक श्रमापहिँ पंथ निवासक भवन भव्य भल ठाम
देखि सुजन बुझि सभ मिलि कैलन्हि रजनी भरि विश्राम
भेल भोर सब निद्रा त्यागल सुनितहिँ प्रातिक गान
दक्षिण पवन सुखद बुझि सभ जन के देल पथहि पयान

गंगाद्वार तीर्थ उत्तम तट तहँ सभ पहुँचल आय
सुर सरिता शोभा केँ लखि-लखि अतिशय हिय हरषाय
गिरिक गुहा सँ गलित धार लखि रहथि सबहुँ टक लाय
निर्मल नीर फटिक जनु पसिभल छवि तेहमे दरशाय

सलिल स्वच्छ दर्पण धुति निन्दय अनुपम शोभाधार
थिक भव-सिन्धु तरणि तरणी ई भगिरथ तप अवतार
सुरसरि केँ अर्जुन करबद्धहिँ नत-शिर कैल प्रणाम
कहल पूर्ण पुण्यक फल पाओल आइ अहँक ई धाम

गंगा द्वार कहो हम मानिय अहँ कोँ तीर्थक द्वार
पतित-पावनी परमपवित्रा भुवि तीर्थक आधार
तीर्थराज विन्ध्याचल काशी अपर अनेको धाम
अहँ बिनु की पबितथि पावनता पुहुमी मे ई नाम

विमल वारि बहइहिँ वसुधा मे बहइत छवि केँ देखि
कै अनुमान रहथि कविगण कत हमहुँ रही मन लेखि
भगिरथ कुलक कलुष काटक हित विधि शाणित असिधार
की पहिराउ प्रकृति भारत केँ अनुपम हीरा हार

ब्रह्म कमण्डलु मे चतुरानन चतुराई सौं कैल
भगिरथ भक्ति भाव सँ भावित शम्भु जटा मे धैल
से पुहुमी मे पसरि पापरत जन तारण मन लाय
कै देल कोटि तीर्थ निज कूलहिँ अन्तहिँ उदधि समाय

पाताले पृथ्वी चलि जैतथि द्वयि कै पापक भार
की थाकतथि भगवान भूमि मे लैत लैत अवतार
नहिँ तोँ ई महि मण्डल होइत रौरव नरक सरूप
जौँ गंगा अहँ आबि एतै नहिँ बहितहुँ सरिता रूप

हनमनाय शेल यमक विभव ओ रौरव उपजल त्रास
कुम्भीपाकक कतहु पता नहिँ अग्नि-पथो भेल नाश
यमजन कातर कानन नरको अहँक प्रभावेँ भेल
आनन झाँपि सुतल हाथ रथि खुर दै कानहिँ तुर देल

थिकहुँ पितामह मातृ जननि अहँ ई सम्बन्ध विचारि
सम्भ्रमक रक्षिणि माता थिकि से मन मे निरधारि
भरमि भुवन मे श्रान्त क्लान्त हम रहु तट अंचल आय
जग मे त्रसित तृषित बालक सभ जननी कोर समाय

ई कहि गंगा द्वार तटक छवि देखथि सभ टक लाय
जनु शोभा संसार समटि कए नयनहि रहल लोभाय
कतहुँ नहाथि नारि नर कत कत कतहुँ दान जप ध्यान
कतहुँ कथा कीर्तन धुनि नौबति कतहुँ वेदहिँक गान

सबहि विचारल देखि ठाम ई योग्य यज्ञहिक थीक
तैँ ताही मे निरत होइ हम पाबि तीर्थ बड़ नीक
धै नर-तन अरजन करि से धन जे धन छुटि नहि जाय
एतै सहज सुख सम्पति सभ खन खोतै यती हरखाय

बनलहि विविध प्रसूनहिँ मण्डित मण्डप बनल अनूप
रचित मेखला नाभि आदि युत कुण्डो रुचिते रूप
शुचि श्रुव समिधि प्रोक्षणी प्रणिता पात्रादिक समतूल
आसन आज्य हव्य कुश तिल तहँ प्रस्तुत आनन फूल

श्री गणपति दुर्गादि देवता प्रथमहिँ पूजि मनाय
विघ्न हरण हय यज्ञारम्भल दुसह दुरित दुरि जाय
करक सेवा प्रथम करक थिक बुध जन कहथि बुझाय
वक्र वक्र सँ जग जन जानथि भेलो काज नशाय

यज्ञ सविधि सम्पादित भै गेल होता गण अति दृप्त
दक्षिणावर्त शिखा दहनक लखि सुफल सुफल परतच्छ
सफल मनोरथ होएत शीघ्र सबहुँ कहल ई बात
होनहार तरु के लखि पड़इछ जन्महि लह लह पात

अवभृथ अवगाहन हित अर्जुन मुदित गेलाह बिच धार
पाथ रूप लखि तनय उलूपी नाग सुता वश मार
कै आकर्षण लै गेलि हुनका अतल पाताल निज धाम
धैरज छोल दुहूँ के स्मरगति जे ने करावथि काम

भाग्य-चक्र गति कखन करत की से नहिँ बुझना जाय
रंक साजि पर्य्यङ्क कनकमय सुतहिँ सुनय हरखाय
जनिका सिर पर सतत विराजित चामर छत्र ललाम
से भै दीन हीन वैभव सँ बैसल गुड़थि झाम

देखल नागलोक कैँ अर्जुन शोभा कहल ने जाय
सौध सहस शशि पूर्णहुँ सुन्दर गगन चुमय जनु आय
विश्व-विभव बस्तु समटि ततहिँ मनु बुझि पड़ पहन सरूप
बसथि उलूपी नाग सुता तहँ रति शतहिँ क अनुरूप

कनकासन पर कै बहु आदर अर्जुन कैँ बैसाय
बहु विधि पूजि पुलकि सकुचित भै वचन कहलि मुसुकाय
आनल अवश बिना अनुमति हम राखि प्रेमहिँक भाव
दोष अबुध-कृत बुध जन छेमथि तजथि न शील स्वभाव

ऐरावत - कुल नाग - वंश मे कौरव्ये छल नाम
पूज्य पिता मम रहथि जनिक यश छल व्यापित सब ठाम
हम तनिके तनया छी प्रियवर कहय उलूपी नाम
सुयश सुरभि चन्दन तरु अहँ बिनु हमर ने आश्रय ठाम

सुनि तिय वचन विलोकि विमल छवि मन-मन अर्जुन बाज
के नहिँ न्योछल रूप-राज्य हित तिहुँ लोक क साम्राज्य
कहाँ सुरी, सुर-नटी, किन्नरी; गन्धर्वी छवि पाय
मन्मथ अस्त्र अजेय यत्न सँ जनु पाताल नुकाय

कहल उलूपी, शील स्वभावहिँ लैलहुँ सुपुरुष जानि
अभिमत अवश पुरब ई आशा मन मे राखलि मानि
कुसुमित लता चाह तरु लपटय अवश दीअ आधार
पड़ले पंथ रतन जौँ पावथि नहिँ त्यागथि बुधिआर

सुनि अर्जुन कह विहुँसि, व्रती कैँ होइछ कठिन निबाह
संकट कोटि टारि व्रत पालब सागर अगम अथाह
जे तरु विधि वश लता उपेखल से कि पुरय पर आश
प्राणहुँ सँ प्रण पालब उत्तम ई राखी विश्वास

कुल जन संग कतहुँ दुइ कामिनि जौं कर प्रेम क भाव
कलह कोलाहल कौतुक निशि-दिन कहितहुँ पार ने पाव
प्रेमी जन पर परम पराभव पड़य सुयश नशि जाय
अर्जुन कहल दार दुइ संग्रह जग मे अधिक बलाय

कहलि उलुपी, द्रुपद - सुता हित व्रत ई के नहिँ ज्ञान
तैँ की उचित विचारू मन मे त्याग करब धिक आन
हिम ऋतु जौं विधिवश मधुकर कैँ सरसिज वन छुटि जाय
तौं की आन प्रसून क प्रेमहिँ देखि न दिवस गमाय

रानी रहथु द्रौपदी सम खन हमरा नहिँ किछु छोह
दासी कैँ की दर्प कतहुँ हो स्वामिनि सँ करु द्रोह
हमर लालसा पतहि पुरातिय महि रजधानि क काज
कहल उलुपी, बहुत कहब की कहितहुँ होइछ लाज

कहल पार्थ, नहिँ पथिक संग मे प्रेमक करी विचार
क्षणिक सौख्य कैँ सुख जनु मानिथ जानिअ दुखहिँक भार
ई सुख पहने स्वन कै मानब कही कथा छल छौंड़ि
शुक्ल पक्ष द्वितिया शशि सुत सौं जेहने चित्त चकोरि

कहल उलुपी, सुनल कृपानिधि प्रणहि महान दुइ भार
आरत जनक अवश दुख मेटब करब दुष्ट संहार
अबला आर्त धर्म - प्रतिपालक आशहिँ अर्पल देह
दुष्ट काम सँ त्राण करू मोहि पालू निज प्रण नेह

बहुत विनय युत वचन कहल हम फेरि कहब की आय
देल दान नहिँ फेरि दान हो तकरे अछि पछताय
की विधि लिखल बुझल नहिँ जाइछ सोचहि मन अकुलाय
धिक जीवन तिय, मन हो पहि खन दी हम प्राण गमाय

सुनि तिय वचन मौन भै अर्जुन मन मे करथि विचार
बिनु परिचय पुरुष क संग करइछ प्रेम वचन व्यवहार
की छल सौं ई करय परीक्षा नागरि चतुर सयानि
की मारक मारहिँ तन त्यागति ममोहत दुख मानि

कहल उलुपी, अवसर पर जौं पुरुष संग भै जाय
तकर सुलभ फल अवस प्राप्त हो जौं विधि होथि सहाय
से बुझि अर्पित तन धन कैँ जौं अहँ त्यागै कय देब
हम मरबे अहँ धर्म हानि तिय-वधहुँ क पाप लेब

अर्जुन मन गुनु की शुभदिन की दुर्दिन तुमको मे जाय
की पातालक नारि चरित ई की कामहिँ बौराय
त्यागी तौं तम तेजथि कामिनी गहनहुँ बुझीँ बलाय
धर्म क संकट मे करतब की किछु नहि ठिक ठहराय

मन मे सोचि नाग - कन्या कैँ कहल पार्थ ई बात
रजनि गमाय सत्य कैँ मानू गमन करब हम प्रात
असह विरह सहि दिवस गमायब नहि पुनु मिलनक आश
चिर विछोह दुख कोना सहब अहँ तकरे होइछ त्रास

की चातकि डाबर जल पीबय जौं स्वाती बिति जाय
की बाघिनि सहि दिवस बितौने भूखे तृण दल खाय
कहल उलुपी कुल कामिनि तन अरपि करै निरधार
तन धन भोग पतिक थिक मानै मन दृढ़ पहरुदार

जगत जनमि यश धर्मक संग्रह करबे उत्तम थीक
सीता सहि-सहि कठिन कष्ट कत देल जगत तिय सीख
बिचली नहिँ पड़ि केहनहुँ आपद बरु प्राणो चल जाय
जनिक धरोहर धरी उचित थिक तिनकहिँ दी सुनभाय

युवा वयस थिक वायु वेग सम ज्ञान क दीप मिझाय
मानस मातल तरल तरंगहिँ शील कूल भसिआय
तैँ मन कैँ रोकब थिक सभ सन जखन वेग भै जाय
पोथि बहुत विधि चलल धनञ्जय कामिनि ततहिँ विहाय

पथ पद दैत कान्ह धै कामिनि कामहि मूर्छित भेलि
किंकर्त्तव्य - विमूढ़ पार्थ कैँ छन मे से कय देलि
सरस - परस कामार्त कामिनिक आनो लोपित कैल
पार्थक पुलक व्याज सँ सतहुन काम जागि जनु गेल

काम घटक भय चटक चातुरी चट पट देल मिलाय
परिणय प्रेम परस्पर भै गेल मोद कहल नहिँ जाय
रहस रमित रजनी रस रञ्जित भाग्य सनथा लाग
पलथहि सँ भरि जन्मक हेतुक पूरल हमर सोहाग

रमणी रमण रमित रस अम्बुधि कोटिहुँ पार न पाय
तनै उलुपी अति आतुरतेँ विधि कैँ मनहिँ मनाय
राधा हरि संग रास रैनि जे पौने छलि षट् मास
तेहनो रजनि होओ हमरा हित करु मम पूरण आश

घर कोबर घर वधू दुहु मिलि करथु प्रेम व्यवहार
देखक थिक की करथि दुखित जन बैसल गंगा द्वार
सभ जन ताकि ताकि सुरसरि दिश बैसल धुनथि माथ
राखल यतन रतन धन बुड़ने सोचहि मीड़थि हाथ

कानथि कैओ कैओ भुवि रेखथि लै लै उच्च उसास
क्यो भुवि लिखथि मेटाबथि लिखि-लिखि जनिका सगुनक आश
क्यो कह हुनका डुबितहि बुझि पड़ धैलक जनु घरिआर
क्यो कह अर्जुन कत घरिआर क छन मे करथि संहार

सगुन मिलाय कहल धैरज धरु शुभ आशा मन आनु
शुचि सुखमय भल थल मे सम्प्रति रमित रंगरस मानु
काक वचन छाता ई भाषल विलय ने ई अवरेलु
शीघ्रहिँ अर्जुन आगम होयत सगुन शुभ ई हेतु

क्यौ कह यात्रा समय सगुन पुनु यथहु शुभ कहि देल
एखनहुँ पहुन पराभव पड़नहुँ कही सगुन भल भेल
सुनि लखि दशा मन क आकुलतेँ हो विश्वास न आब
दिन विपरीतक प्राप्त समय मे शुभो अशुभ दरसाब

सभ जन मिलि सम्मति ई कैलन्हि गंगहि कैँ गोहराब
जनिक गर्भ गत कुमर हमर शुचि तनिकहि विनय सुनाब
सुनि करुणामयि करुणावश भै होइतिहि अवश सहाय
कुशल सहित पाण्डव कुल कैरव तखनहिं देतिह देखाय

कह "सुनु गंगा सुर - सरिता भै भगिरथ - भक्ति प्रभाव
आबि भेलहुं महि मे मनुज क हित भव-अम्बुधिहि क नाव
अवगाहन पानहि की दूरहु सुमिरन कर'क प्रताप
यमक जमाति जाथि फिरि सहजहिँ नाशी जग जन पाप

सुरसरि शान्तनु गृहिणी भै कहु भीष्म तनय प्रकटाय
प्रकृति क वश भै पुनु अहँ गेलहुँ अपनहि मध्य समाय
जन्हु - सुता जगजान अहाँ कौं सागर संग करु वास
करिअ उधार अधम अगणित नित मेटिअ जग अघत्रास

बहुत काल धरि अहँ अर्जुन कैँ राखल अपना कोर
एतय असह दुख सौँ सभ जन कौं चित अति विपति विभोर
आनहुँ आबथु हरथु विपति से महि तौँ मानु प्रमाण
जहिंक सलिल मे डूबि मरय सभ पाप होयत परिणाम

चहक चिड़िया चेतला छित चढ़ि कंगूरा काक
कएठ कर्कश स्वरहि देलक कामिनी शिर डाक
उदित उदयाचल प्रभाकर ज्योति जारय प्राण
दूत देखहिं दुखित चित सिय बूझि पति प्रस्थान

प्रात उठि अर्जुन विमनमन पथ गमन प्रस्ताव कैले
सुनि उलूपि क नयन युग सौं अश्रु-मोती भहरि गेले
कह विलखि कै ई समागम भाग्यहिंक बल फेरि पाबी
जग जहाँ रहि अहाँ जीबी हम सुहागिनि धरि कहाबी

धै प्रिया-करकंज अर्जुन मुदित निज अंकहि लगाओल
कहि कथा कत धैरजक तहँ विछुखि कै पुनु ई सुनाओल
अधर अमृत प्रेम पंथक पथिक हित पाथेय चाही
विलखितहुँ से कह अपन धन भोग मे कै कर मनाही

भेल कष्णहिँ मिलन अन्तिम पथ पयानहिँ पार्थ लागू
फिरु, सुनि कै कह उलूपी, फिरब किछु दुर चल आगू
जाय तट पहुँचाय अहं कौं सबहु संगी सौं मिलायब
तखन निज कर्मक प्रभावेँ पसकरी घर घनहिँ आयब

उठल हिलोर घोर गंगा मे तीरहुँ उछलल पानि
जनु सुरसरि हिय क्रोध बढ़ल अछि पाथक कथा अकानि
त्रासहि ताकि रहथि सभतट दिस ताहि समय ई भेल
पार्थ प्रेमिका सहित प्रमोदहिँ सभ कौं दर्शन देल

देखि दम्पति दुरित दुरि गेल महासुद मन मान
प्राण पलटल मृतक तन मे तेहन हो तहँ भान
क... सभ कै कहि सकै अछि केहन भाग्य प्रभाव
पथिक भेनहुँ पंथ पड़ले सन परसमनि पाव

उलूपी कहै पार्थ सौं कै प्रणाम
बिना नाथ नारी क जीबो अकाम
विधाता मनाबी ने हो चित्त आन
रहै सर्वदा प्राणनाथैक ध्यान

वसन्त बहु वैभवी वदन कंज श्रीद्रौपदी
अहाँक मन षट्पदो ततय नित्यवासी रही
विछोह शिशिरान्त ई विटप रूप सौं क्लेश, कै
सहैत रहबे सदा हमहु ध्यान मे लीन भै

क्षमब दोष जे कैल हठहिँ हम पूर्व अहाँ सौं
कृपा सिन्धु पूजोपहार हम देब कहाँ सौं
ई मम क्षुद्र सनेस नाथ मन दै अपनायब
अवसर पड़ने अवस पकर अहँ तौँ फल पायब

जतेक जन्तु जल मध्य अछि दास अहँक बनले रहत
जल थल सभ अहँकाँ सदा अगम दुर्ग जेआँ बहत

कहितहिँ भेल उलूपि अलोपित धसि गंगा विचधार
पार्थ प्रेम प्रण बीच पड़ल सन मन मे करथि विचार
प्रण पूरण यश उठ मन मे लुन उपजल प्रिया विछोह
बुझि पड़ पार्थक चित्त तखन भेल दुइ चुम्बक बिच लोह

देखि अर्जुन अनमनस सभ युक्ति ई मन आनि
प्रात अभिम करक थिक की से कथा देल ठानि
सबहुँ निजमत प्रगट कैलन्हि सुनल से सभ पार्थ
कहल आगाँ चलिक सैह विचार थीक यथार्थ

श्रीकृष्णक सुमिरन करथि धरथिहुनक हिय ध्यान
अर्जुन कैँ सभ काल मे दृढ़गत रहल नहिँ आन !

अष्टम सर्ग

श्रीकृष्णहिँ क धै ध्यान अर्जुन पर्य्यटन पथ धारलै
सभ जन कथा सुनि नागलोक क अति विचित्र विचारलै
चललाह सभ मुद मग्न मन सौं पथ क कष्ट बिसारि कै
पुरथु प्रभू प्रण अवश ई निज चित्त मे निरधारि कै

गिरिवर हिमालय पार्श्व पथ सौं जाथि तीर्थ उद्देश मे
कत देश - देश क दशा देखथि पार्थ पथिक क भेष मे
कर्त्तव्य पालन करथि तीर्थ क जतय जे सम्प्राप्त हो
रह चेतना सभ काल चित मे श्रम क अंश ने व्याप्त हो

हिमगिरिक वैभव देखि अर्जुन मुग्ध अतिशय भै गेला
रहि ठाढ़ि एक टक निरखि शोभा से परम विस्मित भेला
युग-युग लसित की तुंग ध्वाजहिँ भारतक कीरति पटी
की शैलराट विराट की हिमजूट शोभित धुर्जटी

पड़ जे प्रभात प्रभाकरक किरणों शिखर पर आय कै
से ज्योति जगमग जगमगित भै देइ थेइ जनाय कै
गिरिराज मस्तक मुकुट राजित खचित रत्न अनेक से
चमकैछ अनुदिन ज्योति अनुपम रंग देखु कतेक से

अति तप्त रवि कर परसि हिमगिरि गलित भै जे बहि रहै
से देखि कत अनुमान मन कै वचन ई कहयो चहै
जनु इन्द्र डर नहिँ सुदृढ़ गिरि कैँ सतत शंका चित गहै
जेँ गमन - आगम अचलता सौं घाम सब तन सौं बहै

गिरि खोह सौं झरना झहरि रह अनवरत से देखि कै
सभ निरखु एकटक मोद मन सौं कहल तहँ की पेखि कै
नग मत्त गजवर दुस दिग्गज रगत शुभ्रन चित चहै
लखु गंडथल सौं स्रवित भै भै मद क जनु धारा बहै

केहरि कतहु गरजै गुहा मे गुञ्ज दश दिश मे भरै
प्रतिशब्द तत्क्षण मध्य अद्भुत सतहुँ कैँ जे सुनि पड़ै
कत तर्क जन जन विविध विध सौं पार्थ कहु धीकै सही
गिरवर हिमालय कै रहल छवि विश्व गिरि सौं बढ़कहो

नगपति हिमालय आदि सृष्टिक चिन्ह छवि मन मानु ई
कल्पान्त भेलहुँ अचल पड़कैँ साक्षी कर जानु ई
विधि बीज सृष्टिक थै तरी जसु शृङ्ग बान्हि बचाओले
कहु ई प्रतिष्ठा भुवन भरि मे आन गिरि की पाओले

हिम भूधर क महिमा कहै कै नीक थिक मौने रही
गौरीक सन सन्तान दोसर कोन गिरि पाओल सही
अछि ज्ञात त्रिभुवन मे सबहुँ कैँ परम पावन धाम ई
सभ काल मे कैलाश शोभित शिव - निवास क ठाम ई

चलि पथ क्रमहिँ कत गाम नगरो निरखु मोद नितान्त मे
बहु दिवस बितइत आबि गेला पार्थ मिथिला प्रान्त मे
लखि हरखि अनुपम सकल शोभा भेला विस्मित चित्त सौं
थिक कोन जनपद सुगम पुछथि भेद बुझ'क निमित्त सौं

पुहुमी क परिचय मे परम पटु जे छला निज संग मे
छात्र विविध विधि सौं विशेषें देश देश प्रसंग मे
से पूछितहिं अति मुदित भाषल देश मिथिला थीक ई
करइछ भय कर कर प्रणामो तीर्थ अतिशय नीक ई

नित जनिक शीश सहस्रदल पर गुरु गिरीशक ध्यान हो
नित जनिक हृदयक बीच कमला वासिनी छवि भान हो
नित जनिक पद सुरसरि पखारथि पुण्य शुचि वरदायिनी
बहु पहल मिथिला महिक महिमा के ने कह अनपायिनी

नित बहथि मिथिला मध्य कमला नदी कमला रूप मे
जेहिक आविर्भाव सौं छथि प्रेम भूमि अनूप मे
लघु कय रहल छथि सार्थको जग चंचला निज नाम कें
ई धार नहिं निज धाम राखथि भ्रमण कर बहु ठाम मे

गौतम कपिल मुनि याज्ञवल्क्यो अरु पितु सुरसरि तथा
मिथिला पवित्र पुहुमि तप फल अद्यतरु मानु कथा
पुनि और मुनि कत आबि कैं तहँ तप-निरत फल पाबि कैं
ऐ देश से थल तीर्थ रूपः पूज जग-जन आबि कैं

नृप जनक पुत्रे जकर शासक जग विदेह कहाय कैं
पुनि विश्व मे राजर्षि पदवीक वर प्रतिष्ठा पाय कैं
औ लिख व्यास क सुत शुकहुँ हित भ्रम-तम क दिनकर भेला
मिथिला - महीपति कुल क गुण जे अति विशद कहु के भला

रह शस्य सौं परिपूर्ण मिथिला अन्नपूर्णा सन सदा
तैं धान्य धान सुलभहि सभ सौं पुरल रह जन सर्वदा
कमला तरंगिनि रूप कमला रहिणी छथि जाहि कैं
बहु कोन कष्ट कदापि व्यापै जगत मे जन ताहि कैं

फल फूल युत बहु वाटिका वन उपवनो रह राजि कैं
तहँ कीर कोकिल षट्पदादि क मधुर धुनि सौं बाजि कैं
वर कूप वापी सर-तड़ागो सरस्सर समय शोभ जे
तहँ देखि देवायतन बुझि पड़ देवहु क मन लोभ से

जहँ पाठशाला मल्लशाला नियम सौं प्रति गाम मे
पुनु यज्ञशाला धर्मशाला बनल ठामहिं ठाम मे
रहु तर्क काव्य कला क पण्डित - मण्डली तहँ जानि ली
अछि भुवन भरि जत देश तनि पर मुकुट मिथिला मानि ली

श्रुति शास्त्र सकल पुरान कथ रह मान पूज्ये मानि कैं
अछि आगमहुँ मे अति प्रशंसित तीर्थ मिथिला जानि कैं
काशी प्रयाग अवन्तिकादि क जगत जे पुण्य क कला
सेता क मिथिला सौं कोना कै करत पटतर कहु भला

मिथिला महि क महिमा कहथि कै थकथि शेषो शारदो
पुनि व्यास कहि कहि हारि रहला गाबि शुक मुनि नारदो
औ आदि शक्ति अनादि भगवति जानकी जहँ अवतरू
से भूमिजो सुर-वन्दनीया थिक कते वरनन करू

सुनि कहल अर्जुन सुभग हम से बात कहतहुँ बेश ई
जीवन अपन कृतकृत्य मानी देखि मिथिला देश ई
पथ भ्रमहिं जहँ जे तीर्थ पाबी तकर कर्त्तव्यो करी
जग परम पुण्यद देश मिथिला मे विचरि मोदो भरी

पुनु अर्जुनो पथ प्राप्त तीर्थक कृत्य सभ करइत गेला
एहि भाँति कत दिन मध्य सभ जन कोशिकी तट मे एला
जे देशविद् कहलैन्ह मिथिला पूर्व-सीमा थीक ई
तैं गाधिराज क आश्रमहिं मे निशि बसी से नीक ई

सभ आबि आश्रम मुनि सबहुँ सँग निरत निशि सतसङ्ग मे
तहँ कथा क्रम सौं गुण क गणना चलल कृष्ण प्रसंग मे
तैं पार्थ उर उद्वेग उठ भऽ मिलो मित्रहिँ जाय कै
रहु ताहि तर्कहिँ निन्द वश भय गेल रैनि बिहाय कै

निशि बात कै पुनु प्रात भेने कौशिकी संगम जहाँ
चललाह खोरकरबहिँ सबहुँ मिलि करय अवगाहन तहाँ
गंगा नदी सौं कौशिकी मिलि भेल थल पुण्यद महा
सभ शस्य कैं कृत-कृत्य भै रहु तीर्थ संगम मे नहा

कहु पार्थ बहुतो दिवस बीतल कृष्ण दर्शन भेल ने
मन हमर मित्रक मिलन हित अति व्याकुलो भय गेल तैं
बिनु हुनक मिलने हमर चित रह खसत अति अकुलाय कै
तैं द्वारका धरि अवश चलि हम मिलब बड़ हरषाय कै

हम कहु कोना, नहि कहु कोना, पुनि आनि अन्य ने साधना
आशा गमन विनहिँ निष्फल कहल सभ आयब कोना
ई संग छोड़ब दुख बुझै छी विवश भै विनती करी
तैं प्रभु! उचित अनुमति अहूँ दी दुःख नहिँ मन मे धरी

संगी क विछुड़न मिलन मित्र क दुहु क गुण अनुमान कै
शास्त्र क अवशा दोष अछि पुनि ब्राह्मण क हित ध्यान कै
कैलन्हि विदा अर्जुन विछोहहिँ बहुत क्षोभित भय गेला
विछुड़ल विकलता ग्रस्त भै से स्वगत ई बजइत भेला

हा! दैव दारुण भवन छूटल हाय सभ संगी कहाँ
सभ एक पलहिँ छुटल सम्मति प्राप्त हम भेलहुँ कहाँ
हा! जाइ भरमल आइ कत हम छलहुँ फाँ एहि काल की
रचि कर्म-तन्तुहिँ जाल मकरा फँसि गेलहुँ जंजाल की

एसकर एसगर जीवन अपन मन मध्य बुझि पड़ भार ई
एसकर कहु काटब कोना पथ गहन वन संसार ई
एसकर लड़ब संसार झंझट बुझी संकट देखि कै
हम थाकि कै हिय हारि बैसी मन असम्भव लेखि कै

भ्रमि भ्रमि थकित मन मृगतृष्णा सन विफल बोध कराव ई
धिग की पड़ल जंजाल मे छी आय मन मे भाव ई
ई थीक निष्फल प्रण क पालब त्यागबे भल मन गुनी
तैं सकल दुख परित्राण हेतु क नीक थीक चली बनी

कत उदय अनुखन उदधि चित मे लहरि चिन्ता भावना
मन डोल डगमग पड़ि पुरैनि क पात पर जल हो जेना
तहँ मुनि रंग मन गुनि चुप भै पार्थ सतमत सोच मे
प्रण पथ पयान क त्याग सौं मन पड़ल छन सङ्कोच मे

मति छिन्न की कायर कहत जग बड़ अयश भय जायते
पार्थ क प्रतिष्ठा जगत जाहिर अवश आब नशायते
प्रिय सुयश प्राणहुँ सौं पुरुष कैं धरी ताहि बचाय कै
उपहास थरि-हत सुनब धिक बढ़ि मरण सौं दुख-दायकै

कहु वीर कैं की उचित धिक ई जगत-आहव सौं डरी
निज प्राण पण दै प्रण क पालन पुरुष भै करबे करी
जग जीबि कैं पुरुषार्थ त्यागब परम कायरता कही
तैं हो घरु कतबो पराभव त्याग पथ नहिएँ गही

सुनि त्रिविध दुख निवृत्त अतिशय परम पुरुषारथ कहू
मम मन लगन विश्लेष-दुख सौं भै किञ्चे कातर रहू
नर कर्म वश सौं आबि जग मे कर्म वश चल जायते
संगी सहोदर छुटब की धिक देह ई छुटि जायते

पर देह छुटलहुँ यश अयशहुँ क रेख जग रहि जाय जैं
पुनु पुरुष भै पुरुषार्थ त्यागव उचित चित नै बुझाय तैं
यदि क्षणिक जीवन मे कदापिहुँ पहल कर्म नै कै चली
युग युग जकर दुर्नाम व्यापे जगत मध्य गली गली

हैं कर्तव्य मन सौं कात कै उठि प्रण क पथ पुनु धेल ओ
उत्साह पलकर शुद्ध रूपें भेष पथिक क कैल ओ
ई इन्द्रप्रस्थ-नृप क सहोदर विरुधि से जन जान के
जैं भस्म भीतर अनल छपि रह भानु तकर समान से

चलि पहुँचु पथ क्रम पार्थ मणिपुर देश अनुपम देखि कै
नरनारिहुँ क सौन्दर्य लखि लखि रहथि अद्भुत लेखि कै
मणिपुर जनि मणि पूर पूरित मणिमये मन्दिर जतै
नरपति निवह चित्र मणि स्वरूपें चित्र-वाहन नृप ततै

तहँ नारि मे मणिहर अँगूठी नृप-सुता चित्राङ्गदा
हो कै ने सहजहिँ दृश्य जौं ओ नयन-गोचर हो कदा
जौं कहु निशा-मुख चढ़थि सोधहिँ सुपलिजा द्युति देखि कै
शशि पूर्णिमा उगु मानु पुर जन मनहिँ अचरज लेखि कै

सुनि नृप-सुता-सौन्दर्य-चर्चा कौतुकी अर्जुन भेला
से पथिक रूपहिँ राजपथ पर पर्यटन रत चल गेला
जनु तिथि विधान क प्रेरणहिँ सौं सौध पर दृग देल से
तहँ निरखि अमरा छवि अनूपम टकटकी लगि गेल जे

पार्थ किछु छन हृदय मे पुनु स्वगत कहु चित लाय कै
की ध्यावि थलनहिँ सौध पर शशि वसु कलंक मेटाय कै
की समष्टि शक्या विधि प्रयत्नहिँ रचल नारि क रूप ई
की अपर गिरिजा अवतरलि छवि धारि रूप अनूप ई

तहँ शशिक सम्मुख भेलहुँ सरसिज मुख मलिन तहिँ भेल जे
नव भाव जल युग मीन जोड़ी उछलि यहु विधि खेल सैं
तहँ मीन-केतु तरङ्ग उद्गम लाज भय गति फैल से
घन अञ्चरहिँ शशि लुपत मीनक रह मिलन छुटि गेल से

मन-कमल कलुषित शशि विछोहेँ भेल ओ कुम्हिलाय कै
ओ शशि क हिय सरसिज विछोहेँ रह अधिक दुख पाय कै
विपरीत गति लखि जगत जन मन अद्भुते सन मानथे
ई क्रिया कौशल इन्द्रजालिक काम कय रह जानथे

सुरा काम कलाल अनुपम चख चषक भरि भरि लखावै
मद न घट, घट घटी घटिका वह द्विगुन छन छन बढ़ावै
कै देल की सौं की पलक मे पलक छलक लखाय कै
भै गेल थानक ज्ञान मति गति सकल सुधि बिसराय कै

चित्राङ्गदा क चरित्र नितङ्गत अति विचित्रे देखि कै
चित चित्तितहिँ रह चकित सखि गण सतत ताहि परेखि कै
ई रोग थिक वा शोक की कहु भूत प्रेत प्रभाव ई
की कहुँ कियो कैलक ने टोना मनहु नहिँ किछु आव ई

सुनि सखि क अनुनय विनय वच ओ कहक हित उत्सुक भेली
मन सकुचहिँ जे विकलता छल खोलथा पर भे गेली
किछु कहौ की वा नहिँ कहौ ई चित्त दुविधा धारले
जौं कहु पुरावे मम मनोरथ तैं कहव निरधारले

की कहु सखी! नहिँ बुझि पड़ै अछि की कोना मे गेल ई
दिन चैन नहिँ निशि नैन निन्दो विसरिए जनु देल की
जैं हम पहल पथ मे पथिक पर मोहि दृग लखि लेल से
बस एक नैनक सैन सौं कत कै करतमा गेल से

नैं भै चकोरी सोच खिड़की सतत बैसी आय कै
की होयत ओ मुखशशि ने पुन दग-पथ निरखु अकुलाय कै
कहु की ने जीवन आश पूरत हे सखी ! समुझाय कै
कए कए अवश से दल विकसय मन कुमुद हरषाय कै

सुनि सोचि सखि मन मध्य बूझल थीक मदन क काज ई
बस बुझि पड़ै अछि गुप्त चित मे थानि देलक राज ई
से मर्म नहिँ जानै कुमारी वय-युवा अज्ञान मे
थिक श्रीगणेशे मातु निश्चय विषम शर सन्धान मे

सखि विहुँसि कहु सुनु राज-दुहिता सोच मन नहिँ आनयै
ओहि पथिक सौं पुनु दरश पायब सुलभ सन कै जानयै
लखि नव-कमल मधु ललित मधुकर कतहुँ ओ बिसराओते
पुनु जौं चकोर विलोकु चन्दा तौं कि नयन जुराओते

रहि रहि छलहि छन अर्जुनहुँ कैं रूप मन पड़ि जाय ओ
पुनु नैन नैन क मिलन हिय सुधि दैछ छन दहलाय ओ
छन आन्त आन्तक विजय सौं जनु चित चपल भै गेल जैं
पुनु पार्थ अवसर शर चलाबक यत्न-तत्पर भेल तैं

सुधि सोच मन पड़ि जाय कखनो शोभ सद्य नहात सो
पुनु मन पड़ै मुख शशि विनिन्दक नयन कोर कटाक्ष ओ
से निज कहुखन मन अवन पुनु चाह वरबस आब जैं
दुविधा निरत रह पार्थ सब खन चैन छन नहिँ पाब तैं

थिक फेरि देखब उचित नहिँ ई भाव मन मे आब जौं
देखी अधस अनुपम सरुपो चाह चित पलटाय तौं
तैं हृदय दोनहिँ ज्ञान मन्मथ दुहु द्वन्द्व मचाओते
सहि कैं परस्पर अन्त मे तहँ दर्पकै जय पाओते

कहु मदन मद नहिँ ककर मरदल बात अछि प्रख्यात ई
हरि हर विरञ्चि सुरेशहुँ पर कए सफल आघात ई
तैं पार्थ प्रौढ़-प्रतिज्ञ पड़ला तकर वश मे मानि ली
अद्भुत नयन-शर एक लगितहिँ छन विद्ध हिय जानि ली

तहँ फेर मन कैं फेरि सोचल निज दशा अवधारि कै
हा ! पड़ी पद पद पर प्रपञ्चहिँ आपु अर्जुन हारि कै
बस थीक दुर्बलता क कारण यैह मन मानै पड़ै
व्रत आरि मारि उलटि बरबस डाहि मम दुर्गति करै

तहँ नगर चार चलाक चहु दिश चलु चंचल दै रहै
से व्यक्ति व्यक्ति क रहन-सहनो निरखि तर्कहि मे बहै
लखि कै नवागत नगर भरमै सतत कै कहँ थीक ई
तै ली पकर परिचय अवश से हिय विचारल नीक ई

चलि चिन्हल चारो चातुरी सौं पूछि प्रश्न अनूप कैं
कहि देल नृपदुहिता-क्रिया सभ पहुँचि गुप्तहिँ भूप कैं
चललाह अन्तःपुर तुरन्तहिँ क्षुब्ध भौंहे धारि कै
कहि देल रानी कँ कथा सभ युक्ति योग्य विचारि कै

पुनि नृपति निज कुल शाप मुनिवच बहुत मन अनुमानि कै
अभिलाष पूरक हेतु विधिवश पार्थ आगम जानि कै
उठि प्रात दूत पठाय अर्जुन कैं बजाओल आदरैं
शुभ स्वागतक विन्यास कै दै उच्च आसन सादरैं

अति नम्र भै पुनु विनय-युत ई वचन भूप उचारलो
बड़ भाग्य थिक हमरहु नगर मे भ्रमहुँ निज पद धारले
अपने कतै, कत हम अकिंचन रत्न काचहि सन गुनू,
कहँ चक्रवर्ती कुल-कमल, कहँ क्षुद्र क्षत्री ही सुनू,

पुनु कहल नृप सतकार करब थिक महाने मानि कै
छथो नक्षत्रहिँ मे सुधाकर-रूप भूतल जानि कै
जे वस्तु मन मे मानि उत्तम विनय-युत अर्पण करी
स्वीकार जौं नहि होअ तौं मन क्षोभहिँ क डर सौं डरी

अर्जुन कहल, नृपवर ! अहाँ अति वृद्ध छी ई जानि कै
तैं थिकहुँ सब विधि पूज्य सभ जन चित्त मे अनुमानि कै
सुनि सुनि वचन ई नम्रता-युत अवश मन अवधारते
पामर छपत आतिथ्य अपनेक काय नहिँ स्वीकारते

आवास अर्जुन हेतु उत्तम उपवन क बिच देल गे
रह लागि लतिका कमहुँ फूलो सजिल सभ विधि भेल जे
तहँ भोजन क विन्यास बहु विधि रहै प्रस्तुत धाम मे
नृप दास-भृत्य समूह निशिदिन तनिक सभ आराम मे

कत भेल शिष्टाचार बहु कत सघन भूप उचारते
त्रुटि होयत कतकत क्षमब से कहि अपन भवन सिधारते
तत्काल परिणय पार्थ सन्मुख कर'क युक्ति अपार मे
निशि-दिन निरत नरपति क मन रह विविध यत्न विचार मे

कह पार्थ अनुकूल विविध गुनगुन हठहिँ मन मे गेल की
विधि, नारि-रूप अनूप रूपक मयता भरि देल की
कहु के कहि कान्ति क करसमा असुर सुर गन्धर्व की
विधि धीश ईश ऋषीश मुनिहुँक हरल नहिँ ओ गर्व की

कर-यष्टिका रूपहिँ सुता धै सौं एक दिन आबि कै
यम-पाश काशहिँ बढ़ कर्कश कण्ठ श्वासो दाबि कै
नरपति बहुत विधि विनय वश कहु रोप कष्ट उचारि कै
रहु पार्थ नृपतनया परस्पर निरखि दुविधा धारि कै

दृग दौड़ि दुहु दिश सौं दुहु दिश जाय फिरि फिरि आव से
जँ पंथ पावन परिजनो पुनु पंथ पंथ बचाव से
चित चाह चिन्हलहिँ सौं बढ़ै दृग मिलनहित ललचाय जैं
तहँ लाज गुरुजन बाध की दुकि सकुचि कैं रहि जाय तैं

नृप कहु "कहब की वृद्धता-वश भेल अवश शरीर ई
तैं शिर झुले, कर काँप थरथर, पैर पड़ नहि थीर ई
जनु काल काल क निकट बुझि कैं रोम रोमो डरि रहै
यमदूत छुवि तन-रोम सन जे कमहिँ दृगधुति हरि रहै

हा ! एक ई अवलम्ब यष्टी बालिका मम जानबे
नहिँ भेल पुनु सन्तान होयत शाप-वश मन मानबे
छन छन बढ़ै चिन्ता क ज्वाला यम नरक लय आयते
थिक आर्ति मे भसि की कहै जौं होत सम्भव होयते

अछि शोच भारक ग्रसित चित मम सुनु विनय वर पार्थ तैं
पुनि मुक्ति हेतुक युक्ति अपने क हाथ मध्य यथार्थ जैं
उद्धार अर्जुन अवश करता कहल मुनिवर पूर्व जे
तैं पर्थाहिँ पायल नयन अनुखन देल दरश अपूर्व से

थिक सबहुँक अभिलाष पूरय धर्म ई मन मानि कै
पुनु आर्त जनहुँ क आर्ति नाशब व्रत हमर लिअ जानि कै
नृप साध्य जौं अछि हमर से तौं कहिअ चित्त हटाय कै
कह पार्थ वश जौं होयत तौं ध्रुव देब दुःख छोड़ाय कै

अछि साध्य अपनहिँ सौं नृपति वर तैं पुनः पुन कहि रही
जौं कौतुकहुँ कहि देब नहिँ तौं नहिँ रहत जीवन कही
तैं लालसा संकोच सम्प्रति हियहिँ द्वन्द्व मचाव जे
मन भाव भापय कंठगत भय फेरि फिरि-फिरि आब तैं

पुनु पुनु विनय वच वृद्ध भै कहि धीक मोहि लजायवे
हम देल वचन नहि हटहुँ हटवे पार्थ कहु मन लायवे
कहु छुटल शर की बहुरि आवे वचनहुँ क गति जानु ई
धिक पार्थ भाषय लोक पाथर अमिट रेख कै मानु ई

धिक पुरुष भै निज वचन पालब परम कर्त्तव्ये गुनू
जग धीक पुरुषाभास से जन जे प्रण क त्यागी सुनू
कह पार्थ वचन क पालवे हित पड़ल छौ दुख-भार मे
जैं पाण्डव क कुल प्रणव्रती तैं ख्यात ई संसार मे

कहु भूप बड़ जन वचन पालथि सहथि कष्ट अनेक जे
प्रण पालधा प्रति प्राण पण धरु अष्टही क विवेक जे
सहि सेतु बन्धन दुख सरित - पति अगम नाम नशाओले
जैं राम सौं निज वचन हारल अवश ताहि पुराओले

कह पार्थ मम प्रण विवश मानी जैं मनहिं सतमत करी
हम प्राण तन मे धारि सपनहुँ प्रण विपथ पद नहिं धरी
संकोच सब तेजि कहु कहु नृप हो विपत्ति उद्धार तौं
नर-जन्म जीवन सफल मानी कै सकी उपकार जौं

हा ! हा !! ने हमरा पिण्डदाता कैओ जल - दाता ने हा
हा ! हा !! बुझी जग शून्य नृप कह कैओ रक्षक पाछि ने हा
बहि गेल अविरल धार अश्रु क कण्ठ रुद्ध भेल हा
तैं आन जे किछु कह'क छल से मनहि मे रहि गेल हा

सुनि आर्ति-युत व्याकुल वचन नरपति दशा कैं देखि कै
धीमन्तु विह्वल बुझी दानी दीन जन जनु पेखि कै
प्रण कै कहल भै विवश अर्जुन परम करुणागार जे
एह कौरव क प्रति नम्रता विनु बात सभ स्वीकार से

ई पार्थ - वचन सुनि कहल भूप
कृत - कृत्य पाबि प्रण वच अनूप
ई रत्न - रूप कन्या कुमारि
मम नयन ज्योति अतिशय दुलारि

से करी दान अपनेक हाथ
अभिलाष हमर करु पूर्ति पार्थ
तनु तनय हेतु प्रण एक येह
हमरा परोक्ष नृप होथु सेह

अति वृद्ध वयक अभिलाष जानि
कै क्रिया अवश ई लीअ मानि
किछु एते अवधि दिन वी बिताय
विधि देथु सुता-सुत मुख देखाय

पार्थ भै रहु मुग्ध भूप क नियम सुनि चित भाबि
की करी की नहिं करी ई पड़ल दुविधा आबि
हारि प्रण सौं हृदय पार्थ क हित असम्भव भेल
वचन - जालहिं बभल मीन क दशा सन भै गेल

गहि मौन गनथि अर्जुनो अवधि दिन भारी
कहि देल नृपति सौं विवश वचन निज हारी
हम वर्ष तीन धरि रहब एतै लिअ मानी
विधि पुरथु आश नहिं पुरथु चलब ध्रुव जानी

वचन सुनि कै नृपति गद्गद बखानू
हमर जीवन सफल भै गेल जानू
करथि उत्साह सौं परिणय विधानो
नगर मे मोद मनु उत्सव महानो

नृपति- महिषी क हर्षक की ठेकाना
मगन मन भय लुटावथि ओ खजाना
विविध विधिकरी विधिवत विधि पुराबै
मुदित पुरनारि मंगल गीत गाबै

आनन्द घरघर नगर भरि मे देखि पड़ चहु ओर
रनिवास उमड़ल मुद-समुद्रे नाच गान क सोर
शुभ लग्न बुझि कै हरषि नरपति दान कन्या देल
कै पुरुष पुङ्गव कैँ जमाता जगत मे यश लेल

जग नव विवाहित वर क कोवर मध्य जे सनमान हो
से जान जे जन भुक्तभोगी सकल सुखहिँ क थान हो
नवनारि व्यङ्ग विनोद वचनहिं विहुँस मोद महान हो
नित बात हो सुख पात हो तहँ भिन्न तन एक प्रान हो

यौवनक शतरंज रत रहु पुरुष नारि खेलाड़ि
नर महारथि कैँ कटाक्षक सहित सह देल नारि
पुनि भूलि किश्ती पयादिक चालि व्यर्थ बिचारि
बुझि वसतहुँ भेल प्राण ने मातु नाडल हारि

जे प्रथम दर्शन समय नेह क बीज रोपल गेल
सुचिरल सलिल सिञ्चन प्रभावेँ पल्लवित से भेल
अनु दर्शनहिँ कुसुमक विकास क योग भल दरशाय
विधि अवश अभिमत फल प्रगट कै देत हिय हरषाय

रस परिहास रमित रहि निशि दिन सुखमय समय बिताउ
नव-नेहक नद अवगाहन मे दम्पति अति सुख पाउ
छल जे हृदय लालसा सबहिँ क से विधि आनि पुराउ
प्रेम क रूप मनोहर क्रम-क्रम भाबी प्रगट लखाउ

अनमन रूप मन तन आलस - घन नयन ज्योति किछु आन
रुचि अरुचि भोजन मे छन छन मन्थर पगहि पयान
माटि असन मन अम्ब विलोकन सौं अतिशय उत्साह
नृपतनया ततमत चित सभ खन दोहद समय निबाह

रानी लै फूल माला हिमगिरितनया पूजि कैँ भक्ति भावेँ
वाणी दीनार्त दुःखेँ कहि कहि नत भै यद हाथेँ सुनावे
जानी का ! मर्म नारी बिनु सुत विफला दोष ई सैँ छोड़ाबी
पुत्री कैँ पुत्र पाबी अवश करु कृपा आशु आशा पुराबी

शुभ समय सम्प्राप्त भेने जन्म बालक लेल
नृपति घर आनन्द अम्बुधि उच्छलित भै गेल
भेल जातक-कर्म याचक जन क पूरल काम
बारहम दिन धैल उत्तम 'बभ्रु वाहन' नाम

कछु पार्थ कहल कए जानी
नृप विनय हमर लिअ मानी
प्रण अइँ क पूर्ति विधि कैले
दिन बहुत आब बिति गेले

हम निज प्रण शेष पुराबी
तैँ गमन क अनुमति पाबी
मुद मंगल देथु विधाता
शिव सकल मनोरथ दाता

भेल अनुनय विनय बहु विधि से कहल नहिँ जाय
दुखी दुहिता तनय दुहुकैँ त्यागि जाथि जमाय
बढ़ल दुख रनिवास मे रानी क हिय अति छोभ
रहि जाथि जौं भै घर जमैया येह मन मे लोभ

जनि डूबल शोक-समुद्र मे सुनि पिय-गमन चित्राङ्गदा
शिथिला विकल विचित्र लघु सुखदायको दो दुःखदा
जग नारि जीवन सुफल मानै अंक निज पति लागि कै
हा! जन्म संगिनि जनिक भेलहुँ से निठुर चलु त्यागि कै

रची देल मिलाय दम्पति विरचि कै किछु साथ
पावि दर्शन प्रिया कनइत छाड़ि रहु नत-माथ
कहु विलखि हा नाथ! होयब हम अनाथा तूल
आइ सौं अहिवात भूमल वन क मालति फूल

परसन मन रहि पर सन मे रहु परस न हा
दरसन छुटइत हिय गति होयत दर सन हा
बरस नयन युग अनुछन पावस बरसन हा
तरस न छुट हिय पिय किये भेलहुँ इतर सन हा

भेलि अंक कंकण कर विगलित गलित ललित तनु गात
छलि प्रमुदित सुख लहि सुखलहि सनि दैल विरह उतपात
वचन सरस सुनि शर सन लागै मिलन मिल न अथकंत
कानय कान धरय नहिँ छिल बच बचत न जीवन तंत

यद्यपि नवल नेह क प्रबल वेगहिँ चित नहिँ धीर।
तदपि पार्थ परिबोध हित कथा कहल गम्भीर॥
क्षत्री छित सुख तृण मानै ई जग के नहिँ जान।
पतिक - वीर गाथा गायन कै अहिवाते मन मान॥

पावि पुत्र पुनु चाह चित्त की मन मे करू विचार
लौकिक वैदिक दुहु मार्ग सौं दुहु पाओल निस्तार
सुनि प्रियतम सम्वाद कहलि विलखि चित्राङ्गदा
नव विश्लेष विषाद ई असह्य अति प्राणपति

हे जीवन वसन्त सहचर सन मन रंजन दिव दिनकर!
की असमय उड़ि उचित विचारिअ, करय पलाप ऋतु दलभङ्
हे मन सुमनक मधु मधु लोलुप! छी की तजि चलबा घर
मान शोक आलस्य कौन जे रमलो भेल अरुचिकर

स्वामिनि! प्राण समान जीवन जग प्राणहुँ सौं प्रिय भारी
कहु अर्जुन तकरे रक्षा - हित छित युक्ति सजिअ दियारी
सहधर्मिणि जे पति पति राखै धन्य नारि - वर भागी
सुनु सुनु मन गुरु प्रतिपालन प्रण प्रणयिनि! हरकैं त्यागी

अविरल अश्रु प्रवाह
मौन गौन सम्मति प्रिया
प्रण कठोर पथ नाह
हारि चलल तजि नव सिया

से चलि कैलाइ धरि भेलि ठाढ़ि
विलुब्ध विरह - नद बढ़ल बाढ़ि
कर हरिदु रोध बहि नोर - धार
तैँ पोछि पुनः पुन पिय निहार

कत उदय भाव मन चोखि दीय
निज मिव कलंक कुल जानि नीच
कुलवधु क हेतु गुरु - जन क लाज
कर प्रेम - पंथ मदगा क काज

प्रिय जन विछोह अवरोध गरा
तैँ छोपि क्षोभ सौं मुग्ध गिरा
चित्राङ्गदा क व्याकुल सरूप
के कहत उचित रहि जाइ चूप

श्रीकृष्णैक कृपावलम्ब चित मे बीभत्सु राखू सदा
भेलो ने कत वर्ष सौं मिलन तैं चिन्ता हृदै सर्वदा
मित्रे सौं मिलबाक हेतु सहसा बाढ़ै मनोद्वेग जैं
संसारी सुख सौख्य त्यागि त्वरितै प्रस्थान कै हल सैं

नवम सर्ग

श्री हरि क कै लेल मन मे प्रार्थना
छन प्रिया, छन प्रण क हो पुनु भावना
पार्थ छैथहिँ निरत चल पथ देखि ली
गमन गति सँ मन क गति कैँ लेखि ली

मन चपल रमणी क छवि - मधुजाल मे
विसरितहु नहिँ विसरि सक एहि काल मे
चिनु मने तन शून्य सन कै लेखथै
छद्म सं कर्त्तव्य कर्म्महिँ देखथै

विपथ गमनहिँ पड़हिं किछु आघात हो
अवश मनहुँ क तखन भ्रम किछु ज्ञात हो
चेति चलितहुँ फेरि द्रुतकर गति तेना
लाग सत्वर पतित पातहुँ मे जेना

चलथि पाँतर प्रान्त प्रेमोत्क्रान्त मे
विचरि रौद्र प्रचण्ड दाह नितान्त मे
हो पिपासा ताप सौं पीड़ित जहाँ
अपा पथ पर पेखि पथ पीबथि तहाँ

निशि यद्यपि कतहुँ मान गोर श्मशान मे
की कतहुँ तरु छाँह की कुन थान मे
मूल फल आहार की उपवास हो
शारीरिक प्रश्रेय वा आभास हो

निकट माता पार्वे कतु भरि नोर हा !
मन शालिनि सदन ह्रदय घोर हा
अपन देश समाज सब छुटि गेल हा
भाग्य थकक आगा सों सब भेल हा !

कतत - कोपहिँ मध्य से पड़ाय रहैं
कुश पाँट करोत बन बसती सहै
अहल घर हरि करि क कुश विदारि जे
काज धरों होय बन फल डारि के

पंथ पुछि पुन चलथि तीर्थ उदेश मे
पाण्डुपुत्र - कुश - कुमर पथिक क भेष मे
एना ९ करत कुनक लखि अनुमान हो
नहरी बल विदित लोहित थान हो

पंथ तीर्थ क नाम सुनि पायोल सहाँ
दास सुनि अन जानि हर्षित भेल तहाँ
सोचि चित चलनाइ तेहि पथ सौं चली
कुटि क संगहिं सुचित रहित समाय ही

बन - समूह क बीच एक तरु छाह मे
कुमि पड़ै जानि विरल कुश छाह मे
पाण्डुपर्हिं चतु पार्थ पथ सजि के सहाँ
देखि लागु सुनौ पार्थ सौ कहाँ

फहल उठि एक कुश बप धीवल फरै
जल क फन्द न पड़न कुश कहिती फरै
जीव जन पशु विहग अछि पड़ि प्राप्त मे
मरण सुख मे पतित भानु क्लान्त मे

देख सरवर तीर्थ पदन प्रशान्त सौ
एक आश्रय जलक कुश पड़ि प्रान्त सौ
आबि बाढ़ निवास तहँ कँ गेल सौ
बहुत जन कँ हलल सब तजि देल सौ

पानि बिनु नहिं प्राण रहत जानि कँ
भूप कँ गोहराउ करतब मानि कँ
भेल नहिं उद्धार नरपति तादि सौं
कुसुन कुश सँ गेल सब कँ जादि सौं

रहि रहल ही सबहिँ प्रतिशय क्रोध कै
जल प्रबन्धक पाल पड़ि प्रवेश के
नृपति नहिँ किछु भेल पड़ि पड़ि शाक मे
धाव की कर्तव्य सबहु विचार मे

केकरो उठि कै फहल उठ देहान मे
पंथ संग्रह करक थिक पड़ि लाल मे
संघ सौं कर शुक्ति सौं बढ़ जाति सो
दण्ड समूहक शक्ति सौं धन वाणि सो

अपर एकसंग कहल नृपति सुशांत सो
संग्र करहिँ प्रहण कर कर धांत के
विकट कतो प्रजागण सब सन रहि
भूप दयनहिँ करत कथ धन तप रहे

प्रजा धन मे भूप कें जौं लोभ हो
शुनि लोहित ताहि किछु की क्षोभ हो
सिंह गहि गज ग्रीव शोणित चाभ जे
कुहरनहुँ की दया किछु उर लाब से

राज्य तरुवर मूल रैयति मानवे
नरपति क बल मुख्य रैयति जानवे
करय जौं विद्रोह रैयति जानि ली
भूप खेतक धूक रूपे मानि ली

सुधा-जोशहिँ युवक एक उठि भाषले
आकुले नहिँ त्रास किछु मन राखले
व्यर्थ भूपति आश सभजन मन धरी
पुरुष भै कहुँ सबहुँ मिलि पौरुष करी

प्रजा सौं कर रूप भूपो लेथि जे
उचित थिक दुख प्रजा गन नहि देथि से
नृप विमुख कर्त्तव्य बुझि करु मन्त्रणा
करने दी सभ मिलि करी ई यन्त्रणा

जे प्रजा दुख दलन मे नहिँ दक्ष हो
जे रणाङ्गण मे ने शत्रु समक्ष हो
जे ने धावै आर्तजन चित्कार मे
कहक क्षत्री नृपति से धिक्कार तैं

क्षत्रियहुँ मे शौर्य भै गेल ह्रास जैं
तेजल मन सौं क्षात्र धर्म क आस तैं
कहक क्षत्री करथि कायर काज कैं
थिक कलंकित करय जाति समाज कैं

लाञ्छना निज जाति सुनितहिँ कान सौं
पार्थ भृकुटी कुटिल चढ़ि गेल शान सौं
मनहिँ कहु ई होठ साहस कैल की
पथहुँ अहि शिर मारि पाथर देल ई

सुनि युवक क घोर गर्जन गर्जना
पार्थ अतिशय क्षुब्ध सोचथि दुर्मना
जाति लाञ्छन सुनि जे चुप भै रहै
धीक कायर पुरुष जग मे सभ कहै

सभा बीचहिँ पार्थ उठि उचारले
क्रोध-युत युव-जनहिँ कहि ललकारले
आब जनु किछु बाजु मानू बात ई
जाति लाञ्छन असह्य दुःख आघात ई

क्षुद्र गोहि विनाश हित दुर्वाच्य कही
वीर क्षत्री हेतु उचित ने सहि रही
नहिँ अवज्ञा-वचन कें वीरो सहै
वीरता दरशाय उत्तर दै रहै

चलु एखनहिँ पंच तीर्थो जायवे
धसि सरोवर पकड़ि गोहि नशायवे
तीर्थहुँ क उद्धार कीर्ति कमायवे
कुल मयंक कलंक धोय मेटायवे

सबहुँ पार्थक वचन सुनि विस्मित भेला
के अपरिचित वीर ई उपगत भला
पूछि परिचय पार्थ कैं चिन्हि लेल जैं
होयत दुख उद्धार चित दृढ़ भेल तैं

दूर उठि कइ दुखिय युवक क छोप कैं
घालें जन पर धर' क नहिँ थिक रोप कैं
यखन पश्चिम क्षितिज पर रवि गेल जैँ
उदित अम्बर तखर छिप नहिँ भेल तैँ

सुद समर्पन करल पास यथार्थ ओ
मानु संकुचित दशा दुख क दर्थ ओ
मुनि - कुटी कति आइ राति गमाइये
पार्थ कहु प्रभु करिह कष्ट नहाइये

लता हरसल सबहुँ हर्षित भेल से
पार्थ पथ मुनि चालहिँ क धै लेल जे
कति समीपहिं देखल घाट क कात से
मुनि क वल्कल लर्थहिँ डोल वतात मे

लाल पातक कुटी ठामहि ठाम जे
अवरहु शोभित शुभ्र परम ललाम से
नित्य हवय क धूम्र तहँ छिड़िआय जे
हव्य गन्ध छिड़ु संग निर्भय खाय से

केलि विहगक वृन्द तरु कलरव भरै
मृगशावक संग आनन्दी करै
बटुक - गण फल समिधि ले आगत जहाँ
निरत सन्ध्या - कर्म मे मुनिगण तहाँ

केहओ वेदक ताल मे संलग्न भै
केहओ रहँ वदइत वेदन मग्न भै
केहओ ब्रह्मचारी क साधन लागले
केहओ रत संन्यास संकट त्यागले

मुनि निवासो नीक अर्जुन जानि कै
सज्जन क सत्संग सुखमय मानि कै
निशि निवास क विनय सबहिँ कैल ओ
मुदित मन स्वीकार मुनि के लेल ओ

कथा क्रम सौं युभल अर्जुन नाम से
पर्य्यटन कारण सुनल परिणाम जे
कैल आदर पानि आसन आनले
कहल मुनि बड़ भाग्य ई हम मानले

नीक जे फल मूल चिछि - चिछि आनि कै
परसि पातहिँ दै कमण्डलु पानि कै
अतिथि सत्कार सेव्य मुनिकहुँ नीक तैँ
करिअ ई स्वीकार मुनिवर धीक जैँ

भूप भोज्य क वस्तु हम पायब कतै
वर्जनीये भोग्य राजस अछि जतै
हरि विदुर घर साग स्वादल छल जेना
कही प्रेमहिँ इहो अर्पित अछि तेना

पार्थ कहु मुनिवास तीर्थ जानि कै
सुर समाजे सबहुँ कैं मन मानि कै
परम पुण्य क फलहिँ प्राप्तो थीक ई
अमृतहुँ सौं सरस मानी नीक ई

भेल भोजन पान शयन निमित्त सौं
कुश क पटिया पार्थ बैसु सुचित्त सौं
कैल मुनि सौं विनय किछु उपदेश हो
जे सुनैत बिनाश आधि कलेश हो

मुनि क हेतु क धर्म थीक यथार्थ तैं
विनय अतिथि क मानि कहलनि पार्थ कैं
ब्रह्मचर्यो – वान – संन्यासी कही
श्रेष्ठ सभ सौं अवश मानव थिक गृही

जगत शब्द क भ्रमण गृहिकृत मानवे
गृही कृषि आधार अन्न क जानवे
थीक प्राणो अन्नमय कह वेद जैं
प्राणदायक अहा गृहि मे भेद ने

कर्म-त्रेशे थीक जग श्रुति कहि रहै
कर्म बीज क रूप कर्मों क फल गहै
कर्म बंधक कर्म बल नाशै सही
कर्म कर्मैं थीक मनुज क हित कही

जीवि जग ई भाव हिय सबखन धरी
खल प्रपंचिक पंच मे नहियेँ पड़ी
गृहि क जे कर्त्तव्य से अपने सुनू
ई समाजहिँ जानि कै मन मे गुनू

तत्पुरुषहि क भाव तैं सभखन धरी
बहुव्रीही- युत रहैक यत्नो करी
कर्मधारय चित्त नित चिन्तित रही
अपदपय मे भाव अव्ययिप सही

द्वन्द्व बन्धु क बीच मे नहिँ व्याप्त हो
धर्म धन बल द्विगु त्रिलोको प्राप्त हो
एहन भावहिँ घर क काज चलाव जे
धन्य नर वर-जगत मे यश पाव से

मरण - जीवन दुःख - सुख दिन - राति मे
द्वैध गति ई जगत मानक जाति मे
मध्य मार्ग गृही हेतु क नीक जैं
अति करब सर्वत्र त्यागब थीक तैं

पार्थ पुनु पुछु पंचतीर्थो अछि कतै
दूषितो भय गेल से सुनलहुँ एतै
करी इच्छा प्रात उठि तहँ जायबे
शोप दुरि कै अपन यचन पुरायबे

कहल मुनि पुनि लगहि मे अछि तीर्थ से
थीक आयब तते बूझू व्यर्थ जे
धर्म भय युत विषय ई अहँ सुनि ली
पुण्य प्राण विचारि कै पथ मे चली

पौलमीकारव्य कुम्भज नाव जे
भरद्वाजक कैल वारिम ठाम से
पाँचमो सौरभ्य सालल मानबे
पंचसर कह नाम जग ई जानबे

अश्व - मेध क पुण्य हो अवगाहने
तीर्थ उत्तम थीक शास्त्र निगाहने
अछि महात्म विशेष कहबो थीक ई
बहुत तीर्थ क मध्य अछि अति नीक ई

आबिकै तहँ ग्राह लेलक वास जे
तते जल हित गमन कैनहुँ त्रास से
त्यागु सभ जन ताहि ग्राम प्रदेश मे
मचल हाहाकार एहि प्रदेश मे

सोचु मन मे पार्थ एहि थल की करी
क्षुद्र गोहिक डरहुँ सौं की हम डरी
यच उलुपी कहल से अजमायबे
गोहि हति उद्धारि सर यश पायबे

कहल पुनि मुनि एहन मति नहिएँ करी
ओ जयर जल जन्तु सौं जिय मे डरी
बली जलचर थीक जल मे जानबे
तेँ उचित थिक युक्ति आने ठानबे

प्राण - रक्षा मुख्य करतव मानि लौ
धर्म्म कर्म्म क हेतु नरतन जानि ली
शास्त्र - सम्मत थीक ई मन मे धरी
धर्म्म हित नहिँ प्राण संकट मे करी

पार्थ कहु, दश जन क आरति देखि कै
कर'क थिक पुरुषार्थ प्राण उपेखि कै
प्राण बाँचो जौं रहै ई धकधकी
तौं कदापि महान कर्म्म ने कै सकी

ऋषि दधीचि शरीर सुर हित देल जे
कीर्ति कीर्तन आइ धरि जग भेल तेँ
करी नहिँ उद्धार जौं एहि धाम कैँ
अवश थिक धिक्कार पार्थ क नाम कैँ

जौं समाजक कष्ट सुनि चुप्पे रही
कायरे जग आनु बड़ अयशो सही
वीरता बिनु वीर नाम धरायबे
मातु माटि क सिद्ध सन दरशायबे

भेल आब निशीथ उचितै थीक तेँ
स्वस्थ सूती, एखन मुनि कहु नीक जेँ
निरत तर्क वितर्क युक्ति यथार्थ मे
भेला निन्द क वश्य क्षण मे पार्थ से

थीक निद्रा श्रान्ति - हर सहजहिँ कहो
सकल चिन्ता दूर कर तत्क्षण सही
ईश्वरीय विभूति थिक जग जानि ली
जीव जन्तुक सुख क साधक मानि ली

यवनिका अभिनय क प्राची प्रान्त मे
उठल पाछल सबहुँ मोद नितान्त मे
द्विज - मुखेँ नान्दी क पाठो भै रहै
खर अबर आनन्द जे से के कहै

प्रात उठि कए पार्थ मुनि-पद वन्दना
पंचतीर्थ पयान हित पुनि प्रार्थना
सुनि से वच क्षोभ मुनि मन आनलै
हठ हुनक लखि संग चलबै ठानलै

ग्राम ग्राम क लोक सभ आयल तहाँ
परम कौतुक हेतु ओ सर छल जहाँ
पहुँचला तहँ पार्थ जोश उमंग मे
विमन मुनि रहु हुनक हठ क प्रसंग मे

सर सुभद्रहिँ मध्य अर्जुन धसि गेला
ग्राह सौं तत्काल से ग्रसितो भेला
अगम जल मे खीँचि कै लै गेल से
दइहिँ मुनिवच तेजल तखु फल भेल जे

गुरु जल मे मेल बहुतो काल जैँ
उदधि मन्थन रूप पानि उछाल तैँ
मुनि कहल पड़लाह विपति क जाल मे
गहल हा ! हा !! ग्राह मुख विकराल मे

पार्थ सन नर - रत्न हा जग सौँ गेला
की कर'क थिक सबहुँ अति व्याकुल भेला
आर्ति मे हिय हारि हरि गोहराओलै
आहि आरत - बन्धु ! वैन सुनाओलै

ग्राह ग्रसने गज क कष्ट छोड़ाओलै
अद्भुते कत कृत्य निज दरशाओलै
अर्जुनहुँ कै विपति तत् सम जानबे
दी़़ जन उद्धार मति मन आनबे

कृष्ण पार्थ क छुनल छल अति मित्रता
त्राण मित्र क काज मे करु शीघ्रता
त्राहि दीनानाथ ! आइ अनाथ ओ
कृपाकोरहिँ उबरि होथि सनाथ ओ

पार्थ तेहि छन ग्राह गहि आनू जहाँ
त्यागि से तन भेलि ओ नागरि तहाँ
चकित सम जन देखु रूप अनूप ई
लोह पारस परसि स्वर्ण सरूप की

विधि - विधान विचित्र चित्त विचारि कैँ
पार्थ पूछल प्रश्न ई ओहि नारि कैँ
के थिकहुँ की हेतु ओ तन पाओलैं
आब थइँ अपरुप रूप लजाओलैं

पाँच सर मे सबो पाँचो छी पतै
कहलि से, छी पड़लि सहि कष्टो कतै
कृपा कै उद्धारि बड़ यश लै रहू
किये ई भय भेल से हम की कहू

तनलटनि बड़ छलहि मद वेग क बलैँ
चोरि ज्ञान क कूल मति कुपथैँ चलै
लाज तरुवर तोड़ तरु शीलो बहै
कत अनर्थ मे बाढ़ि सब दय कै रहै

तरुण घर सब जाय गीतो गाय कै
रस रभस मे मगन धूम मचाय कै
तनय तप मे विरत विप्रहिँ भेल जे
नारि सौँ हो ग्राह शापो देल से

शाप सुनितहिँ काँपि थर थर हारि कैँ
कैल विप्रहि विनय दुहु पद धारि कै
जानि जग मे छलो अछि व्यवहार जे
त्यागि जरि कर आगिहिँ क उपचार से

द्विज दयानिधि दया - दृग दरशाओलै
दोष अबला दग्ध बूझि सुनाओलै
सलिल सौँ लै चली थल पर लाय औँ
अवश सहिखन नारि तन पुन पाब सौँ

चिन्तितो चलि जाइ अति दुख मानि कै
कोना छूटत कष्ट किन्तु नहिँ जानि कै
पंथ मे मुनिराज दर्शन देल जे
लोग - ग्रस्त क हेतु औषध भेल से

कहल नम्रहि निज विपति ऋषिराज सौं
विनय कैलहुँ त्राण हित बिनु व्याज सौं
देखि दीना द्रवित रूप सखाओ रे।
डूबल तरणी खैंचि तीर लगाओ रे

कहल मुनि, बसु पंच तीर्थहिँ जाय कै
आबि अर्जुन देता दुःख नशाय कै
सुनि सभ एहि ठाम लेलहुँ बास कै
दुःख क दिन एहि भाँति देल बिताय कै

धन्य मुनिवच आइ सफलो भेल से
आबि कै दुख दुसह मम हरि लेल जे
अपर सखि छवि धारि लेहि तारी अहो
जगत भरि मे अमर यश पाबी प्रभो

ग्राह गहि गहि धारि आनल पार्थ जे
भेलि अनुपम नारि रूप यथार्थ से
विप्र क्रोधो यथादत्त फल देखले
विधि-विधानो तुच्छ हिय मे लेखले

उठल जय-जयकार लोक क भीड़ मे
कहथि सोइहिँ पुलक पुर शरीर मे
सुखहिँ युग युग जिबथु ई संसार मे
धन्य नर जे निरत पर-उपकार मे

मुनि कहल अहँ कालकालहुँ ने डरी
ग्राह-अङ सौं त्राण जनहुँक दुख हरी
पुनः पुण्यद तीर्थ कैँ पलटाओले
अपर अमिरथ रूप यश जग पाओले

धन्य पर-दुख-दलन वीर यथार्थ छी
विश्व-वीर क मुकुट-मणि वर पार्थ छी
कहि चललि सुरनटी सुरपुर धाम कैँ
जन-समूहो हरषि चलु निज गाम कैँ

पार्थ पथ प्रस्थानहि क प्रस्ताव सौं
आइ भरि रहि जाइ मुनि कहु भाव सौं
देल उत्तर दूर जैबो जानबे
तैं कृपा कै हठ न एहि हित ठानबे

सतत चिन्ता चित्त तीर्थ क ध्यान मे
पुछल मुनि सौं पार्थ तैं प्रस्थान मे
पश्चमीय पयोधि जौं हम जायबे
तीर्थ कहु जे जहाँ पथ मे पायबे

मुनि उचारु प्रभास पथ मे पायबे
तीर्थ उत्तम धीक से मन लायबे
सोमनाथ महेश पूज्य सुरेश सौं
उमा अभिमत-दात जानु विशेष सौं

उग्र वर छवि जगत मे ओ जानबे
सकल तीर्थ क बास फल तहँ मानबे
अछि अनेको तीर्थ पुनु ओहि ठाम मे
सिन्धु सिन्धु क मिलन पावन धाम मे

पार्थ मुनिगण वन्दि पंथ सिधारले
फरी बास प्रभास मन निरधारले
सिन्धु-पथ चढ़ि पोत चलु हरषाय कै
शीघ्र तैं ओहि तीर्थ पहुँची जाय कै

पार्थ पांथ क संग मित्र क भाव जैँ
सुख-दुखैं चित मध्य सुख-दुख साव तैँ
मिलन-बिछुरन जन क हो नित संग सौं
मनुज आवागमन जगहिं क ढंग सौं

पहुँचि पार्थ प्रभास मुद मन पाओले
उदधि मे अवगाहि कृत्य पुराओले
तीर्थ बुझि करबद्ध कयल प्रणाम से
ठीक थल बुझि तते लेल विश्राम से

तीर्थ-कृत्यहिँ निरत संगी संग मे
कत नवागत जन क तहँ सत्संग मे
बुझथि अर्जुन देश-देश क बात कैँ
रीति नीति नरेन्द्रहुँ क अज्ञात जे

द्वारका सौं प्राप्त तीर्थ उदेश सौं
पांथ मिलु तहँ आय प्रेम विशेष सौं
कुशल कृष्ण क पुछल से समुझाओले
जनु हेरायल रतनहिँ क सुधि पाओले

पार्थ तनिकां कहल जौं गृह जायबे
कृष्ण कैँ संवाद ई पहुँचायबे
तीर्थ भ्रमणहिँ निरत त्यागि स्वबास कैँ
पखन छी हम आबि तीर्थ प्रभास मे

पार्थ सौं लै बिदा पहुँचल देश से
कृष्ण कैँ संवाद कहु आदेश जे
पुछल सबहिँ क कुशल पार्थ प्रभास मे
पसकरे छथि पखन तीर्थ निवास मे

हरि विचारथि सुनि ई थिक बात की
शत्रु-कृत किंतु भेल अछि उत्पात की
माय सोदर भाय भगिनि त्यागि कै
किऐ पसकर छथि पतै ओ आबि कै

बुझ' क थिक ई बात अपनहिँ आबि कै
कारणो घटना क की मन लाय कै
बहुत दिनपर मिलन-मोदो पायबे
बुझि दुख या दोष ताहि नशायबे

देवकी सुनि लेल पार्थ प्रभास मे
पसकरे घर छोड़ि तीर्थ क बास मे
बहुत दिन सौं कुशल नहिँ कुन्ती कोना
किऐ अरि बिच सबहुँ लेजि अयला एना

समदिया कैँ त्वरित तैँ बजबाय कैँ
नारि जत रनिवास सभ जुटु आय कैँ
कुशल कुन्ति क सुन क हित मन वाञ्छ जैँ
रहलि उत्सुक सबहुँ मे साकाङ्क्ष तैँ

आबि ओ अर्जुन क कहु सब कुशलता
धन्य कृष्णो हुनक सँग कय मित्रता
मधुर मोहन बचहिँ अतिशय प्रेम जैँ
पुछल से जन-जन क कुशलक्षेम तैँ

रूप गुण सौन्दर्य शील स्वभाव जे
अछि केहन की कहब मे कहु आब से
कान्ति बिधु लखि सहज नयन चकोर हो
हुनक सन सम्बन्ध भाग्य ने थोड़ हो

जहँ कुमारी इन्द्र उपमा - हीन छो
तिलक त्रिभुवन काम मूर्ति मलीन छो
दर्प युग भुज - दण्ड लखि अनुमान ई
जितत ई ब्रह्माण्ड कैँ छो भान की

कान्ति नर तन पाबि विधा सृक्ति ने
रूप गर्वित पाबि वीर क शक्ति ने
सोन सौरभ संग रूपो गुण रहै
विधि रचन अपवाद अर्जुन जग कहै

भुवन भरि नहि पहल दोसर देखले
छथि हुनक सन पैह रह कै लेखले
जनिक कर ओ गहथि पुण्ये मानि ली
धन्य तनिकर भाग्य जग मे जानि ली

सनितहिँ गुण पार्थ भद्रा - चित्त मे
त्रिविध वचन करु बीज नेह निमित्त मे
करथि कतेक अनुमान मन मूरति गढ़ै
हुनहिँ छुब दरशन क आकुलता बढ़ै

केहन मोहन मन्त्र पार्थ क नाम मे
मधुर नव उद्वेग बढ़ अठयाम मे
जनिक नामे करय व्याकुल प्राण कैँ
दरश परसहिँ होयत की से जान कै

यान चढ़ि चलु कृष्ण तीर्थ प्रभास कैँ
मिलन मित्र क होअ ई मन आश कैँ
आतुरेँ हरि हृदय भाव जनाव ई
पथ पियासल पथिक जल थल धाव की

हरि प्रभासहिँ पहुँचि पेखल पार्थ कैँ
अति उदासी पथिक भेष यथार्थ मे
अछि मोरहिँ मग्न उचर ने बात तैँ
पार्थ पारस पाबि पुलकित गात जैँ

कह पार्थ मम भाग्य क उदय थिक आबि दरशन देल जे
मन मे कतेक छल भ्रान्ति आजु क मिलन सौं नशि गेल से
नहि छी अहाँक कृपा बिना दुख शान्ति साँच कहैत छी
सभ काल हम उद्विग्न दरशन हेतुही क रहैत छी

बसि एक आसन मानि सुख हरि पुछल कुशल क बात जे
सभ भाय माइ क द्रौपदीहुँ क की दशा कहु तात से
पुनि पुछल कहँ रटना करी की दोष सौं घर त्यागि कै
अछि की तकर कारण कहु चिन्ता रहल चित लागि कै

हँसि भाषु अर्जुन अमृतो विष होअ अवसर पाबि कै
तिथि एक अमृत सिद्धि योगेँ गरल गुण गह आबि कै
लिय द्रौपदी सहवास मे मुनि बान्हियँ नियम देल जे
जननी मुनीश क वचन पालन हेतु विपफल भेल से

वचन गुरुजन पालबे थिक शास्त्रगत मन मानि
मधुवचन माता क मानय धर्म चित मे ठानि
आउथ मे देवर्षि आज्ञा ताहि मे मिलि गेल
मातु मन सम से वनहिँ सौं विषम विष ई भेल

पंथ - कथा कहि देल कृष्ण ताहि मन दै सुनल
तखन मुदित मन भेल विहुँसि कहल ओ पार्थ सौं
वाणी माता ऋषीशो कथन 'मिलि अहाँ बीच दोपे बखानी
जानी जैँ देश त्यागेँ सहु दुख बहुतो खेद तैँ चित्त आनी

ज्ञानी भै के विवाहक फल दुइ गृहणी पुत्र कै पाबि लेले
मानी ई सत्यवाणी चित्र कठिन रुजें अमृते तुल्य भेले

सुनू पार्थ! ई बात कैं आब मानू
हटें तारि मे तों बहाना ने ठानू
चलू द्वारका कैं स्व-आवास जानू
रहू स्वस्थ भै आन नै चित्त आनू

थिक ओ अवश्ये मोह निज हम से किऐ नहि मानबे
हँसि पार्थ भाषल ताहि मे कहु को बहाना ठानबे
अवशेष प्रण नहिँ भंग हो अहँ जे कही रहबे तहाँ
सम काज मे हमरा सबहिँ कैं छी विचारी तों अहाँ

चलू द्वारका कृष्ण भाषू तहाँ
समीपे रहो रैवते मे अहाँ
गतायात सों मोद मानी मने
बितावी समै शेष कैं ई भने

हम कठपुतरी अहँ नट थिकहुँ यथार्थ
जेना नचावी गुण गहि कह पुनु पार्थ

जग जलधि जीवन तरणि नाविक थिकहुँ हरि जानि
सतत मन पतवार रहइछ अहिँक वश मे मानि
ताहि दिश ई गमन रत हो जेम्हर दीअ घुमाय
सुनि विनय से दृष्टि रोकय पड़ि भ्रमर नहिँ जाय

श्री कृष्णक सम्मति सुखद मानु पार्थ हरषाय
मन मे नव उत्साह उठ देखब द्वारका जाय

—•—

दशम सर्ग

श्री मुकुन्द क संग अर्जुन द्वारका दिश गमन कैले
हृदय युग उत्ताप छिल अनु पावसे सन मिलन भेले
हो परस्पर कत कथा ई दिन विछोह क कोना गेले
अर्जुन क पथ कृत्य सुनि हरि वच-विनोद क ढंग धैले

कहल भल फल देल मुनिवच देश त्याग ने दुख मानू
दार संग्रह हेतुएँ जनु सुलभ द्वारे खुजल आनू
श्रान्त भै विश्राम हेतुक जतय चित बहु दिन बितावी
ततहि भाग्यहि भव्य भवनहिँ भाविनी भल दृश पावी

वरष दिन मे दिन बहत्तरि मात्र गृहिणि क मोद पावी
ताहि सों जे भिन्न दिन से घरहु कैं घन वने भावी
सोच छल समकाल जे चित वली भाग्य क फलहिँ मानू
विधि प्रपंचहिँ संच संचहिँ देल दुगुन पुराय जानू

सुनि कै अर्जुन विहुँसि कहु भाग्यवत्त हमरा कहै छी
हम बुझै छी व्याज सों अहँ अपन गुण व्यक्तो करै छी
दार दुइ कैं त्याग कै हम अपन घर कर शून्य जायब
कतै सोलह सहस्र सै युत आठ तिय नित घरहिँ पायब

कहल हरि पाथेय पंथहिँ सठत घर सन्देश चाही
जौं भेटी ओ उचित नहिँ थिक भाइ मे घँटवा क चाही
भाग्य बल लगन क प्रभावेँ बुझि पड़ै पुनि अवश पाण्त्र
बहुत द्वारा प्राप्ति फलहुँ क ऊनता निश्चय पुरायर

हो विनोद क बात बहुतो समवयस्क क संग भेने
प्रेमहीक प्रवाह मे बहि बक व्यङ्ग्य विचर्तँ धेने
नेह-नद संगम सरोवर मोलि अनुपम रूपधारी
वच तरंग क रंग देखिअ दुहु क मन आनन्दकारी

रत विनोदहिँ मगन दुहु जत पंथहुँ क सुधि बिसरि देले
दारुको रथ हाँकि द्रुतगति द्वारका लगिचाय लेले
उच्च सौध क ध्वजा रथ लखि फहरि रह ई भाव आवै
हरषि बांहि पसारि स्वागत हेतु जनु से चाह धावै

ताहि काल हिँ दूवसदन मे सभा सभ्यहिँ सज्ज राजै
श्री सुभद्रा-परिणय क हित वर क निश्चय करक काजै
धाम कहु बल वैभवे बढ़, योग्य वर कुरुराज पावौ
कुल कुटुम्बक थिकथि परिचित पहन पुनि की ताकि लावौ

कथा करितहिँ कृष्ण सस्मित अर्जुन क संग आबि गेला
सनिक स्वागत मे सबहुँ जन आदरेँ साकाङ्क्ष भेला
बात हामहिँ रहल निर्णय करब कैँ सभ त्यागि देले
वर्तमाने काज मे रत कृत भविष्य क थगित कैले

गेल बहु सत्कार आदर सौँ सिंहासन बास देले
कुशल प्रश्न क रीति प्रमुदित मन परस्पर कथन कैले
बहुत दिन पर स्वजन संगम परम सुखमा समय मानू
शिष्ट क समागम सौँ सभा, तत्क्षणे उठिगेल जानू

कृष्ण संगहिँ जाय रैवत अर्जुनहिँ आवास देले
भृत्यगण सौँ युक्त रहबा हेतुएँ आदेश कैले
हो सतत सेवा उचित से सुचित भै सभ हरिष राखू
मम अभिन्न स्वरूप अर्जुन थिकथि ई हरि सबहुँ भाखू

प्रस्थ रैवत पार्थ पेबल वास भल मन मग्न मानू
जतय गिरि उपवन विनोद क वस्तु प्रस्तुत रहै जानू
फूल-फल सौँ भरल तरुगण मनहिँ मस्त विभोर लागै
भूमि झुकि झुकि भूमि चूमै देखि कै मन मोद जागै

गिरिवरक गरिमा क गौरव सन गुमानी ताहि मानी
उच्च शृङ्ग शतधिर्य कल साज सुरपति हेतु जानी
पंक्ति पंक्ति पदाति पादप राखु सभ सन सज्ज देखी
पल्वलो झरना सरोवर नद नदी परिखा परेखी

सतत निर्झर झरय झरझर नाद सुन्दर चित्त मोहै
ध्वनि तरंग अभङ्ग अम्बुधि श्रवण सुनि हग ताहि जोहै
चहुँ दिश सौँ बीचि बढ़ि बढ़ि गिरि-शिखर पर चढ़ै चाहै
पार्थ पाहुन स्वागत क हित पद पखारत मन उछाहै

देखि शैल नवीन घन सन श्याम सुन्दर छवि विराजै
पसरु पाकल पात पीयर जनु पिताम्बर ताहि छाजै
दिव्य वन-माला विराजित हरि दरस निश लौ लगाओल
मोक्ष सारूपे ई रैवत गिरि प्रगट फल तकर पाओल

ततय उपवन अति अनूपम निन्द्य नन्दन सहज जानी
प्रमद वनहु क सुभगता सौँ सुभग अतिशय मनहि मानी
कतै वालि क तुच्छ मधुवन खाण्डवो लघु कै बखानी
भुवन भरि मे एक उपवन येह अनुपम मोद-खानी

रत्नहिँ क बहु यत्न सौं भल लखित शोभा धाम धामे
स्फटिकहिँ क मण्डल अनूपम मध्य मे अतिशय ललामे
ऋतु कुसुम सौं वेष्टितो से लसित मांड़रि चन्द्र जानू
खग चकोरो चाह चित सौं भ्रमण कर तहँ भ्रमहुँ मानू

लस लता क वितान उत्तम कुञ्ज-पुञ्ज क भवन देखू
सरस सौरभ सँग समीरो पसरि रह अतिसुखद लेखू
सुमन-सेजो सजित सब खन थलहिँ थल अति सुखद राजै
गुञ्ज मधुकर मधुर धुनि सौं जनि मनोज क वीण बाजै

कतहु तहँ हिन्ताल तालो पुनि तमाल क लखिय माला
कतहु ललित लवङ्ग पुंगो नारिकेलि क तरु रसाला
कतहु विकसित पनस पादप पंक्ति पेखिअ दिव्य रूपे
कतहु आम अशोक अर्जुन अगरु अपरो अग अनूपे

कतहु तगर पलाश चम्पा जपा सेवन्ती विराजै
कतहु पाटल धवल पुष्पित सुरभि शोभा-सोम भ्राजै
कतहु केतकि कुन्द कुरवक कुसुम कुब्जक पुंज पुंजे
कतहु करवीर क कतारे केतकी कचनार कुंजे

कतहु बकुल बकुल वृन्दो कैं विलोकिअ ठाम ठामे
कतहु किंशुक फुल कदम्बो कर्णिकारो अति ललामे
कतहु कुसुमित नागकेसर मौलश्री सम्भार देखो
कुञ्ज-कुञ्जहिँ पुञ्ज पुञ्जहिँ गुञ्ज गुञ्जित मधुप पेखो

कतहु कलरव करय कोकिल कीर धीर चकोर बाजै
कतहु केका करै केकी तमकि तरु पर चढ़ि विराजै
कतहु क्रीड़ा करु कपोतो करय कौतुक कतेक जानू
कतहु क्रौञ्च क पंक्ति सब्बहिँ कमल कुञ्जहिँ भ्रमण ठानू

कतहु क्रीड़ा कर कुरंगो कतहुँ पंजर सिंह राजै
कतहु गैंड़ा औंड़ि कै चल बाघ बन्दी घर विराजै
बहुल वन पशु पक्षि पालित रहय कैं तकरा गनावै
देखि देखि चरित्र सबहिँ क चित्त अतिशय मोद पावै

बीच उपवन सरस रसमय सर क शोभा सुखद लागै
बनल चहुँ दिश धवल फटिक क सुभग सीढ़ी तहि तड़ागै
हंस सारस छौंह सँग सँग चलै शोभा दुगुन भ्राजै
कनकमय नौका विहार क हेतु प्रस्तुत ततय राजै

सजल क्रीड़ा-भवन मे कत कौतुकोचित वस्तु देखी
चित्र-शाला नृत्यशाला झूलन क गृह भिन्न पेखी
रहय सभ खन पुरा पहि थल मन विनोद क वस्तु माला
विधि विनिर्मित ऋतु नृपति हित थीक जनु शृङ्गार-शाला

पार्थ रैवत उपवनहि मे विचरि निज मन मोद मानथि
कृष्ण सौं सहमिलन अनुदिन पाबि कै कृत-कृत्य जानथि
दारुको रथ राखि सब खन साजि आज्ञा-निरत लेलथि
मन कुतूहल वशहिँ प्रातहिँ नगर शोभा टहलि देखथि

एक दिन अर्जुन नृप क वर वाटिका विचरय विचारल
भ्रमण-रत मन मत्त सौरभ क्रमहिँ से तेहि पथ सिधारल
लखल लतिका मालती तहँ रूप मेहराब क ललामे
माधवी क मचान कुसुमित कुञ्ज घन-घन ठाम ठामे

ततय बेली जुही बेला मल्लिका बन्धूक देखल
फुलल फूलक वाटिये सन वाटिका क गुलाब पेखल
सजल अनुपम ढंग सौं बहु रंगहिँ क कुसुमित कियारी
हरित भूपर चतुर माली रचल फूल क चित्रकारी

समय पुष्करिणी पराग सँ पूर्ण पुष्कर पार्थ पेखल
हरित द्रुमहिं मध्य राजत शुचि मराले सलिल देखल
राजकुल कामिनि क्रिड़ा-थल परम एकान्तहिं विराजै
सुनि ललित संगीत रुनुझुन नूपुरक झनकार बाजै

थूकि युवती वृन्द आगम कौतुकी निज चित्त भेला
संग संगहिं निविड़ कुञ्जहिं मे रभस वश पार्थ गेला
सखी संग उमंग अंगहिं सुभद्रा तेहि तीर पैसी
वसन भूषण राखि तट पर कौतुकहिं जल मे समैली

केलि कौतुक करय कामिनि मोलि नृपदुहिता क संगे
तहँ एकान्त नितान्त निखप वचन भापै अति उमंगे
कमल बन भद्रा नुकाइलि सखी गण जत तत निहारै
मुख कमल जल कमल मिलनहिं बिलग नहिं क्यो सकहु हारै

कहुकि वृक्ष कर सुभद्रा चकित चहुदिश सखी देखै
मारि डुबकी शीघ्र चलु जहँ रहथि तहँ से ताहि पेखै
कौतुकान्तहिं भेलि बाहर चीर पातर गात लागल
बुझि पड़ै वसनो हेरायल कौतुकहिं मे पार्थ मानल

कमल कर पद कमल दृग युग कमल कलिका उरज राजै
कमल सँ सरसे वदन छवि कान्ति कमलहु दिव्य भ्राजै
ठाढ़ि तट पर वदन पोछथि रूप अनुपम पार्थ पेखल
कमल वन सँ अपर कमला प्रगट ई निज मनहिं लेखल

पहिरि नील दुकूल भूषण सुमन संचय सबहुँ लागलि
निकुञ्जहि भरि भरि आँचरेँ चलु सबहुँ गृह पथ मोद मातलि
पावि अवसर पार्थ पँचसर सन निखरि छवि प्रगट भेले
शुभ समय मे प्रथम दर्शन परस्पर तेहि ठाम भेले

पार्थ पलक बिसारि रूप क उपवने सुभद्रा देखू
कोटि कोटि कलाधर क छवि क्षीन छाया सम परेखू
आन जे उपमा जगत मे ताहि तँ राखू फराके
देखल नहिँ यो इन्द्रभवनहुँ एहनि एको अपसरा कैँ

पार्थ रूप अनूप देखितहिं नयन भद्रा भेल पागल
श्रृङ्खला संकोच छन मे तोड़ि पुन पुन ततहिं भागल
लखि अपरिचित पुरुष सखि कह चलु उपवन भ्रमण त्यागू
विवश भद्रा लखि कहथिहिँ मन्द गति सँ चललि आगू

कोनहुँ विधि पार्थक शुभागम खबरि रनिवासहुँ पहुँचल
रैवतहिं मे रहथि ई सुनि देवकी कैँ नहिं पड़ै कल
बहुत दिन सँ छोड़ि घर से भ्रमणरत सुनि व्यग्र भेली
आन जन बुझि विपति निपतित त्वरित देखय युक्ति धेली

जौं परहुँ घर वास वर्जित तैं कि आवागमन त्यागथि
दोष की जौं भोजनो हित ओहो कहुखन एतै आवथि
हो परस्पर मिलन सभ सँ मोद मन मे हमहुँ मानी
अवश सम्बन्धी क हेतु क ई उचित कर्तव्य जानी

सपदि हरि हलधर बजाओलि कहु वचन ई नेह सानल
आनि अर्जुन कैँ अहाँ की रैवतक उपवनहिं राखल
अवश शोर अवश्य होयत बात ई जौं सुनि लेती
की कहब कुन्ती कहू तँ अनन ओ उपराग देती

इन्द्रप्रस्थ क हेतु ई सभ कुशल से जग के ने जानै
तैं कि त्यागब थीक उचितो भुवन भरि मे भवन आनै
समय संकट मे पड़ल जे दिवस कष्टहिं सँ बितावै
विपति कालहिं होय परिचय मित्र शत्रु क लखि स्वभावै

बात कहइ क सुनल हलधर उचित से मन मध्य मानू
जाय अपनहिँ अर्जुनो कैं आदरहिं आवास आनू
गेल रनिवासहुँ महासुख देवकी सत्कार कैले
पुछि कुशल पथ कष्ट सुनि कै मनहिँ अतिशय क्षोभ भेले

सत्यभामा आदि महिला लै सुभद्रा संग ऐली
सबहिँ अर्जुन सौं मिलन मे महा मोदित मनहिँ भेली
तहँ सुभद्रा देखितहिँ रुचि पुरुष उपवन परखि लेले
नाम सुनि गुणधाम गुनि कै हीतलहिँ अति हरष भेले

कथा कत कत भ्रमण काल क सुनि दुख सुख सबहुँ जानल
ततै अर्जुन भद्रिका हग रहइ क रूपे खेलि ठानल
गमन रैवत कैल अर्जुन देवकी कछु नम्र बाणी
आबि कै अइ करी भोजन पतहिँ हम सभ मोद मानी

भेल आवागमन अनुदिन पुछलि एक दिन सत्यभामा
कहु कोना पति पाँच सेवा द्रौपदी कर धन्य वामा
कहल अर्जुन नियम नारद कृत्य सन स्वीकार कैले
जकर दोपहिँ वरष बारह भ्रमण मे मम दिवस गेले

पाँच पति कैं एक तिय सौं की कतहु निर्वाह जानी
सत्यभामा कहलि हम तौं ई अवश अचलाह मानी
की कथन ककरा अपेक्षित प्राप्त आतुरता क भेने
अवश पड़ये कमहिँ कम सभ दण्डहिँ क पथ गेह गेने

से गृहो नहि गृहि क मानी जतय गृहणी-शून्य देखी
से ने पति-पद प्रेम-रत नित ताहि गृहिणी कैं ने लेखी
गृही गृहिणी गृहो दुखमय जगत मे ई के ने जाने
जतै कोरा मे किलकि सुत हँसि हँसिय ने मोद आनै

करौ गृहिणी सबहु निज निज जै गृही मे सुखी हैवे
स्वप्रतावश द्रौपदी गृह गमन जन्य ने दुःख दैवे
उचित बूझि विचारि दुखमय ताहि मे नहिँ आन बाकी
हो अवश दुखदायके जग मध्य भामिनि दुइ जाकी

पार्थ सुनि हँसि कहल जग मे भाग्य-फल बलवान जानू
विधि विधान विचित्र वसुधा अवश कै ई मनहिँ मानू
भोग्य वस्तु क ढेर ककरहु पड़ल व्यर्थ सन लखावै
जन्म भरि बहु यत्न कैनहुँ केओ भूखल दिन बितावै

विहुँसि सैन सुभद्रिका दिश मे देखओलि सत्यभामा
कहल धन रहितहुँ ने भोगथि आलसी कह दैव वामा
यत्न बिनु देखल कतहु कै रत्न पुहुमी सौं उघारै
क्षुधा शान्ति कि करय केहरि जौं ने थो करि-कुम्भ फारै

लखि सुभद्रा रूप अनुपम पार्थ मति गति एहन भेले
कुसुम कंटक बीच कैतकि प्रस्फुटित सन बूझि लेले
हग भ्रमर भ्रमि भ्रमि थकित पर यत्न आशा हृदय राखू
ततहि पुनु मन-मोदके सन मनहि मन ई वचन भाखू

की ने महि मे महिसुता सनि अपर सुन्दरि नारि देखी
की ने गौरि क गुन क गौरव गौरवित तिय आन लेखी
की समुद्र-सुता समाने आन तिय नहि दृष्टि आवै
भाग्य सौं तनिके सराही जै पहलि धनि घरनि पावै

सत्यभामा-वचन सुनि कै पार्थ कैं भद्रा निरेखलि
देखितहि उद्वेग नयन क बढ़ल मन गति आन लेखलि
लाज धारण करय हठ सौं कमहि कम भ्रम विफल जानू
मन तनय अभिलाष पूरक हेतु तत्पर भेल मानू

भामिनी सौं भरल भवनहुँ नयन - नयन क मिलन भेले
सैन - सैनहिँ मे परस्पर मुग्ध बैनहिँ कथन कैले
मन मिलान क सूचना मृदु - मृदु मुसुकि दुहू दुहू देले
मानु मन ओ सुधा - सिञ्चन बीज भेलाङ्कुरित कैले

चारि खंजन खेल सुगन्ध मुखकमल पर मोद लैले
रूप - रज्जु लकाय राखने मन पलक पट झाँप धै - धै
मक्रित चंचल लालसाहिँ पुनि-पुनि निकसि निज गति लखावै
रूप चखि चख - चसक छूट ने चरज मान ने ओतहि धावै

दुहू - दुहू कैं देख रहि - रहि धैर्य्य रवि जनु अस्त भेले
दर्शन क अभिलाष छितिजहिँ नेह नवशशि उदय लेले
लय उदय मध भाव सन्ध्या सन्धि अनुपम रूप देखी
प्रेम गति मति अति विचित्रे थिक अकथ हम येह लेखी

पार्थ रैवत गमन उद्यत सत्यभामा चिहुसि भाषू
कृष्ण कें सम्मिलन हेतु क नित्य आवागमन राखू
रहय रैवत मध्य एकसर बसि उदासँ दिन बितायब
एतय सभ लोक क मिलन सौं सहज सुख बहु अधस पायब

सभा रनिवास क उसरि गेल थी सभापति गमन कैने
सेलि सभ अलि काज मे रत निज निकेतन मध्य गेने
प्रेमिका प्रेमीक चितमे छुनहि कत अभिलाष जागू
साँझ दिन मे साँझ हेतु क तिय प्रगल्भा काश लागू

कतेक मनोरथ पार्थ कत-कत सत्यभामा कृत विचारे
भाव-भावित चित्त मोहित भावना - नदि बहि अपारे
छनहिँ प्रमुदित छनहिँ क्षोभित छनहिँ छुन अनमन लखावै
पथ गमन प्रस्तित करहिँ कहि वचन मन कें बुझावै

हाय ! हमरा भाग्य मे थिक की लिखल [illegible]
पाण्डवहि क बहुकष्टके थिक बहु - निर्वासन यथा मानी
कलह - रन रह नित्य त्यागित क जीवनें सुतवन बचानी
भाग्य सौं हम हारि जीवन कैं शक्ति-चित्र जगत मानी

श्री सुभद्रा जाय [illegible] मोद - भूला सुलय लागू
पार्थ रूप विलोकि अनुराग कोन तन उद्वेग जागू
उर ध्वनित झंकार अभिनव मन निरन्तर मधुर बाजै
प्रेम पंचम स्वर क आकुल - निरत निज सुधि नन [illegible]

कृष्ण कें एकान्त गृह मे सत्यभामा जाय [illegible]
कथा निज अभिलाष हृदयगत युक्ति सौं नहाहिँ सुनाओलि
बीर अर्जुन वर सुभद्रा हेतु जौं अहँ [illegible]
योग मणि काञ्चन करय मे कहु कियैक विलम्ब लावो

कहल हरि विहुँसैत अहँ यर दिव्य घटकैना करैछी
बीच मे बलभद्र बालक बला छुयि से ने जनैछी
शिष्य हेतु क नित्य दुनका पक्ष - पातहिँ मगन देखी
अहँ क सम्मति मानि भागी हम परागत मनहिँ लेखी

सुरपति क अभिमान अर्जुन वीरता सौं खण्डि देले
विश्व वीर क बीच बाजी जीति द्रौपदि आनि लेले
कौरवेश क बन्ध मोचल वीरता परतच्छ देखू
तखन कौरव - केतु कें कहु नौं कोना कै धीर लेखू

दुष्ट दुर्योधन अनीति क पंथहिं क सृष्टि सतत गामी
क्रूर कपटी कुटिलता सौं जगत अव मे विदित कामी
ताहि घर बसि कै सुभद्रा कहु कोना सुख सौं बितौती
शोकसागर मग्न रहि कै निशि - दिवस अति दुःख पौती

विश्वभरि मे ख्यात अर्जुन वीर छथि जन-जन क जानल
जन्मभरि मे जे ने कहियो घोर रण मे हारि मानल
करथ क्षत्राणी हृदय मे वीर क्षत्री वर क आशे
के अमोमल रत्न तजि कै काच लाभ क कर प्रयासे?

कहि एतेक पुनि कलपि कै कहु सत्यभामा विकल वाणी
की विधातर करथ चाहथि गति, सुभद्रा से ने जानी
भाइ-भानु क प्रभा स्थापित जगत मे जगमग लखावथि
राहु दुर्योधन लतै ई शशि सुभद्रा ग्रसन आवथि

कृष्ण हँसि कहु, छी घटक दुहु-दुहु वर हित यत्न कैने
युक्ति चातुरि सौं सफलता काजहिँक परिणाम भेने
की सुभद्रा सदन कौरव जाथ कतहिँ दिन वितौती
की जगत यश वलहिँ अर्जित अर्जुन क गृहिणी कहौती

विहुँसि कहलन्हि सत्यभामा, शक्तिहिँक प्राबल्य जानू
शक्तिहीन क पक्ष अवनत अछि प्रतच्छ विचारि मानू
सृष्टिहो क विधान विधि-कृत देखु ई अछि मात्र धैने
सफल साधन होअ सहजहिँ प्रकृति-पुरुष क संग भेने

अति रहस्य क जे कथा से दुहु रहस्यहिँ मध्य कैले
सत्यभामा सादरे भै काव्य साधन मार्ग धैले
जे प्रयत्न प्रद्युम्न रूप क ताहि मे नहिँ हो कोताही
करथि की कर्तव्य हलधर अवश से देखबा क चाही

सभा सम्पहिँ भरल मे पुनि रेवती-पति बात ठानू
थीकि क्षत्री कुलक कन्यादान अतिशय कठिन जानू
योग्य घर वर वय पराक्रम सबहुँ मे समतूल पाबी
जौं कतहु ई युक्ति सौं भेटि जाय तौं भाग्ये मनाबी

सकल नरपति जग क लखि कै हमहुँ तौं मन थैह लेली
एक दुर्योधन सकल गुणयुक्त मन नहिँ आन देखी
परिचितो बल-बुद्धि विद्या विभव सौं ओ छथि निहारे
तै सुभद्रा-हेतु ई वर-वरन हेतुक कह विचारे

कह केओ, श्री कृष्ण कैँ ई सम्मतो पुछबाक चाही
मद विभोरे देल उत्तर, ओ किछै करता मनाही
की केओ कुल शील-युत वर आन दोसर आनि देता
तखन एहि मे बाधकी भै व्यर्थ निज शिर अयश लेता

कुल परस्पर आब पहिलुक पलटि पुन ई जग लखाबी
पाबि कै सम्बन्ध बन्धन सोन मध्य सुगन्ध लाबी
ई कथा कैँ सुनि सभ जन हलधर क प्रस्ताव मानल
शिष्य दिश अछि अधिक आदर सबहुँ तौं मन मध्य आनल

कह हली, द्विज जाथु शीघ्रहिँ हस्तिनापुर नृपति-धामे
आबि दुर्योधन पुराबथु हमर ई अभिमत ललामे
ई कथा रनिवास पहुँचल सबहुँ तौं मन मोद मानू
श्री सुभद्रा सत्यभामा दुहु क चित नहिँ चैन जानू

शीघ्रतेँ द्विज कैँ पठाओल उपकरण लै राजधानी
नृपति कैँ द्वारीक द्वारा आगमो क सुनाउ वाणी
सुनि दुर्योधन यजाओल आदरहिँ सत्कार कैले
स्वस्थ बुझि कै नम्र भावहिँ कुशल प्रश्न क रीति धैले

कहु कुशल सौं गुरु हमर छथि, पुत्र कुशल सौं सभ समाजे
उदय भाग्य क भेल जे हम मन पड़लियैन्ह कोनहुँ ब्याजे
गुरु क अनुशासन पुराएब मुख्य हम कर्तव्य मानी
हैँ कहक थिक अवश शीघ्रे पूर्ति मे ने विलम्ब आनी

कहल द्विज प्रियजन कुशल सँ जगत गुरुजन कुशल मानथि
प्रभु क कौशल सौभिवल बलरामजो बहु विधि बखानथि
कार्यवश हमरा पठाओल विनय पूर्वक से सुनाबी
से कथा स्वीकार करतथ धाक ई मन मध्ये लाबी

भाइका वसुदेव - तनयर वहिनि बलराम क ललामे
युवक सबि छथि पैठ सुन्दरि दार बनिता रूप - धामे
जान विधाता मुदि मुक्ति शक्ति सौं पतिका बनाओल
जिनक चरम अभिव्यक्ति कौशल रचन त्रिभुवन कैं देखाओल

दार सुन्दरता समटि क अंग - अंगनि गठन कैले
नार सकलौ माधुरी मधुवचन रचनहिं मध्य देले
दार सबहिं हृदय निर्मित नम्रता प्रतिमूर्ति मानू
युगल क सुख - भोग हेतुक अपर लक्ष्मी प्रगट जानू

प्रकृत - मोहन अंगिक त्रिभुवन अद्भुत मन म विचारी
निखिलो विशेष नयनक युवक मन उन्माद कारी
पर - पुरुष जग जन कतहुँ कैं स्तम्भनो कारक अनूपे
जनु प्रकट प्रसन्नता जग प्रकटु मंगलमयि स्वरूपे

लोक - लोचन मीन हेतु क मीन - केतु क जाल रूपे
जन मनोरथ हेतु अभिनव कल्प लतिका छथि अनूपे
अंग संगम आधि - व्याधि क हित रसायन मन विचारी
अधि तपहिं सजीवनी मृतलोक प्रगटथि रूप नारी

नारि कृत गृह कार्य्य कुशला रूप विद्या जग कतेको
नृत्य गीतहुँ अति प्रवीणा कला कौशल सति कतेको
सिखलि सारथि कर्म हरि सौं उचित चलाबी क काजे
समय पाबि सहायिका हो कैकइ क सनि स्यांग साजे

सकल गुण आगरि - उजागरि योग्य वर कैं देत क चारो
मणि अनुपम शुद्ध स्वर्णक अंगुरीय क उद्भव न्यारो
जोडि जग नृप गृ क आगर नृ पाने कैं परेखल
इन्दु क संयोगो सुखद हो वदद सपहिं मोहि प्रबल

मुदित सुनि ई सम्मति क भिन श्रीह शकुनि कैं बजाओल
हलधर क सम्वाद द्विजमुख कहि सहर्षें ई सुनाओल
विधि क प्राप्त स्वर्ण अवसर अनुमानत हेतु जाओ
वहिनि - हेतहिं कृष्ण पार्थ क पक्ष लेति नित पक्ष आओ

कहल शकुनी भाग्यवान क भाग्य अतिका करत जात
काकताली न्याय तकहिं संग लाभल शुह गात
के कहत सम्बन्ध ई नहिं करो से शुभ फलद भाग्य
सँ करू स्वीकार सुनहिं ज्ञान - मान विचार त्याग

अहन शुभनाराम हेतु क बाल दयाराम एले
विप्रहित सम्मान मानिले जनु तनय उद्धरित कैले
पाबि आदर भोद मन सौं रैनि द्विज सुख सौं बिताओल
प्रात उत्तर हेतुएँ पुनु राजभवनहिं नृप बजाओल

भेल शकुनि क सम्मतो शुभ जानि विप्रहिं ई सुनाओल
गुरु क आज्ञा मानयै शिक कहि सपत स्वीकृति जनाओल
दिवस निर्णय जे सुनक अति ताहि दिन हम अवश आयब
पूरि अभिमत सहित आशिष संग अनुपम रतन पायब

लै विदा चललाह द्विज निज देश गमन क पंथ धैले
बाट चलइत मन कथारत चित्त मे कत तर्क कैले
बाप भाइ अछैत अपनहिं की विवाह क नियम कैलन्हि
बड़ उताहुल वर क रूपहिं देखि पड़ ई मार्ग धैलन्हि

जाय छित निज देश हलधर सौं अपन आगम जनाओल
पहुँचि कुशल समाद हर्षहिँ हुनक शुभ सम्मति सुनाओल
भेल प्रमुदित मन हली सुनि छुटल चिन्ता चित भारी
कर क थिक उद्योग परिणय तैँ अपन परिजन हँकारी

कहल हलधर नगर भरि मे सजओ सभ जन अपन धामे
थो सुभद्रा परिणय क हित कर'क थिक अति स्वच्छ ठामे
राज - भवन क भव्यता सौं जगत भरि मे अछि ललामे
तथपि सभ रचना तेहन हो जे जितै सुरराज - धामे

वज्रवाणी सुनि सुभद्रा तखने मन मलिन भेले
विषम - विष विषधर विषाद क अंगभरि मे पसरि गेले
पूर्णिमा शशि बदन सुन्दर सन्धि पीड़ा पड़िव भेने
प्रबल शोक विधुन्तुदे सन मूर्छे झट ग्रसन कैले

मन मनोरथ रथहिँ चढ़ि कै चाह जत - तत सतत धावै
विभव पति पद प्रेम पालव पथहिँ सञ्चरि मोद पावै
हलधर क वच कठिन कादव बीच मे फसि जाय जान्
विनु सहाय उपाय बैसथि तहँ सुभद्रा हारि मान्

पड़ल चित चिन्ता उदधि मे बहय बिनु आधार मास्
धीर तीर ने देखि पड़ने पीर हिय बढ़ दुगुन जान्
हाय ! ई बलहाय भलरत कह सुभद्रा कतय जायब
प्राणपति सुमिरन भँवर मे अवश हम प्राणो गमायब

भूरि भूषण भूख त्यागलि सुतलि भूतल तेजि सेजे
बरय तन अनवरत अतिशय विरह - अनल क प्रखर तेजे
हाय ! आब ने आश जीवन दुखहिँ की निज दिन बितायब
बुझी यमघर वास कयनहिँ कए सँ हम त्राण पायब

सतत सोच बेहाल व्याकुल चेतना च्युत भेलि भद्रा
मन अतन-वश तन क सुधि नहिँ नयन युग मे लागु तन्द्रा
सखि समोधिनि शोर कै कहु दौड़ भद्रा कैँ सम्हारू
हो अचेतो चेतना हित आँखि माथे पानि ढारू

सबहुँ सखि तहँ दौड़ि आयलि चेतना हित यत्न लागलि
केओ सरसिज दल डोलावय, केओ चानन रगड़ि आनलि
केओ सींचै जल गुलाब क नयन उन्मिलनै क आशे
आन - आन उपाय कत - कत करय रहि - रहि देख श्वासे

सुतलि भूमि करोट फेरइत गगन दिश दृग दैत देरी
शशि निरखि भद्रा क भति जल-हीन मीन क दशा हेरी
कहलि अति अकुलाय, हे सखि ! दौड़ि कै झट हार सूनू
ई सुधाकर थीक नहि किछु बात हमरो सबहु सूनू

कुल सुधाकर जे समुद्रज ताहि शंकर नाश कैले
कतरि ज्योति बनाय निज सुत नारि भूषण भाल देले
कैल जे विषपान केवल पात्र ई थिक सैह मानू
शेष जे विष कालिमा थिक दहन कर परतच्छु जानू

बहुत विषधर बसय सभ खन बमय विष आधिक्य भेने
सतत गरलहिँ भिजल तरुवर कहु कोना रह शैत्य धैने
ताहि चन्दन लेप सौं विरहिनि जरय ई जगत जाने
तदपि ई उपचार सभ मिलि कै रहइ की अध - ज्ञाने

की कमल दल दैँ डोलायह धै सुतायह ताहि सेजे
जल जनमि जलवास कै जल भावनहि जरि तपन तेजेँ
ताहिकैँ शीते प्रदायक भावना जौं मनहिँ मानह
सौं दहनहिँ क सजित सज्जा नीक बुझि मम हेतु आनह

कहु [illegible] सुभद्रा [illegible] किसें ई अहाँ मन की करै छी
[illegible] ई [illegible] होथ हम अभि[illegible] करै छी
व्याधि किछु जन मे [illegible] मे [illegible] सभ [illegible] मानू
[illegible] दुख मे [illegible] औषध करब ठिक [illegible] तुल्य जानू

[illegible] दिवाकर [illegible] बाधहि [illegible] कथ [illegible] मनहिँ लेखू
[illegible] शुल्य समान तन मन विकलता [illegible] देखू
हा! [illegible] श्याम घन पुनि नहिँ सुनी हम कोनहु ठामे
[illegible] विपरीत सम्प्रात समय उपगत हलो वामे

सुनि सत्यभामा ई दशा लखि सोच सौं कत विधि विचारथि
बुझि पड़ मनहुँ की कहैछथि बात बिनु अवसर उचारथि
ठिक [illegible] क रूप ई तैं यत्न किछु करबा क चाही
हरिप्रिया कैँ ई दशा झट जायकैं कहबाक चाही

[illegible] आबहुँ अति प्रेमाकुलि सत्यभामा [illegible] निभाक
[illegible] लघु गति सुभद्रा आतुरैं ई वच [illegible]
[illegible] तन [illegible] छवि सौं हीन भेने पहन मानी
[illegible] पर्वहिँ क तिथि त्रयोदशि [illegible] निशि शशि शेष जानी

सुनि [illegible] सत्यभामा भद्रिका भवनहिं सिधारलि
लखि दशा कत [illegible] मन कैं विहुँसि ई वचनो उचारलि
[illegible] व्याधि विशेष औषध [illegible] हम ई [illegible] जानी
सुदरशन अवसर विषम [illegible] उचित उपचार [illegible]

धीर धरु चित धीर कऽ सभ मनहिँ जनि किछु सोच आनी
युक्ति सौं साधन करब सुनु हम निदानो [illegible] जानी
हृदयरोगो थीक औषध अर्जुनो रैवतहिँ पाबी
[illegible] अकबाय कैं ई रोग तां निश्चय नशाबी

बिहुँसि सुजपट हटवितहिँ से कहु सुभद्रा! वचन सूनू
की समय सम्प्रात शुभमे अशुभ सन निज आँखि मूनू
फाल्गुनो संयोग अवसर सम्भवैं मन मोद मानू
हरार ई वक्तव्य अहँ जनु भ्रमहुँ मनमे वितथ जानू

कहि कहाँ भुज युग पसारलि कहि कहाँ दृग खोलि देखलन्हि
सत्यभामा हँसलि से लखि मनहि अति संकोच भेलन्हि
पाबि अवसर पुरत अभिमत विहुँसि से पुनि कहल बाणी
रोपि तरुवर यत्न सिंचित समय पौनहिँ फरय जानी

सत्यभामा पुनि कहलि चलु आइ शुभदिन सुयश मानू
पार्थ पाहुन हमर भेल छथि करय ठिक सनमान जानू
योजना साकार संगिनि भै अवश्य अहाँ निबाही
पैघ पाहुन हेतु पैघे योजना करबा क चाही

लै सुभद्रा संग हरषित भेलि ओ निज गेह गेली
नृपतिजा बुझि स्वर्ण अवसर दरशन क मन मुदित भेली
लाज आज पताल पैसलु मन उमाहने कोटि टारय
खोलि दृग बुझि प्राणपति मन पथँकैँ एक टक निहारय

बहुत यत्ने युक्ति सौं करु वस्तु आयोजन अनेको
बनल बहुविधि - भाँति - भाँति क पाक पकान्नो कतेको
चर्व्य चोष्यो लेह्य पेयो पृथक पात्र क पंक्ति देनू
षट रसक विन्यास अनुपम कतेक थारहिँ - थार देलू

पार्थ आगम श्रवण सुनि चलु स्वागत क हित सत्यभामा
दूर द्वारहिँ देखि हरषित सहित आदर आनु धामा
उचित जे सत्कार तेहिलन ताहि सबविधि पूर्ति कैलन्हि
देखिकै सौजन्य अर्जुनकैँ मनहिँ अति मोद भेलन्हि

अर्जुनागम बुझि सुभद्रा मन मधुर उद्वेग जागलि
घन क दर्शन सौं शिखी सन मोद सौं भयगेलि पागलि
सहटिकै वातायन क लग आबि एकटक लखै लागू
छनहिँ - छन पुलकायमानो भाव सँग अभिलाष जागू

सत्यभामा पद पखारलि लै सुवासित जलक झाड़ी
भोजन क विन्यास अनुपम सजल थार सचार भारी
कै समर्पित इष्ट देवहिँ पार्थ भोजन कृत्य लागू
कहथि उघली विश्रनि करलै सत्यभामा बैसि आगू

आचमन सुरभित सलिल सौं भोजनोत्तर से कराओलि
सज्ज भल पर्यङ्क ऊपर आदरहिँ सौं पार्थ लाउलि
शोर कै कहु पे सुभद्रा पान बीड़ा साजि आन
बड़ जनक सतकार करतब सविधि थिक ई मनहिँ मानू

झट सुभद्रा स्वर्ण पात्रहिँ पान बीड़ा साजि लेलन्हि
चललि पर पद थीर नहिँ पड़ कुचित सन मन मार्ग धेलन्हि
लालसा लाजो बढ़े हिय दुहू द्वन्द्वहिँ निरत लेखू
खंजरीटक गति छनहिँ - छन करि - वरक गति गमन देखू

उदित मुख शशि निरखि मानस अर्जुनक आतुर लखावै
हरि - प्रिया सौं कथा करितहुँ नयन रहि रहि ततहिँ धावै
वेग व्याकुलता छनहिँ छन संग लाय अनेक भावै
अंकमक अभिलाष उर्मी उठि विवश बुझि फेरि आवै

सहमेँ सुरसँ सुभद्रा कै नमित मुख तरै बैसी
देखितहिँ दृग पार्थ पुलकित मन हुलासहिँ सौं लजैली
पान पात्रक अर्पनहिँ सौं कर परसि कर कम्प भेले
सत्यभामा बिहुँसि कै निज करहिँ ओकर पकड़ि लेले

झटपार्थक करपर धारि कुमरिकर कहलि विनयबच सतभामा
उलहन आइँ देलहुँ से हम लैलहुँ पूरन कय रहु मन कामा
ई कुसुमित माला गहिअ कृपाला गुन अवगुन नहिमन आनू
सहजहिँ धन पावा नहिँ अनठावी अनठावी मन गुन मानू

तृषित दृग युग पिवय छवि मधु छनहु छुट ने छाँक
तन मनक सुधि बिसरि दुहू चित्र भेल अवाक
स्पर्श सौं कत भाव सहजहिँ उगय लय भै जाय
प्राण प्राणक मिलन सुख जे कहत के कवि गाय

पानि परसहिँ तन परस्पर पुलक प्रेमक पुंज जागल
प्राण प्राणक सम्मिलन सौं दूध खाँड स्वरूप लागल
दुहुक मोदक उत्स रोमक कूप सौं उच्छलित भेले
स्वेद स्वेदित कर परस्पर कर सुभद्रा ससरि गेले

सकुचि संकोचहिँ सुभद्रा सत्यभामा शरण लागू
बिसरि गेल गति गात तैँ नहिँ दै सकलि की डेग आगू ?
हरि प्रिया हँसि कहलि हटकै हमरको आँचर धरै छी
अनिक भेलहुँ तनिक लगमे किये नहिँ आश्रय करैछी ।

लाज लजाय कुमारि सिधारि तहाँधर दोसर मध्य पधारलि
से नै कोनो विधि मानस सौं मनमोहन मूरति रूप बिसारलि
काम कला प्रगटैत तहाँ कत लाजहिँ निन्द कहै हम हारल
पाओल पुण्यहिँ प्रेम प्रपा भरिछाक ने छाँकल ओ हटि टारल

कै विनोद ई सत्यभामा वचन अर्जुन कैँ सुनाओल
काक मुख मे पड़ल सन ई द्रव्य यतनहिँ सौं बचाओल
सुनि दुर्योधन पधारथि ताहि परिणय हेतु जानी
तैँ अधिक अगुताय ई धन अर्पणो हम कैल मानी

पार्थ कहु दुर्योधनक की दर्प जे ओपतै औता ?
छथि चिन्हारे अमहुँ अैने तकर फल परतच्छ पौता
केशरी वश पड़ल करिणी की करिन्द्रो कतहु पावै
व्यर्थ लालच मे पड़ैं तौं अवश ओ प्राणे गमावै

जखन गाण्डीव पर राखि शर
साधि कै खैंचि कर्णान्त हम युद्ध ठानी
लक्ष प्रतिपक्ष पर लक्ष्य नहिँ हो विफल
सहज अरिकुल कैं दलित जानी

वीर के पहन यदि विश्वमे जनिक
डर नाम सुनि हमर नहिँ त्रास मानै
जीति सुरराज जूझि बूझि पशुपति क बल
तुच्छ कुरु केतु तृण मनहिँ जानै

श्री कृष्ण क भेल आगमन अकस्मात तेहिठाम
सुनि बुझि हँसि कहु पार्थ सौं वचन गूढ़हित काम

दिवस क अवशेषैं चित्त चाञ्चल्य भेने
विधि वशहिँ जुराफा ओड़िओ जूटि गेने
हग दृग निज नीड़ैं आथ साकाङ्क्ष हैतै
बुझि पड़ए अदृश्ये मोलि कै उड़ि जैतै

अति गोपन सौं कत भेल कथा
ककरा कतवा कर्तव्य यथा
मिलि पाथल युक्ति क आल गरू
सुनि पार्थ विनय-युत बात करू

जीवन पथ पर भटकि रहल छी कहियो सौं नहि जानि
जैंच दृश-भ्रम भ्रम मन अनुखन छुटै सहज नहिं बानि

कर्माकर्म क निविड़ तिमिर मे ज्योति रूप भगवान
पथ क प्रदर्शन करिअ कृपाधन होए हमर कल्याण
ततमत मे अहँ किये पड़ल छी हरि कहु बात यथार्थ
पार्थ पार्थ छी अस्त्र क्रिया मे हरण क्रिया हम पार्थ

आगत समय मन्त्र दीक्षा तैं हमरहिँ सौं लिअ आउ
सहजहिँ सिद्धि प्रयोग प्राप्ति कै कृत-कृत्ये भै जाउ
लीलामय ! अद्भुत लीला अछि कहल पार्थ के जान
नीति कुतुक बल छनहि छनहिं मे कै दिअ आनक आन

बहुत कहब की हे करुणामय ! विनय करी बिनु व्याज
संकट विकट प्राप्त मे सभखन अहिंक हाथ मम लाज
विहुँसित हरि संगे पार्थ प्रस्थान कैले
अपन मन सुभद्रा संग संयोगि धैले

अनमन सन भेले रैवते ओ तिथारू
मदन मन मसोसैं ने दशा कै सुधारू

* * *

एकादश सर्ग

शुभद श्री हरि भामिनि भापु जे
तनिक ध्योंत कथा चित राखु से
मुदित हो हिय पार्थ क ओ तेना
बिसरि बाट लखाय केओ जेना

लखि विरोध सुप्रेम क बाट में
बढ़य क्रोध हलीक कुठाठ में
भसल नेहक वेगहिं मे जहाँ
मन कथा रत पार्थ कहू तहाँ

मिलन जे छुल नैनक नैन सौं
मन मिलु कहु सैनक बैन सौं
निशि दिवा बिसरै नहिँ रूप ओ
रतिक रूपहु सौं अपरूप ओ

जखन भेल प्रिया कर संग मैं
भसल चित्त मनोज तरंग मैं
भरल धाम करै कर सौं श्रद्धा
ससरि गेल हृदय दुख दै महा-

शरण आगत नारि क त्यागबो
धिक कलंक क लीक लगाएबो
हमहुँ पौरुष जौं ने लखाएबे
अवश कायर मध्य गनाएबे

सहज क्षत्रिक धर्म इ जानि कै
हरण कै रण कै तिय आनि कै
अपन बाहु बलें कर ब्याह जे
अति प्रशंसित हो जग माझ से

हरण काजहिं तैं मन लगाएबे
जतए औसर से हम पाएबे
भिड़थु यादव सैन्य जतेक जे
बुझथु अर्जुन शक्ति कतेक से"

करथि तर्क वितर्क अनेक ओ
रहथि युक्त विचारि कतेक ओ
मगन जैं शतरञ्ज क खेलि मे
पड़ल पात्र चलैक झमेलि मे

सुनि हलीक निदेश प्रमोद सौं
सब सजै निज गेह विनोद सौं
नगर नागर नारि विचारि कै
भुवि रचै नव स्वर्ग समारि कै

कतहु वाजन बाज अनेक जे
कए सकै गणना ने कतेक से
नट भरो नटुओक विनोद मे
मगन मान महा मन मोद मे

सुभद्रा हरण

नगर नागरि आगरि गान मे
मुदित मातलि सोहर तान मे
बहुत गायए गीत सोहाग जे
करए व्यक्त हृदय अनुराग से

बढ़ल कुतूहल हो रनिवास में
सभक चित्त हुलास विलास में
शुभ विवाह विधान अनेक जे
कर सोहागिन पूर्ति कतेक से

रूप सुता क सखी झुकि कान मे
बिहुसि कै कहु हर्ष क हास मे
"जखन कौरव केतु बिआहवे
तखन सिन्धु सुखे अवगाहवे

सुनि महादुख सौं मुँह टारि कै
रहलि कोर्बहिं ताहि निवारि कै
उठल शोक क वेग अपार जैं
बुझलि जीवन ओ जगभार तैं

पड़ल सोच क सिन्धु कुमारि से
सकल सौख्य क साध बिसारि से
कहलि रुक्मिणि सौं सखि जाए कै
पुछलि से तहँ तत्क्षण आए कै

"समय देखि विआह क ई अहाँ
दुख विषाद क रूप धरी कहाँ
स्वभ उमंग तरंग लखा वई
तलए रंगहि भंग जना वई

कहु कहु निज हीतल आब जे
अवश व्यक्त करू निज भाव से
यतन हेतु ने दुःख सुनायवे
तखन पाछु अहाँ पछतायवे"

सुनि कथा रहली चुप साधि ओ
सकुचि जीतलि योग समाधि ओ
हठ अनेक यशें हिय हारि कै
कहलि लाज - पटो तहँ टारि कै

"हमर जे गति से हम की कहू
सुनल भोगल पूर्वहुँ ई अहूँ
निज शरीरहिं जे रुज भोग जे
बुझय से दुःख सँ परशोक से

सदन कें महिमा हम कान कै
अपन तैं उत्सर्गल प्राण कैं
कयल दान कदापि न दान हो
नशल जीवन ई मन मान हो

जखन भाइक ओ हठ जाल मे
पड़ल चित्त अहाँ क बेहाल मे
रचल युक्ति विमुक्ति क जे अहूँ
कय कृपा हमरो किछु सौं कहू"

सुनि कुमारि क बात विधान कै
रहलि तर्कहिं सौं अनुमान कै
बुझलि रुक्मिणि भाव कथा क जे
अवस डूबथि कूप व्यथा क से

कहलि रुक्मिणि "बात बुझैत छी
हमहुँ भोगल कर्म्म कहैत छी
जखन आन उपाय ने जानले
विनय शम्भु प्रिया मन आनले

दुग्ध निया क व्रिया तुकि लेधि औ
सकल शोक हृदय नशि वेधि औ
पुजि अहाँ गिरिजा कह प्रार्थना
अचल पूरन होयत कामना

यदपि रैवत मे जगदम्ब जे
पुरथि काम सदा अविलम्ब से
अहिंक भाग्यहिँ पर्व महान औ
काल्हि तुलायल रैवत भान छो

हमहुँ साधन सोचि लगायवे
सुलभ रैवत जैँ अहुँ जायवे"
बहुत रूपहिँ देलन्हि सान्त्वना
चललि रुक्मिणि युक्ति क साधना

दिन बितैत सुलग्न तुलायले
दिवस उत्सव रैवत आयले
सबहुँ बात विचार जहाँ तहाँ
अवस देखब उत्सव ई महा

चलल साजि सिंगार कते तहाँ
गज रथादि पदाति गने कहाँ
जन क सिन्धु तरंगहि जाय ले
बुझिय रैवत देत डुबाय जे

बुझल अर्जुन औसर नीक जे
यतन युक्ति करी थिक ठीक तैँ
गमन देश क ब्याज जनायवे
सुलभतैँ फल इच्छित पायवे

नृप सभा महँ अर्जुन आबि कै
करु विनय शुभ औसर पाबि कै
"सुनु सुनू बलराम कहैत छी
अपन आर्ति कथा सुनबैत छी

अवधि अंत समय लग जानि कै
गमन बोह करी भल मानि कै
चल क काल करार रहै कहो
उचित थीक न आब पते रहो"

सुनि कथा बलराम उचारले
"उचित ई नहि पार्थ विचारले
परम उत्सव रैवत देखि ली
तखन तौं निज देश पथैं चली

सुनि धनञ्जय बात सुनाओले
जननि आर्ति कथा समुझाओले
उचित आबहुँ आग्रह नीक की
हमर बात विचारब थीक ई

बुझि पड़य गति ई निज राज मे
जननि सोदर संग समाज मे
अवधि राम क जैँ लगिचायले
अवध बासिक जी अकुलायले

कहल कृष्ण "सखे हम की कहू
मन कहै थोड़बो दिन तौं रहू
उचित जायब थीक स्वदेश कैँ
जननि सोदर जानि कलेश मे

अहँक हीतल दुःख जनैत छी
हमहुँ नेह वशेँ सुनवैत छी
सुनल भाइ क आग्रह जे अहाँ
तकर पालन मे क्षति की तहाँ

अछि कथा मम भाइक नीक जैँ
उचित उत्सव देखब थीक तैँ
मन बढ़ै उद्वेग विशेष जौं
तकर बीचहुँ जाइ स्वदेश तौं

रहत दारुक लै रथ मुक्त से
गमन जानि अहाँ क निमिष से
कहल दारुक कैँ बजबाय कै
रहब पार्थ निदेश पुराय कै

कहल अर्जुन आग्रह मानि कै
रहब प्रेम वशेँ लिय जानि कै
चलत काल क झंझट जे जतै
अवस पूर्ति करी एखने ततै

कहल राम "ने तैँ क्षति आनके
अहुँक आग्रह ई हम मानबे
गमन बेढ़ कथा समुझाय कै
लिय विदा रनिवासहुँ जाय कै

तखन से रनिवासहि आबि कै
कहु कथा तहँ औसर पाबि कै
"अवधि अंत स्वदेशहिँ जायबे
जननि हीतल कष्ट नशायबे"

हरि क माय कहू हरषाय कै
"अवश आश पुरू निज माय कै
बनहिँ मे बिछुड़ै सुत गाय जैँ
तत समै गति मानव माय कैँ

जगत मे सभिया गृहणी कहाँ
सुनल अद्भुत ई कथलौं अहाँ
तकर की फल हो बुझि लेल से
कत पराभव मे दिन गेल जे

सबहुं तैँ गृहणी पृथकी करू
रहबु एक क्रिया सभिया बरू
नहि नदी दुःख मे अवगाहबै
नियम नारिहुँ क निबाहबै

कहब बात अहाँ निज माय कैँ
रहलि मोहि किये बिसराय कैँ
एहनि नारि ने ई जग पाओले
अपन नैहर कैँ बिसराओले

एतय भेल अनेक कलेश जे
बिसरि दी सुनि ली उपदेश से
गृह रहो अपने सुकु थीक जैँ
घर क छिद्र उचारब नीक नैँ

हरि - प्रिया सुनि अर्जुन आयबे
सपदि दर्शन फेरि न पायबे
मिलन हेतु त्वरा तहँ धाओले
वचन चातुरि सौं समझाओले

"सखि क संग सनेस पठायबे
अवस रैवत मे अहँ पायबे
मम समर्पित कैं अपनायबे
सुभग मन्द विचार न लायबे

कहल पार्थ भला अहँ देव जे
अलभ लाभ मुदे हम लेथ जे
परम प्रेम क ओ उपहार कैं
सतत राखब हृद्गत हार कैं

चलल रैवत अर्जुन लै विदा
सबहुँ नोरहिँ विह्वल हो तदा
गिलि हली हरि कैल पयान ओ
कय मनोरथ पूर्ति क ध्यान ओ

हरि - प्रिया मन मे फरु चिन्तना
रहलि काज क कय रहि साधना
नृप - सुता भट दय बजवाय कै
कहु कथा सब गुत बुभाय कै

"छलिअ उत्सव रैवत से कहू
ततहि पूर्ति मनोरथ कै रहू
समय पावि न विस लजायबें
ततहि जे किछु पार्थ पुरयबे"

कहलि रुक्मिणि आलि बजाय कै
विहुँसि बाजलि बैन सुनाय कै
जगत नारि क ई गति जानबे
किछु दिने रह नैहर मानबे

अवण आब ई नैहर त्यागती
नहिँ बुभी कहिया पुनि आउती
यतन सुकिहु फूल फुलाय जे
त्रुटित भै जुट की तरुआय से

विनय बाहर मे फरु जाय कै
गुरुजने फहु ई समुभाय कै
हुनक सम्मति सौं हरषाय कै
नृपति जा लगु उत्सव जाय कै

सुनि सखी एक बाहर गेलि जे
नतहिँ राम विनय रत भेलि से
कहलि नम्रहिँ भावहु भाव कैं
रहलि आश लगाय जबाब कैं

कहल राम तहाँ मद रंग मे
'अवस जाथु सखी लय संग मे
जतय जे हुनका चित चाह हो
अवस तौं तकरो निरबाह हो'

सुनि निदेश सखी हरखाय कै
हरि - प्रिया दुहु कैं कहु आय कै
नृप दुलारि क साज सिंगार मे
निरत भै गेलि से अनुराग मे

रचु सिंगार सोहाग सिनेह सौं
चिकुर चारु समारु सिनेह सौं
रहलि आनन सौं कच टारि कै
शशि प्रभा प्रगट्ट घन फारि कै

वदन कै उपमा शशि देत कै
जगत मे अयशे बड़ लेत कै
घटि बढ़े शशि दूषित कालिमा
मुख क नित्य कला बढ़ लालिमा

सरसिजो क समान ने नीक ई
मुकुर सौं उपमा नहि ठीक ई
टुटत नालहिँ मौलि कुरूप हो
तखन कै कह ताहि स्वरूप हो

पुनि अहां यदि युक्ति जनायबे
मुकुर आनि समच्छ धरायबे
नयन जे छवि से दरशाओते
तहु तौं प्रतिबिम्ब कहाओते

विधिक मौलिकता क विधान ई
कुशलता पटुता क प्रमाण ई
रचल आनन ई श्रम कै कही
वनय आनन शान क ई सही

सजल आनन सिन्दुर बिन्दु सौं
निरखि मानिअ अद्भुत इन्दु तौं
धसि समुद्रहिँ धोय कलंक कैँ
प्रगटु मंगल कैँ गहि अंक मे

सुभद्रा हरण

नयन रूप अनूप प्रभाव जे
हरिण खञ्जन कंज कि पाव से
रचु विरंचि विशेष विधान सौं
नयन कै उपमा नहि आन सौं

जखन अंजन रंजित भेल ओ
मदन बाणहु कैँ टपि गेल ओ
बिनु कमान चढ़ौनहिँ भंग सौं
धस युवा-हिय मध्य कुढंग सौं

सजित सीपज भूषण भाल जे
लसय पंक्ति क पंक्ति विशाल जे
चिकुर राहु डरैं मुख इन्दु की
सजल सैन्य नक्षत्र क वृन्द ई

तिल प्रसूनहु कैँ चित चाह ई
रह तुणीरहु हीथ उछाह ई
हमहु नाक रखै, नथ भूलि कै
कर मना कहु ई नहि भूलि कै

मधुरता मृदुता मधु दाख सौं
बहल लाल प्रवालहुँ लाख सौं
अधर पीयुष सौं बढ़ि कै सही
निरुपमा भुवि मे अधरो कही

श्रवनि मौलिक चित्त गुमान जे
मनहि मानय कान समान से
कतय पाथधि ओ सुकुमारता
ललित लालिमहु क समानता

श्रुति विभूषित ने श्रुति फूल सौं
जनु गुरु कवि कानक मूल सौं
अपन शिष्य गुणावलि गाबि कै
तनिक छोड़ वधू कहु आवि कै

भुज विलोकि मने अनुमान हो
कनक वल्लरिए धिक मान हो
दुहु विभूषित भूषण भेल जे
सुमन भारहि की छवि भेल तैं

अरुण डोरहिं मोति क हार जे
मिलल भारति जाह्नवि धार से
तहँ रमावलि संगम भानुजा
रसिक हेतु प्रयाग सुकामदा

कसल कंचुकि मे कुच देखि कै
कवि विचारथि ई मन लेखि कै
मदन मोहन अस्त्र चोराय ई
जग जिते हित राखु लुकाय की

उरध पुण्ड रमावलि कै भने
त्रिवलि देलि त्रिपुण्ड्र कुचन्दने
जग - वशी - कर आगम योग ई
युवक मोहन यन्त्र प्रयोग की

जखन दीठहिं पीठ निहारले
लसित वेणि विलोकि विचारले
युग भुजङ्गिनि भ्र॰ भुतिआय जैं
विकल तैं अहि लाकय आए तैं

पृथु नितम्ब उरोज क पीनता
निरखि बीचहि मे कटि छीनता
विधि विधानहिं दोष विचारि कै
रहलि किंकिणि थाम्हि सुधारि कै

उनटि रम्भ क थम्भ लगाउ जैं
उरध अंग तहाँ निरमाउ जैं
विधि अविश कहै नहिं जानि कै
पटहिं आपति तैं धनि आनि कै

अरुणता चरणौ क प्रशंसिता
परम कोमलता कमनीयता
गमन - भूमि कठोरहिं फाटने
अहह शोणित सौं पथ पाटने

सनख आंगुलि उत्तम देखि कै
अपन हीन दशा मन लेखि कै
करय क्रन्दन चम्पक कोर ई
दरय ओस कणे नित भोर की

गति करीन्द्र मराल हराय जैं
भल इनाम कही धनि पाउ तैं
सुभग नूपुर पैरहि छाज से
युवक मोहन हेतुहिं बाज जे

कुसुम रंग पटोर पहीरि कै
हरित कंचुकि साजि शरीर कैं
चललि सुन्दरि ओ बढ़ि सीढ़िका
रह संगी संग मे कत सेविका

तबहुँ रैवत मे पहुँचू जहाँ
मुदित राजकुमारि कहु तहाँ
प्रथम कै लिअ गौरि क पूजने
तखन उत्सव देखु सुदे मने

कुसुम कुंकुम साजि समारि ओ
दहिन हाथहिँ चामर धारि ओ
चललि चानन दीपक धूप धै
अपर हाथहिँ थार अनूप लै

कत नवेद्य निवेदन भार लै
पुरत आशुहिँ आश विचारि कै
नृप - सुता पगु मन्दिर धारि कै
सविधि पूजय शैलकुमारि कै

पुनि पदाम्बुज प्रेम लगाय कै
मनहिँ भक्ति क भाव बढ़ाय कै
दुख क वेगहिँ ध्यान लगाउ से
विनय दीनहिँ बैन सुनाउ से

"सुनु सुनू ! गिरिजा जगदम्बिके
थिकहुँ तीनहुँ लोक क अम्बिके
तखन संतति जे जग मे जतै
दुखित भै कहु आयत से कतै ?

सकल मंगल मोदप्रदायिनी
दुरितहारिणि दीन - दयालिनी
थिकहुँ जै जन-आर्ति-विनाशिनी
हम गही पद-पद्म कृपालिनी

हृदय - पंकज वासिनि छी जहाँ
रहथि शंकर संगहि मे जहाँ
यदपि हृद्गत दुःख जनैत छी
तदपि आकुलतेँ सुनबैत छी

अहँहुँ शंकर कैँ पति मानि कै
हरि अनादर चित्तहिँ ठानि कै
प्रण छदै क न कोटिहुँ टारले
शिव सिनेहहिँ प्रेम निबाहले

जग कुमारि विचारि समस्त से
गहल मारग कैल प्रशस्त जे
धरु जनैक क्रिया परमान कै
जगत मान शुभे अनुमान कै

हमहुँ ताहि पथेँ पद धैल जेँ
हियहिँ अर्जुन कैँ पति कैल तैँ
हठ हली क अजेय विज्ञानि कै
पड़ल छी अति कष्टहि आनि कै

विपित - ग्रस्त विनय सुनबैत छी
करिय आर्त क त्राण कहैत छी
हम हृदय बिच जे प्रण कैल से
पुरु मनोरथ से मम शैलजे !

कहब की बहुतो अपने कथा
विकलतेँ बुझि ली हमरो व्यथा
दुख बुझै अनको चित लाय कै
जकर पैरहि फाट बेवाय से

इन्द्रपति राखि यशी जग छी महा
हमर की पति राखब मे अहाँ
अवश जौं एहि मे अनठायब
सुयश चन्द्र कलंक लगायब

सुनिय मा ! मम अन्तिम बात ई
अछि समर्पित पार्थहिँ गात ई
कथित जौं नहिँ ओ वर पायब
अवश कै हम प्राण गमायब

विनय ई नत मस्तक कैलि ओ
हृदय मे गिरिजा - छवि धैलि ओ
मगन ध्यानहिँ मे विसवास ई
अवश पूरत जे अछि आश ई

पुजि विसर्जन कै उठि गेलि से
मनहिँ मे किछु धैरज धैलि से
बहय नीर क वेगहिँ मे जहाँ
तखहुँ आश्रय आश करै तहाँ

जखनि मन्दिर सौं नृप - बालिका
गमन सौं जिति लेलि मरालिका
निकसि अर्जुन कैँ तहँ देखले
सगुन मान मने शुभ लेखले

नयन दूत समाद पठाय कै
चलल पार्थ तहाँ ; अगुताय कै
प्रगटि राज - सुता निज भाव ई
चल मनु उत्सव आब ई

जखन उत्सव मे पशु धारले
सतय भीड़ विशेष निहारले
कर कोलाहल शोर जहाँ तहाँ
सबहिँ मोदहिँ मग्न रहै सदा

बहुत शोभ दोकान कतार मे
विविध वस्तु विकाय बजार मे
सतत ग्राहक भीड़ फिरै जतै
सुलभ मूल्य क ध्यानहि मे ततै

पृथक हाथि क हाट रहै जहाँ
गरजि कै घन शब्द करै तहाँ
बहुत वाजि बिराजु बजार मे
कतेक ग्राहक बीछि हजार मे

सुभग गोधन हाट क की कहू
कृषक लोचन लोभित भै रहू
कतहु पक्षि क पुंज बिकाय जे
बहुत कीनि रहै हरषाय से

बहुत गायक गाबय गीत कैँ
षडज पंचम मध्यम रीत मे
कर निषाद अगाध प्रवीणतेँ
कतहु दोष न हो गतिहीनतेँ

सुखद भैरव श्री तहँ कौशिको
मल हिंडोल धनो पुनि दीपको
सरस सुन्दर शब्दहि गाब जे
अमर गायक मान लजाय जै

मुरज बीण रबाब मृदङ्ग ओ
डफ सितार बजै मुरचङ्ग ओ
पुनि तमूर पखावज बाज जे
भल सभा सुषमा तहँ छाज जे

ततय ताल क भेद अनेक सँ
प्रगट वाद्यहि बाज कतेक से
परत तारक तार मिलान सौं
मनहिँ मोद महा सुनि कान सौं

चतुर नर्तक नृत्य कला क जे
अथच वाक् - पटुता विपटा क जे
रचय कीर्तन हास विनोद मे
मतल लोक - समूह प्रमोद मे

कतहु खेलय नाटक - नाटिका
प्रहसनो कत कै अरजै टका
ततय लोक क भीड़ अपार जे
कहि सकै गनि यत्न हजार के?

मगन नारि मनो कत गान मे
कतहु आगतहो क मिलान मे
कतहु ताकय छूटल लोक कैँ
केओ कानि रहै तेहि शोक मे

कतहु कानय बालक बालिका
जकर भीड़हिँ छूटल पालिका
रहथि रक्षक वृन्द अनेक जे
छुटल ताकि मिलाब कतेक से

सकल उत्सव ठाम विलोकि कै
ततय पार्थहुँ कैँ अवलोकि कै
हस हसौँ, कुछु बात चलाय कै
चलति राज - सुता हरषाय कै

लखि पथारूढ़ राजकुमारि कैँ
हरण औसर पार्थ विचारि कैँ
हरिप्रिया क कथाक सुमर्म ओ
कुशल सोचि कहै करि कर्म ओ

पाबि अवसर काज साधिय त्यागि कै भय लाज
ताहि मे न विलम्ब लागी थीक चतुरक काज
समय वेग मे तारतम्यक मध्य मे बिति जाय
मन मसोसहिँ मरल माखी छनहि छन पछुताय

पार्थ दारुक कैँ कहल, अहँ साजि रथ कैँ लाउ
चलय चाहि छन आर्तिवश हम जनु विलम्ब लगाउ
साजि रथ पहुँचैत अर्जुन चढ़ल अस्त्र सजाय
चलल रथ पथ वायु वेगहिँ वाजि गण हिँहिआय

जाय पहुँचल ताहि पथ मे जहँ सुभद्रा जाथि
सोच मे चित पड़ल अनुखन मनहि मन पछताथि
देखि रथ पथ त्यागि सहमित रुकलि ओ सुकुमारि
रोकु रथ, कहु विहुँसि अर्जुन वचन राजदुलारि

सुनु समीप पधारि सुभद्रिके
हरिप्रिया कहबा हित बात जे
अति रहस्य कथा अछि तैँ कही
करु सखी मन कान दिओ सही

से सुनि एसकरि बोली रथ लगिचाय
विनु समीप मे ऐते कहल कि जाय
कह अर्जुन रथ ऊपर छन भरि आउ
सुनि सम्वाद अहाँ पुनि फिरि चल जाउ

सुनि, सखी दिस देखि रहू
आलि-गणो बुझि ताहि कहू
जे अछि गुप्त समाद यथा
जाउ सखी सुनि आउ कथा

तखन रथ पर चढ़लि भद्रा बैसु तहँ सकुचाय,
पाबि बिसरल वस्तु सन दुहु रहथि मन हरषाय
पार्थ कहु रथ हाँकु शीघ्रहिं इन्द्रप्रस्थ क हेतु
आबि घेर ने हरण भद्रा जानि यादव-केतु

दारुको सुनाउ बात नम्रतैं विनीत सौं
सारथित्व आब ई विरुद्ध थीक नीति सौं
यादवीक हम संगरी क होइ सारथी
दोष देब पाछते क्षमा करू महारथी

पार्थ दै ललकार भाषल, शीघ्र रथ कैं हाँकु,
इन्द्रप्रस्थक पंथ मे चलि द्वारका अनु ताकु
दारुको कह, करब नहिं हम कुल-कलंकक काज
पार्थ एहि सौं उचित थिक जे अहं आबी बाज

दास यादव-कुलक अन्नहिं पोसलक तन जान
भद्रिका कुल-धिया हरि यदि कहब हाँकु यान
तौं चलब पुनु द्वारके दिश कहौ शुद्धे बात
हम कृतघ्नक काज करब ने राखि जीवन गात

क्रोध सौं तपि पार्थ दारुक हाथ दुहुँ गहि लेल
आनि कै एक भाग रथ मे बान्हि दृढ़ कै देल
लेल चाबुक बाग निज कर आशु बैसल आय
दै दपट हय हाँकु द्रुत गति बहुत से अगुताय

दपट सुनि झटपट चढ़ल टपटप टाप उठाय
रपट झपट सरपट तुरग सकट सहित चल जाय

कलगीं उठौने, कान तानि उच कैने, नैन
क्रोधहिं चढ़ौने, स्वच्छ पुच्छ उचकाय से
ग्रिवा गोरवे लखौने चालि बलिगनो बढ़ौने
धर पीठ गहिरौने उमग बुझाय से
गति बागहीं क धैने भूरि भूषणो बझौने
शोर हेषा सुनौने जोर जोशो जनाय से
भूमि टाप टकरौने धूम धूरा कै उड़ौने
बाजी वायु सौं लगौने बाजि वेग धाय से

उठल हाहाकार रैवत मचल बहुतो शोर
दिनदेखारहिं देलक डाका पार्थ डाकू चोर
बिजुलि गति ई बात ततछन पसर चहुदिश घोर
केओ दौड़ल द्वारका दिश, केओ अर्जुन ओर

पार्थ! पार्थ!! पुकार पुनि केओ दारुके ललकार
केओ कह सुनु सुनु सुभद्रा! चिकरि बारंबार
केओ कानय केओ बाजय केओ रह मन-मारि
सखी द्रुत गति नगर दिश चलु निज प्रयत्नहिं हारि

मधुशाला मे मदपक गोष्ठी बलरामक छल वेश
मधुक मधुक मद्दुकी फल-फूलक आसव सजल विशेष
निरत पान मे शान चढ़ल चित बढ़ल चारु चष लाल
हास विनोद क्रोध कोलाहल करथिहँ सबहुँ बेहाल

कतहुँ पिउल मद्दु ही मद ढरकल कतहुँ भरल कत बेरि
चपक चष क चसको नहिँ छूटय अधर धरय कय बेरि
ककरहुँ दखारि मोर मन आनथि ककरहु कर अपमान
धयौ मदमस्त दबल बलगन मे धयौ सूतल हत ज्ञान

दौड़ि आलि आबि कानि कानि ई सुनाओले
पार्थ के प्रपंच हाय! भद्रिका उड़ाओले
भेल सर्वं यत्न व्यर्थ युक्ति शीघ्र से करू
जाय ने पड़ाय दूर चोर केँ धरू धरू

सुनि अध पिउले पियाली पटकि भू पर देल
क्रोध मद मिलि दुहुक लाली 'राम-चष गाढ़ि गेल
कहल, सूतल सिंहहिँक जनु मोचलक आङ्गु मात
यत्न सौँ पोसल बिड़ालक थोक ई उतपात

हलधर कर हर-मुसर लै तमकि सभा गृह जाय
यादव दल जत सबहिँ कौं लेलन्हि तुरत बजाय
लेलन्हि तुरत बजाय कहल भेल अजगुत बाते
तीन पाण्डु कुल जात आबि कैलक उतपाते
कुल कलंक विष चढ़ै, डसल ई पोसल विषधर
करव नाश अरि उरग गरुड़ रूपहिँ हम हलधर

को कायर मोहि भूमि बहिनि केँ हरणो कैलक
अनितहुँ तक्षक क्रोध फानि फन तकरे धैलक
अखन धारि हम अस्त्र शस्त्र संग्रामहिँ जायब
अरिजन परिजन सबहिँ मारि महिमध्य सुतायब
वीर पिछुने करब हम शोणित सौँ पाटल मही
बूझत बल बलभद्रहुँक जग जन ई प्रण कै कही

हारि देब अपन प्रभुत्वहोक पाशा आब
गोट गोट गोटी विश्व चौरक सँहारि देब
मारि देब अस्त्र शस्त्र शत्रुक समूह पर
रुण्ड-मुण्ड झुण्ड-झुण्ड भूतल पसारि देब
धारि कै नृसिंह रूप पकड़ि पछाड़ि भट
उदर वृकोदरक नख सौँ विदारि देब
मारि देब अर्जुन, उजारि देब इन्द्रप्रस्थ
बाहनि उघारि कै कलंक कुल टारि देब

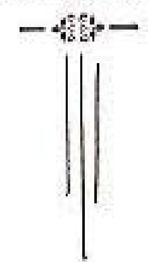
सेनाध्यक्षो प्रद्युम्ने रहथु पहि सभै संग लै कै उपेशो
जे जे योद्धा विशेषो सभ जन मिलि कै जाथु से युद्ध देशो
मारू मारू अवश्ये सबहुँ अरिजने, बात ई मोर मानू
राखू रक्षो वंश लज्जा अपन भुज बलेँ भद्रिका छीनि आनू

पड़ल डंका चोट युद्धक बजल तुरही शंख
सैन्य बान्हि कतार तत्क्षन पहुँचि गेल असंख
निज प्रभुत्वक करय ज्ञापन सबहुँ अस्त्र उठाय
चलू सत्वर धरू तस्कर जै ने जाय पड़ाय

हलचल पड़ल सकल लश्कर दल
झटपट बखतर सज रण पर चल
लरकस कस दय धुय भय नय शर
धर धर तसकर कह जय जय हर

गन ने सैन्य जे सजि चलै रण मद सौं उनमत्त
पड़ै पैर नहिँ थीर महि क्रोधहिँ रद्द चित तत्त
तत्त तमकि पद्दल दलितहिँ मेदिनि दलकत
धधधधमकत युद्धधुनि सुनि कच्छप छपकत
गज्जो गरज दिग्गज्जो लरज सुपर्थो भय मन
रज्जहिँ सुभक न पंथो सुभक न जुम्भन के मन

श्रीकृष्णक चरचो उतै क्रोधहि सबहुँ बिसारि
रहु मांतल मति थीर नहिँ सुभि चसु अनत मुरारि



द्वादश सर्ग

श्री मुकुन्द सौँ विचार कैँ बिसाद ओश मे
क्रोध-सर्प ग्रस्त चित्त की रहैछ होश मे
ध्यान दीप कैँ मिझाय दैछ वेग वात ओ
राग द्वेष मे ने कै सकैछ दृष्टिपात ओ

यादवीक सैन्य रूप मेल ताहि काल मे
चाल चालको पखान वीरता वेहाल मे
धऽर धऽर मार मार पाण्डु - पुत्र चोर कैँ
शीघ्र चऽल बान्हि लाउ दुष्ट वंश - चोर कैँ

सात्यकी ओ साम्ब सारणो गदो जतेक जे
दौड़ि गेल आन आन वीर ओ कतेक से
सज्ज अस्त्र - शस्त्र सौँ करैत वीर बात कैँ
काम छोड़बाह बीर कैल दृष्टि-पात कैँ

देल से निदेश शीघ्रता करू चलू अहाँ
दौड़ पाण्डु पुत्र कैँ धरू धरू भेटै जहाँ
चोर दण्डनीय जानि ताहि बान्हि लायबे
बात कोन चित्र जे सुभद्रिका छोड़ायबे

सु
भ
द्रा

ह
र
ण

बाज बाजलो जुकाउ ढोल ढाक शंख ओ
दौड़ बाजि पुञ्ज पुनि मत्त जे मतङ्गजो
धूर उड़ पंथ मे छुबैत से अकाश कें
झाँपि देल सूर्य्यहुँ क तीव्र ओ प्रकाश कें

मुख्य-मुख्य दौड़ि कै सिपाह भट्ट भट्ट मे
धार क कटार कें पधार भट्ट भट्ट से
अस्त्र-शस्त्रहुँक शब्द होअ फट्ट फट्ट जे
बाज धापकैं धरीअ चोर भट्ट पट्ट से

धार आप घोड़शाह पार्थ कें पुकारले
क्षत्र-वंश-जात चोर चोरि कें पड़ायल
विश्व वीरता बखान येह क्षुद्र कर्म सौं
कोटि कोटि धिक तोहि हीन क्षात्र धर्म सौं

कायरैक रूप सौं पड़ायतैं कि जाइतैं
पीठ शत्रु दीश दैत मे ने की लजाइतैं
औं रहीक वीर बनौं सुनि ले ई बात तों
घूरि हो प्रवृत्त युद्ध क्षात्र-वृन्द आन जौं

पार्थ आँखि लाल लाल भेल सुनि गारि कैं
चट्ट यान कैं घुमाउ सैन्य कें निहारि कें
क्रोध-अग्नि आहुते समान बात बाज तैं
के कोना सहै भला रखैत वंश लाज कैं

जे बली बली विशेष विश्व वीर मानले
आइ पार्थ संग से समस्त युद्ध ठानले
घोर वीरताक द्वन्द्व ई विलोकि लोक मे
२- [illegible] नाहि [illegible] चोर झाँपि देन से

फेरि ताकि यान सौं निहारि लेल सैन्य कैं
देखि तुच्छताक बोध भेल पार्थ नैन कैं
साम्ब सात्यकी गदो सशस्त्र आगु देखि कैं
बाजि कै सुनाउ ताहि पार्थ ई विशेष कैं

बालकैक मुख्य ठान पार्थ संग युद्ध ई
बूझि लीअ यादवीक भेल भ्रष्ट बुद्धि की
सिंह सावधान कैं शृगाल की पछाड़ते
मूस मारि कोड़ि की पहाड़ कैं उखाड़ते

जाउ जाउ फेरि जाउ नीक ई कहैत छी
बाल वैस जोश मे कुबाट की गहैत छी
धीक ने विचार युद्ध येव संग छोट कैं
टूट की पहाड़ पाबि वारि बुन्द चोट कैं

सुनि साम्ब क्रोध युक्त आँखि कैं चढ़ाय कै
वीरतैं चढ़ाय देल बाजि आगु आय कै
उत्तरो कहैक धीक सैह चित्त लाय कै
गीरबैक बात देल पार्थ कें सुनाय कै

वीरताक बाँट मे युवैक भाग भेल की
वृद्ध बाल ताहि सौं विचारि बारि देल की
वृद्ध जाम्बवान वीर जंग मे देखाउ ने
बालकैं पिता पहाड़ आँगुरे उठाउ ने

पार्थ आपु छी सेना बुझी ने विश्व रीति जे
हो समान मे समान-युद्ध-शास्त्र-नीति से
वैस मे समानता अहाँक बाप सौं रहै
दूध मूँह बाल सौं लड़ैत लोक की कहै

सु
भ
द्रा

ह
र
ण

फेरि भाउ फेरि जाउ व्यर्थ कष्ट कैल ई
प्रीति पंथ पार्थ संग भद्रिकाक थैल ई
थीक क्षात्र धर्म्म रीति देखि ली जहाँ तहाँ
व्यर्थ रारि ने करी विचारवान छी अहाँ

साम्ब भाउ, पार्थ ! व्यर्थ बात की छुटैत छी
की क्षमे रथो चढ़ाय कैँ भला ठकैत छी
ओ नेना ने साम्ब कैँ अहाँ मने लगायबे
जे मिठाइ मूँह लै स्वकाम कैँ छेदायबे

व्यर्थ वाक्युद्ध आब बाण-युद्ध कैँ कर
की उचीत जानि कै सुभद्रिकै हिअऽ धरू
जाहि सौँ अवश्य युद्ध-अग्नि शान्ति आनबे
पूर्व प्रीति रीति पालनीय थीक मानबे

पार्थ भाउ, भद्रिका फिराय आब लेत कै
भोर दर्प-दीप मे पतंग व्यर्थ हैत कै
दर्प आय कालहक काल कैने आनबे
पार्थ हाथ सौँ फिराय नारि-रत्न आनबे

साम्ब भाउ पार्थ नाम विश्व बीच बाज ऐ
द्वारिका पधारि कैल तस्करैक काज से
चोरि कै सुभद्रिका बखान वीरता करी
चूडिअऽढि पानि मे ने डूबि कै किये मरी

पार्थ भाउ बाप श्वसुर जानि ने लजैत छी
स्वीय वंश दोष झाँपि ओर सौँ बजैत छी
बालकैक बुद्धि थीक जानि कै हटैत छी
चोर-पूत साधु रूप बात की छुटैत छी

सुनि साम्ब क्रोध रक्त भेल युद्ध ठानलौ
खैंचि के कमान बान कान मूल आनलौ
चट्ट चट्ट एक दुइ तीन चारि बाण कैँ
एक संग से प्रहारु पार्थ लक्ष्य ध्यान कै

अस्त्र शस्त्र विज्ञता अनेक साम्ब पाउ से
एक एक कै प्रहार पौरुषी जनाउ से
पार्थ बे-परिश्रमे क्रमे निवारि देल ओ
श्रान्त क्रोध सौँ नितान्त क्लान्त चित्त भेल ओ

देखि साम्ब श्रान्त क्षोभ क्रोध बाढ़ सैन मे
कै घर्ड़ङ आय से निहारु नैन नैन मे
ताहि काल रोष सौँ गदे गदा घुमाय कै
कैल जे प्रहार देल पार्थ से नशाय कै

क्षोभ विह्वलो गदो शरासनो चढ़ाय कै
चोख चोख बाण ताकि शान सौँ चलाय कै
कै रहू प्रहार ने विलम्ब किन्तु मात्र हो
पार्थ बाण घात पाबि नाश ही क पात्र हो

आन आन अस्त्र कैँ गदो अजेय मान जे
जाहि मे विशेष सिद्धहस्तहु क ज्ञान से
ताकि ताकि यत्न युक्ति सौँ प्रहार कै रहू
पार्थ युद्ध पण्डितेँ प्रशस्त रूप मे रहू

फेरि लै गदा विदा भेलाह फान फानि ओ
जोर सौँ घुमाय कैँ चलाउ युक्ति ठानि ओ
से गदा अचूक पार्थ बाण चोट पाबि कै
कैल तौँ गदैक गात मध्य पात आनि कै

स्वीय अस्त्र फेरि आबि देल हीय चोट हा
गेल चेतना बिसारि भेल लोट पोट हा
प्राप्त जाहि् वक्र काल बल युक्ति साधकी
काज सिद्धि मध्य होअ सेह् आबि बाधकी

देखि कै गदो अचेत सात्यकी उठाओले
मीलि दुइ चारि व्यक्ति चेतना कराओले
श्रान्त ताहि् जानि सारथी सुधारि अस्त्र कैँ
पूर्ण रूप देल जोश स्वीय सैन्य त्रस्त कैँ

सारथी कँपैत क्रोध बाजु आजु आब कैँ
पार्थ सौँ कटू कथा कतेक से सुनाय कै
पाण्डु वंश वीच नीच द्वारिका पधारि तौँ
भाग स्वीय देश चोर दण्ड खाय मारि सौँ

तोमरे उठाय से चलाउ खूब जोर सौँ
टूक टूक भेल लागि डाल ओ कठोर सौँ
फेरि लै त्रिशूल लक्ष्य शक्ति सौ चलाउने
पार्थ ताहि् बाण मारि वीच मे खसाउने

पार्थ भाग्य की नेनाक कौतुके करैत छी
क्षुद्र क्षुद्र अस्त्र शस्त्र हाथ लै लड़ैत छी
डँट थालि खाय वीच खेत मध्य जाय कै
ताहि् की किसान-हाँक रूप कैँ बजाय कै

सारथी सक्रोध बात पार्थ कैँ सुनाउ ई
पैच काय पाबि कै चलौ समस्त पाउ की
युक्ति पाबि पैचहुँक नाश होअ छोट सौँ
पैल फूटि जाय छोट कंकड़ीक चोट सौँ

भाग्य पार्थ, जान स्वीय शक्ति की बजैत छी
व्यर्थ हो प्रहार अस्त्र शस्त्र ने लजैत छी
जौँ समस्त सैन्य संग 'राम युद्ध ठानबे
तौँ प्रवीणता अवश्य मोर किछु जानबे

जे अतेक युक्ति अस्त्र शस्त्र मे अनैत छी
कै लिअऽ प्रहार से विलम्ब की लबैत छी
व्यर्थ वीरताक बात बात मे छटैत छी
छी ने युद्ध-प्रौढ़ युद्ध-क्षेत्र ने तजैत छी

क्रोध सौँ उठाय भिन्दपाल अस्त्र आन जे
सारथी चलाय देल बल सौँ महान से
पार्थ कैल नष्ट शत्रु युक्तिओ विशाल कैँ
भेजु वात वेग देव कै यथाऽभ्र जाल कैँ

व्यर्थ काल जाए ई नेना सभैक संग मे
साजि सैन्य ने चढ़ैछ युद्ध ठीक ढंग मे
पार्थ से विचारि चित्त युक्ति चेह् ठानले
सारथीक अस्त्र साधि मोहनास्त्र हानले

भूमि मे खसैत ताहि् घोर शोर भेल जैँ
धाय काम आतुरेँ उठाय शीघ्र लेल तैँ
चेतना कराए ताहि् क्रुद्ध अस्त्र धारु ने
युद्ध हेतु घोर रूप उद्धतेँ पधारु ने

आबि आशु काम भाग्य पार्थ कैँ सुनाय कै
क्रोधहु क वेग मध्य नीतिए जनाय कै
छी पिता क मित्र पूज्य भाव चित्त आनले
चौर वृत्त धारि मारि की कुठाठ ठानले

ताहि व्यक्ति कै धिक्कार कोटि कोटि जानिली
जन्म मानुषीक भूबि कीट तुल्य मानिली
थीक से मनुष्य ओ, प्रमाण बात मान से
जीवि कै कलंक वंश सून स्वीय कान जे

जौं ने दी फिराय, आइ भद्रिका इ' मानवे
भाव तात मित्रताक ध्यान मे ने आनवे
दैव चोर दण्ड ताहि ताहि सौं छोड़ायबे
की मनुष्य देह युद्ध क्षेत्र मे गमायबे

सुनि पार्थ भाषु आब आश व्यर्थ थीक ई
जाइ फीरि गेह काम मानु नीति नीक ई
पार्थ पार्श्व - पिञ्जरैं शुकी सुभद्रिका रहै
वीर विश्व मे कहाँ हठैं छोड़ाय से लहै

काम कोपि तानि बाण शान सौं चलाय कै
हाथ जाहि युक्ति जीत यत्न से लगाय कै
सिद्धहस्त अस्त्र शस्त्र मे रहै जतेक जे
त्यागि मोह कै रहू प्रहार तौं कतेक से

यत्न जे जतेक से ने काम ताहि आबले
मानि कै अथक्क ताहि पार्थ ई उचारले
कृष्ण पुत्र मध्य वीर छी अवश्य मानले
अस्त्रहूक सीख नीक भेल ताहि जानले

भाषु काम, युद्ध शास्त्र मध्य यत्न कैल जे
आइ एहि काल से समस्त व्यर्थ भेल से
कै प्रयोग अस्त्र शत्रु ठाढ़ ई देखैत छी
लाज सौं इ' व्यङ्ग बात-बाण कैं सहैत छी

आब ताहि काल युद्ध ई निवृत्त जानबे
घोर द्वन्द्व हारि जे पयान प्राण ठानबे
आतमा एतै ओतै अवश्य मोद पाओते
लोक देवलोक मे कतौ त कीर्ति गाओते

भाषि तानि तानि बाण जोर सौं चलाउ से
यत्न जीतबाक जे दुहू स्वचित्त लाउ से
ने निवृत्त होअ अस्त्र काम पार्थ हाथ सौं
धार बेसुमार भै बहैत घाम माथ सौं

चोट जे दुहू दुहूक से दुहू बचाव जैं
युद्ध चातुरी दुहूक दिव्य भाव लाव तैं
देखि ई दशा दुहूक क्षुब्ध देव - दानवो
काव्यकार धारि मौन छोड़ से बखानबो।

ताहि काल दूर बाट मध्य उड़ धूर जे
भूबि अम्बरो समस्त धूम रूप पूर से
युद्ध सौं निवृत्त भै दुहू तते निरेखले
की विचित्र थीक ई सुचित्त ताहि पेखले

देखि कै पताक चिन्ह लेल ताहि जानि कै
हस्तिनापुरेश हीक सैन्य आब मानि कै
यादवीय सैन्य हर्ष मानले अपार ई
शल्य कें उरैत आबि गेल वारि धार की

हस्तिनापुरेश ई समाद पंथ पाबि कै
दुष्ट पार्थ भद्रिका चोराउ शुण आबि कै
ओठ दाँत दाबि क्रोध सौं कपैत लाल भै
व्याह साज त्यागि ओ चलू कराल काल भै

बाट मे अधीन राज्यहूक सैन्य संग लै
ई बिचारि शीघ्रतेँ सियारू से उमंग धै
पार्थ एक मात्र अस्त्र शस्त्र सैन्य हीन कै
की बिलम्ब मारि ताहि ली ने नारि छीन कै

पार्थ हेतु प्रान भेल बक्र काल आब जैँ
मित्र कृष्ण संग बाम शत्रुताक भाव तैँ
ई सुयोग शत्रु सावधाक थीक नीक जैँ
शीघ्रतेँ स्वकाज साधि ली उचीत थीक तैँ

आबि मीलि सैन्य सैन्य मोद चित्त पागले
युद्ध हेतुएँ बिशेष जोश जोर आगले
हस्तिनापुरेश शीघ्र काम कैँ निधारि कै
क्रोध बेग मध्य देल बात ई उचारि कै

ई कुकर्मियाँ कोना कतै कहाँ सौँ आइ कै
जे समर्पि देल मोहि लेल से चोराय कै
हृव्य तौँ हुताशनैक हेतुए सुलाउ जे
आबि क्रूर काक दाब पाबि लै पड़ाउ से

बात चोरताक दुष्ट पार्थ कैँ सुनाउ से
मोछ ताव देत जोश जोर कैँ जनाउ से
दुष्ट ! भद्रिका बिहाय इन्द्रप्रस्थ भाग ने
व्यर्थ आब युद्ध क्षेत्र मध्य प्राण त्याग ने

पार्थ भापु, छी बिराट गप्प की हटैत छी
ब्याह हेतु आबि युद्ध मध्य ने हटैत छी
घेरि घेरि हारलौं ने लाज आब देह मे
थीक तौँ उचीत घूरि जाइ घूसि गेह मे

खेलि पाश दास भेल ताहि ई गुमान की
जे बिराट भृत्य नृत्यकार ताहि शान की
देल गेह सौँ निकालि ताहि सौँ बिसारि कै
चोर मूढ़ चान रूप भेल आब धारि कै

त्रस्त देश देश भूप दर्प सौँ अधीन कै
बिश्व वीर बाहु शक्ति चित्त मानि हीन कै
कौरवीय कृत्य ई ने जान के जहान मे
त्याग रंग-भूमि भाग राख धाख ध्यान मे

भापि आँखि लाल भेल कौरवेश क्रोध सौँ
भेल : वैर बाढ़ि पूर्वहूँक ओ बिरोध सौँ
तानि बान शान सौँ कमान मे चढ़ाउ से
एक दुइ तीन चारि बाणकैँ चलाउ से

हस्तिनापुरेश ई निदेश देल सैन्य के
पाण्डु पुत्र मध्य पार्थ काँट थीक नैन कै
आइ सौँ भने फराक भाइ सौँ भेलाह ई
मार मार शीघ्र मार मानि कै सलाह ई

सूनि से निदेश सैन्य झुण्ड झुण्ड धाओले
से समस्त अस्त्र शस्त्र साधिकै चलाओले
पार्थ तौँ निवारएैक चल चित्त आनले
कै प्रहार स्वीय अस्त्र घोर युद्ध ठानले

सत्र कौरवीय सैन्य युद्ध मे पधारु जैँ
यादवीय सैन्य अंग मे उमंग धारु तैँ
जंग बीच अस्त्र मीलि कै दुहू चलाब जे
अग्नि वायु संग भेल रूप कैँ जनाब से

एक दीश देखु वीर पार्थ एक मात्र कें
अन्य दीश सँ असंख्य सैन्य युद्ध पात्र कें
एक संग औ कोक अस्त्र कें चलाउ जे
पार्थ युद्ध चातुरी लखाए कै बचाउ से

औ कतार बान्हि बाण व्यूह कें चलाब जौं
पावसैंक वारि बुन्द बुन्द कें लजाब तौं
घोर युद्ध ठानु शत्रु के करै बखान से
सव्यसाचि पार्थ मारु नै बिलम्ब थान से

चन्द्रहास जे चमक्क चक्क मक्क देखि कै
चित्त मध्य चंचरीक रूप लीअ लेखि कै
मेघ गर्जमान शब्द बाजनो जुझाउ से
वज्रपात मानने शतध्नि चलाउ से

के करै बखान औ दुहूक द्वन्द देखि कैं
राम रावणैक युद्ध तुल्य लीअ लेखि कै
हो दुहू दुहूक अस्त्र शस्त्र यत्न व्यर्थ जैं
शस्त्र - वार उत्तरोत्तरैक हो समर्थ तैं

बाजि बाग धारि शत्रु चोट रोकि लेथि से
कै प्रहार बाण घेरि सैन्य मारि देथि से
एक अर्जुनैक ई प्रताप देखि पाओले
लेल ने विराम तीनि काज के पुराओले

पार्थ व्यस्त तीनि काज मध्य दाव पाबि कै
कौरवेश शस्त्र चोट लागु बाहिँ आबि कै
वीर पार्थ चेतना बिसारु ताहि शूल मे
जीति लेल जीति लेल बोल शत्रु कूल मे

दौड़ दौड़ मार मार दुष्ट पार्थ चोर कैं
कौरवेश सैन्य कें सुनाउ शोर शोर कै
देखि कैं अचेत पार्थ, सूनि औ निदेश कैं
व्यग्र दारुको बहुत बिहलो कलेश मे

भेल हा ! अनर्थ भेल ! दारुको उचारले
बन्धनो विमुक्ति हेतु यत्न जोर हारले
लाज - धर्म्म द्वन्द - युद्ध व्यस्त भद्रिका रहै
पार्थ कैं बचाउ ! हा बचाउ !! दारुको कहै

कै घटा घमण्ड शोर सैन्य मेघ घेरले
देखि भद्द बाग दौन हाथि बाजि फेरले
भद्रिका करैं सुश्रीचरैक बायु कै रहू
लै सुगन्ध वायु श्वास पार्थ होश कै कहू

"ओह ! आइ हाय ! एक सारथी ने पाओले
तैं बिलम्ब शत्रु - सैन्य नाश मे लगाओले
जौं रहैत सारथी सुदक्ष एहि काल मे
बात कौन हो ने नाश शत्रु तत्काल मे"

"नाथ ! आब सारथी अभाव चित्त आनु ने
घोर युद्ध हस्तिनापुरेश संग ठानु ने
जाहि युक्ति जीति होअ अस्त्र कें चलाउने
सैन्य जौं समुद्र तौं अगस्त भै सुखाउने"

बाग चाबुको सम्हारु भद्रिका कहैत ई
पार्थ कैं बढ़ाय देल बात सूनवैत ई
सारथी क्रिया सिखाय मोहि भाव देल जे
आइ दिव्य काल युद्ध मे सहाय भेल से

शान थीक क्षत्रिहीँक प्राण पाणि लै जिये
मान हेतु प्राण आन मानि दान दै दिये
मानयान तुच्छ जान जान ई जहान मे
मान मान पैघ प्राण आन आन ध्यान मे

सृष्टि मे प्रकृत्तिहीक पाबि कै सहायता
पौरुषेय प्राप्त होअ सत्य मानु ई कथा
युद्ध व्यस्त यान हाँकि पार्थ श्रान्त मानि ली
भद्रिका सहायिका जितैक योग जानि ली

पार्थ हर्ष मानि कै अभूत युद्ध ठानले
खींचि कै कमान बाण शत्रु सैन्य हानले
कैल ओ प्रहार तीर तीव्रतेँ घनाघनी
ने विलम्ब हो सँहार शत्रुहीक जे अनी

युद्ध सैन्य नैन ताक बाण हाथ धारि कै
रोकु होँकु पार्थ लक्ष्य पूर्ति केँ विचारि कै
चातुर्यँ चलाउ बाजि शत्रु लक्ष्य टारि कै
पार्थ चित्त जोश बाढ़ भद्रिका निहारि कै

चातुरी अचूक बीच भद्रिकाक पेखि कै
हो चकित्त चंचला चलैत यान देखि कै
शत्रु-तीर, पार्थ, बाजि के ने छूबि पाय जे
पार्थ लक्ष्य हो ने व्यर्थ चालि ओ चलाव से

अर्द्धचन्द्र बाण काट मुण्ड खट्ट खट्ट जे
भूमि मे खसै करैत शब्द भट्ट भट्ट से
मौलि रुण्ड रुण्ड युद्ध क्षेत्र लट्ट पट्ट हो
घूमि घूमि भूमि मे खसैत भट्ट भट्ट ओ

तीव्र तीर अर्जुनो चलाउ सन्न सन्न कै
लागि शत्रु हो प्रवाह रक्त फन्न फन्न कै
युद्ध क्षेत्र रुण्ड मुण्ड लागु छन्न मन्न ओ
जोर जंग-रंग मध्य शब्द धन्न धन्न हो

पार्थ सौँ उदण्ड भै प्रचण्ड रूप धैल जैँ
अल्प काल मध्य शत्रु सैन्य नाश कैल नैँ
सैन्य शून्य युद्ध क्षेत्र देखि चित्त आब ई
शस्य पुञ्ज कैँ किसान काटि कै खसाव की

हस्तिनापुरेश स्वीय सैन्य नाश देखि कै
थीक ई प्रचण्ड शत्रु चित्त मध्य लेखि कै
लेल हाथ चाप बाण तानि कै चलाओले
लक्ष्य पार्थ ताकि मार ने विलम्ब लाओले

वीर वीर युद्ध मे भिड़न्त भेल रोष सौँ
हो प्रहार क्रोध युक्त अस्त्र शस्त्र चोख सौँ
मार ओ बचाब मे दुहू रहू बेहाल जैँ
हारि जीत के कोना विचारु ताहि काल मैं

क्रोध सौँ कराल काल रूप पार्थ धारले
तानि बाण, सारथी रथो हयो संहारले
हस्तिनापुरेश हीय मध्य सोच गाढ़ जैँ
स्तब्ध क्षुब्ध भेल चित्र हीक रूप ठाढ़ तैँ

पार्थ भाषु "आब तोर ओ गुमान भेल की
भद्रिका विवाह हौसले हेराय गेल की"
सुनि ग्लानि-दग्ध रोष सौँ गदा चलाउ से
से निवारि पार्थ पूनि गाण्डिवे उठाउ जे

तीक्ष्ण तीक्ष्ण तीर मारु लक्ष्य के ललाट कैँ
लागि कौरवेश अंग अंग रक्त पाटने
रूप तासु ताहि काल देखि चित्त भान हो
शैल सँ गरैत गेरु धार थीक ज्ञान हो

ओ कठोर चोट सँ खसू मही मे आबि कै
गाछ जैँ खसैछ झंझवात झोंक पाबि कै
हाय ! हाय !! भेल हा अनर्थ भेल भाषि कै
शीघ्र साम्ब दौड़ि ताहि लेल कोड़ राखि कै

चेति ओ अचेत होथि लेथि आँखि मूनि कै
शक्ति हीन भेल हो न बाजि बात सूनि कै
हिम्मते हेराय गेल देखि कौरवेश कैँ
यत्र तत्र सैन्य भागु छोड़ि युद्ध देश कैँ

देखि शेष सैन्य क्लेश क्लान्त कौरवेश कैँ
यान मे चढ़ाय शीघ्र भागु स्वीय देश कैँ
अङ्ग भङ्ग रक्त धार लथ्य पथ्य धाय ओ
लाभ हेतु आबि जाथि सूर कैँ गमाय ओ

भद्रिका उसास छोड़ि बाग राखि देलि से
पेखु प्राणनाथ नेह नैन धन्य भेलि से
वाह वीर बालिका ! बखानु पार्थ प्रेम सँ
मान भंग प्राण आइ राखि लेल क्षेम सँ

युद्ध क्षेत्र मे प्रवाह रक्त होइत भेल जे
ताहि मध्य रुण्ड राशिओ बहैत गेल से
लाश पीठ काक बैसु देखि यैह भान हो
क्षुद्र नाव के चलाव केवटैक ज्ञान हो

गृद्ध वृन्द दूर दृष्टि देखि धन्य धन्य कै
आबि पाबि भूरि भोज खाय लस्त लस्त कै
कुक्कुरो स्वर्ग मे कटाह कृत्य ठानले
लोभ ग्रस्त भाइ भाइ वार कैल मानले

श्वान श्वान युद्ध मे प्रवृत्त भेल देखि कै
स्वीय काल सावनेक काल काक लेखि कै
खाय खूब चैन सँ स्वरूप ई सुभाव से
भाइ कैँ लड़ाय कै पिशून द्रव्य पाब जेँ

जौँ शवो रहै कने तथापि एक पाबि कै
आँत हेतुएँ लड़ै शृगाल द्वइ आबि कै
होथि द्वन्द्व युद्ध जिद राखि ताहि छाड़ने
खेत के ने खोज रंज मारि आरि काटने

हस्तिनापुरेशहुक हाल देखि लेल जैँ
यादवीक शेष सैन्य धैर्य त्यागि देल सँ
हारि देखि हारि काम बाण कैँ चढ़ाउने
पार्थ सँ लड़ैक हेतु क्रोध युक्त धाउने

देखि ताहि पार्थ भाषु, व्यर्थ की अबैत छी
दुर्दशा महारथीक भेल से देखैत छी
आइओ कतोक युद्ध युक्ति सीखि लीअ जौँ
जंग मे महारथीक संग डेग दीअ तौँ

काम भाषु, बाजि देल बात कैँ पुरायबे
भै मनुष्य ताहि सँ कि चित्त के फिरायबे
होउ सावधान आब बात की करैत छी
आइ तौँ जियैत हारि मानि ने सकैत छी

सिद्ध जानि पार्थ अस्त्र बाग कैँ सम्हारि कै
काम जे चलाउ बाण देल से सँहारि कै
भाइ व्यस्त देखि सात्यकी अधीर भेल जैँ
द्वारिका क हेतुयेँ सिधारि शीघ्र देल तैँ

जाय से सुनाउ रोहिणेय कैँ बुझाय कै
शीघ्र काम कैँ बचाउ युद्ध-क्षेत्र जाय कै
साम्य सारणो गदो न युद्ध वीर मानवे
हस्तिनापुरेश हारि गेल देश जानवे

देखि कै असंख्य सैन्य पार्थ अग्नि अस्त्र लै
फेल ओ प्रहार वायु अस्त्रहीँक सँग कै
भस्म भेल सैन्य ग्राम संग वस्तु जे छते
नाशहीँ क नृत्य नाँच आब की कहू कते

एक भूप दार देश हेतु लालचो धरै
आन प्राण सँग ओ विनाश कौतुको करै
हे विधे ! कराल युद्ध-अग्नि ने मिझैत की
मेदनीक रक्त प्यास ई ने शान्त हैत की

विश्व बीच भेल बेहु एहि रूप आहवो
एक सँग मे असंख्य सैन्य जूझि हारवो
पार्थ पार्थ युद्ध मे यथार्थ ई कही सही
पार्थ सज्जन पार्थ वीर आन ने केओ मही

युद्ध-ज्वाल युक्ति-नीति-नीर सौँ मिझाउ जौँ
जाउ जाउ काम कैँ अवश्य कैँ बचाउ तौँ
सुनि रोहिणेय कैँ अपार क्रोध भेल जैँ
लाल लाल आँखि ताकि बात भाषि देल तैँ

यान-अस्त्र-शस्त्र हीन छुद्र पार्थ मात्र जे
जाहि संग मे रहै न एक गोट पात्र से
ई कोना क जीति लेल हस्तिनापुरेश कैँ
कैल की प्रयोग सिद्धि-मन्त्र कैँ निवेश कैँ

सात्य की सुनाउ, यान कृष्णहीँक पात्र से
सारथी सुभद्रिका सुढंग सौँ चलाउ से
गाण्डिवादि अस्त्र शस्त्र नित्य जाहि संग मे
पार्थ कैँ विलम्ब कोन शत्रु सैन्य भंग मे

सुनितहि कृष्ण कैँ बजाय लेल भट्ट दै
क्रोध युक्त बात बाजु ओ कतेक चट्ट दै
पोसि पार्थ साँप ई कहू कि गोद पाओले
वंश-प्राण-कीर्ति कैँ अचेत मेँ डसाओले

थोक तौँ कुकृत्य ई अहैँक कैल जानले
मित्र हेतु स्वीय वंश मे कलंक आनले
दै रथो पड़ाइले सहायता इ' कैल की
कोन नीति शास्त्रहीँक नीक पंथ धैल ई

वंश मे कलंक भेल युद्ध मध्य हारथो
वीर रोहिणेय कैँ अछैत ई पराभवो
जौँ ने दुष्ट मारि कै सुभद्रिका छोड़ायवे
तौँ किये जियैत आब मुँह कैँ देखायवे

आइ पार्थ पक्ष लेथु इन्द्र भूमि आबि कै
की कुबेर की यमो निदेश ताहि पाबि कै
एक एक कै सभैक नाश आब जानवे
पार्थ प्राण नाश सौँ हृदैक शान्ति मानवे

किन्तु काल मौन साधि कृष्ण सुनि लेल ई
फेर क्रोध वेग मध्य 'राम बाजि देल ई
जौं अहाँक हौंसला सहायता प्रतच्छ मे
हो करैक, तौं चलू लड़ू ने ताहि पच्छ मे

कृष्ण मैं विनीत बात नम्रते सुनाउ ई
स्वीय कृत्य, क्रोध मे ने, भाइ ! चित्त लाउ की
दोष मोर मानबाक येह रूप लेखबै
पाक मे पकैत पाक - पात्र फोरि फेकबै

मित्र मानि आनि अद्रि पूर वास देल जौं
जाय ताहि आदरैं अहाँ बजाय लेल तौं
थै समग्र सूत्र कैं प्रवेश गेह कैल ओ
एहि काज मध्य मूल कारणे तौं भेल औ

रैवतीक भीड़ उत्सवीक जानि कैं अहाँ
नीक की विचारि कै पठाउ भद्रिका तहाँ
भेल बीच बीचमा कुलाङ्गना पठाय कै
ई अहीँक कृत्य भौं कुठाउ भेल आय कै

आगि आज्य तौं अहीँक कैल एकठाम ई
ताहि हेतु भेल ज्वाल पावि शून्य धाम ई
पार्थ प्रेम - वश्य चित्त भद्रिकाक भेल जैं
ओ प्रतच्छ सारथीक कार्य्य - भार लेलि तैं

पार्थ देश जाथि जानि यान ताहि देल जे
बात ओ विचार तौं अहाँ' समस्त भेल से
जौं अहाँ तथापि आब मोहि दोष दै रही
लेउ जानि बात मानि दोषिए रही सही

भेल ई व्यतीत, वर्तमान कैं विचारबै
नीक एहि काल कोन पंथ पैर धारबै
जौं लड़ाइ ठानि पार्थ प्राण कैं हरैत छी
भद्रिका सोहाग प्राण - नाश सौं डरैत छी

पार्थ संग युद्ध मे अहैंक सँग जायबै
बात ई अवश्य एहि काल मे सुनायबै
विश्व मे बली कहाय ख्यात नाम गान जे
नीति नीक थीक राखि ली निरंक शान से

पार्थहूँक ई प्रताप ख्यात देश देश मे
जीति लेल द्रौपदी अनेक ओ नरेश मे
साजि शंकरौक संग संगरो ने हारि ओ
जे समच्छ युद्ध ठान ताहिकैं पछाड़ ओ

क्रोध त्यागि कै विचार धीर बुद्धि सौं करी
आएबें तँ क्रोधहीक वेग मध्य मे पड़ी
जीत हारि होथ जे सुभद्रिका ने पाएबै
मे वहीन सौं विहीन घुरि गेह आएबै

ने विरोध कैल यान पार्थ जौं चढ़ाओलै
युद्ध बीच सारथीक काज कैं पुराओलै
पार्थ प्राण नाश देखि से कि प्राण धारती
नारि धर्म्म धीरतैं अवश्य ओ निबाहती

थीक ई कलंक, व्यर्थ बात की कहैत छी
क्षात्र - धर्म्म, स्वीय वंश कृत्य, नै तकैत छी
जौं सुभद्रिका विवाह पार्थहीक संग हो
तौं कि नीज वंश रीति नीति किछु भंग हो

पार्थ वंश शुद्धता अवश्य बूझि लेल जँ
पूर्वजो विचारि कै कुटुम्ब ताहि कैल तँ
बुद्धि वैभवेँ बलेँ प्रशंस्य पार्थ जानबे
की वरो विशेष योग्य ताकि आन आनबे

पालक प्रणक पच्छ स्वच्छ सच्चरित्रता मे
धीरता बड़ाई विश्व विजयी बखानबे
बान्हल दुर्योधनोँक बन्धन छोड़ाए देल
अर्जुन बड़प्पन की मन मे ने मानबे

कौरव समस्त सैन्य नृपति विराट संग
युद्ध रचि भेल जे दशा स्व-चित्त आनबे
बन्धक विहीने दीने देश दिस, देल डेग
दुर्योधन पार्थ मध्य एहु भेद जानबे

सुनि लेल माधव मुखक वाणी रोहिणेय सुचित्त भै
से सोचि सोचि विचारि बहु विधि रहल क्रोध निवृत्त भै
क्रोधाग्नि ज्वाला बढ़ल भीषण मारात्मक स्वरूप जे
श्रीकृष्ण वच-जल सिंचनहिँ सौं भेल शान्तिक रूप से

कहु बलभद्र अहाँ ई सम्मति पूर्व समय नहि देले
हम सौं दुर्योधन वर उत्तम मानि हृदय मे लेले
विप्र पठाओल, आबि कहल से लै बरियाती औता
विधि विधान के जान आबि कै मारि खाए घर जैता

बिनु पूछने कन्या के कहइछ कृष्ण कहल ई बाते
नैतिक रीति एहु देखइत छी जग जन कत अछि ख्याते
की गुण निन्दि पार्थ सौं कौरव केतु हेतु मन आनी
हम तँ बल वैभव बुद्धिहुँ मे हुनका हीने मानी

तेज मे तरणि बल वायु सौं बाढ़ि कुछु
धीरता धरनि सन अचरा जानू
भीष्म सौं सिखल निज प्रणक पालन क्रिया,
बुद्धि गुरु शुक्र सौं तुलित मानू

भाइ ने भक्ति लघुता करै लछमणहिं
शत्रु दल दहन दहनक समाने
पार्थ सन पार्थहिंक देव उपमा उचित
जानु जग तीनि नहिं एहन आने

कहल बलभद्रो विलखि कहु कृष्ण की कर्त्तव्य
नहि बुझी एहि काल मे की आबि गेल भवितव्य
अहाँ जे किछु उचित जानी करू सैह उपाय
रहै निज कुल लाज पुनि ई रारि जाय मेटाय

मौन धारि किछु काल सोचल मनमोहन मनहिं
भाषल वचन रसाल व्याल-जाल जनु जल पड़ल

भट आइ शात्यकी अहँ कहि देब पार्थ कैँ ई
की मित्र भाव रखता करताह शत्रुता की
जग पाबि वैभवो बल नहिएँ बनी गुमानी
की मित्र बालको सौं समुचित लड़ाइ ठानी

जौं लोक कौरवेशक बल वीरता बखानै
सुनि लागु वीरता मे जनु ठेस चित्त मानै
हरि लेल जौं सुभद्रा [illegible] रोप हेतु जानी
आनेक दोष आनक सिर पर [illegible] मानी

किन्तु हुनके विपर्थें पद देने पड़े पराभव भारी
मित्र मानि अरि भाव करब हम नहिएँ उचित विचारी
बुध-जन-प्रेम प्रात तरु छाहरि सन नहि मन अनुमानी
दिन ससरा पर तरु छाहरि कम सम तकरा कैँ जानी

यादव कुल अरत जनु जानथि वृत्त वीर अभिमानी
सुरपति दर्पो दलि कै नख पर राखल गिरिवर आनी
बलभद्रक बल विश्व विदित जे को नहि हुनका जाने ?
वंशी सौं सुरखेलि करब सन बुभिअ हुनक उलाते

रहौ मित्रता अचल बनल ई भाव परस्पर राखब थीक
व्यर्थ युद्ध त्यागथु सम्प्रति ओ मानथु हमर नीति बुधि नीक
फिरि कै आनथु बल करय से जैँ पुरि जाय हुनक जे आश
कैनहुँ दत्त पात्र फल से नहि जे नहि मित्रक कर विश्वास

मानहु देव बुभाए व्यर्थ आब ओ जनु लड़थु
लाबथु पार्थ लेआए मित्र हमर मन मानि कै

सात्यकि सकल बात सुनि लेल
हरबर दौड़ि युद्ध - थल गेल
दुर सौं सैन्यहि देल देखाए
श्वेत पताका हाथ उठाए

देखितहि अर्जुन धनु धए देल
कानो बाण समटिए लेल
गरुड़ पाँखि जनु पसरल देखि
फणिपति फन समटल सन लेखि

सात्यकि आबि कहल सम्बाद
शान्त भेल ततछनहि विवाद
रण परिणाम ऐह नौं भेल
विपो दैत थिपत्ता भै गेल

सभ जन सबहिक मुख कैँ ताक
भै गेल सेना सबहुँ अवाक
चलु चलु होएल मंगल रीत
दास कबीरक उनटल गीत

जे सेना छल विच संग्राम
से हरियाली भेल परिणाम
क्रोधक थल लेल मोद अशेष
पार्थक प्रति भेल प्रीति विशेष

दारुक बन्धन देल खोलाए
सारथि भै पुनु चलु हरषाय
विधि विचित्र करतब के जान
हो निमेष मे आनक आन

श्रीकृष्णक कौतुक कला कहौ कौना कै आन
प्राण हरण प्रण तजि करथि यहिलोकक सनमान

॥ इति द्वादश सर्ग ॥

द्विज आएल पाण्डव सभ जतै
लखु मन्दिर रूप अनूप तते
बहु रत्नहिँ सौँ निरमाओल जै
'रत्नाकर सौध' कहाओल तैँ

नृप 'कैँ तहँ आशिष दै फल लै
तहँ नमूहिँ पत्र समर्पल धै
लिपि बाँचथि ओत्सुक मोद लहू
नृप ब्राह्मण कैँ सन्मानि रहू

बलरामक आग्रह मानि नृपो
मन मे बुझि ई जगदीश कृपो
निज वर्ग बजाय सुनाओल से
द्विज कै सतकारि पठाओल से

अभिलाष बरातक वस्तु जते
समतूल तुरन्तहिँ भेल तते
बहु भाँतिक बाजन बाजि रहै
नट नाटक वृन्द विराजि रहै

कुलदेव गुरू पद पूजि नते
लखि लग्न शुभोदय शास्त्र मते
चलु भूप सरूप अनूपहुँ सौं
बढ़ि मानु पुरन्दर रूपहुँ सौं

बहु न्योतल भूप अनेक जहाँ
अनुजोगण सेवक वृन्द तहाँ
बरिआत असंख्य बखानत के
नखतावलि के गनि आनत के

गति शीघ्रहिँ पंथ सिधारथि से
उपराम विलम्ब ने लावथि से
उमड़ै अभिलाष प्रवाह तहाँ
मिलबा हित उत्सव सिन्धु जहाँ

किछु दूरहिँ सौं लखु द्वारवती
जनु शोभ सिंगारमयी युवती
टक लाय बरात निरेखन मे
किछु मोहन - यन्त्र निकेतन मे

बरिआतक बाजन बाज जहाँ
सुनि पाओल से पुर लोक तहाँ
अरिआतक साज समारल से
मिलि कै नृप धाम सिधारल से

सब साजि चलू बरिआत जहाँ
कत कै रहु कौतुक पंथ तहाँ
दुहु मीलु प्रमोद प्रवाह गती
सुषमाब्धि प्रवेशय द्वारवती

गज गज्ज गुनू मकरादि तहाँ
बहु खेल तुरंग तरङ्ग जहाँ
तट द्वारवती धरि जाए फिरै
फिरि कै तहँ हेतुहिँ फेरि फिरै

बहु पाथिक कैँ लघु जीव गनौ
करिणी - रथ सैद तहाँ तरणी
बहु मोदहि बाजन बाज जतै
धिक शब्द समुद्रक मानु तते

अरिआति बराति चलू सुख सौं
मुद सन् छन जे कहु के मुख सौं
बहु आदर सौं पहुँचाउ तहाँ
जन - वासक सज्जित धाम जहाँ

सभ सौं मिल पार्थ मुदे मन सौं
शिखि से घन के अवलोकन सौं
निधि सिन्धुक बीच हेरायल से
तट भाग्य तरंगहि आयल से

कुशलादि परस्पर भेल कते
दुरयोधन युद्ध कुठाठ जते
सुनि धर्म्म प्रशंसल पार्थ तहाँ
कुल कीर्ति कलाधर मूर्ति अहाँ

नृप धाम महोत्सव राजि रहै
नट नाचय बाजन बाजि रहै
कर कौतुक कौतुककार कते
लखि मुग्ध रहै तहँ लोक जते

रनिवास हुलास प्रवाह बहै
कत कौतुक मे रत नारि रहै
गितिगाइनि सोहर गाब जहाँ
रह गूँजि मनोहर तान तहाँ

कत नारि कुमारि सिंगारि रहै
रचना क अनूपमता के कहै
पट भूषण सौं बहु भाँति सजै
रति रूप रतोहु न ताहि छजै

सखि संग सिधारु महीप - सुता
नखतावलि मे चलु चन्द्र यथा
सभ आइलि गौरि क धामहि मे
जहँ पूर मनोरथ कामहि मे

गणनाथ क आइ क आनहि सौं
नृपजा कर पूजन ध्यानहि सौं
कर-बद्धहि शीश नबाओलि से
निज आश हृदैक सुनाओलि से

जग नारि महासुख मानु एते
पति पुत्र क प्रेम प्रमोद रतैं
लखि से सुख मे नित मग्न अहाँ
वर माङ्गय की हम आन तहाँ

करुणामय स्तोत्र सुनाओलि से
मन मे दृढ़ आश लगाओलि से
मुद सौं फरकै दृग वाम अहाँ
मन मानस पूरत काम तहाँ

कए पूजन ओ निज गेह गेली
कुल रीति क कृत्य प्रवृत्त भेली
सखि बीधि - विधान पुराउ कतै
कहि व्यङ्ग क बात सुनाउ कते

शुभ लग्न विवाह क सोधित जे
बहु पंडित बोधित सम्मत से
जत दान विधान क वस्तु जहाँ
बलदेव करु समतूल तहाँ

मुद सौं वर आनक हेतु चलू
हरि, राम बरातहिँ आबि मिलू
सजि साज समस्त समैक मतै
वर रूपहिँ पार्थ सिधारु सतै

पहुँचाओल लै हरि द्वार जतै
विधि वस्तुहि लै तिय आउ कतै
परिछै प्रमुदे पुर नारि तहाँ
कत कौतुक गानहुँ मस्त महा

हँसि व्यङ्ग कथा करु कृष्ण प्रिया
कहु चोरहिँ देय कि राजधिया
बड़ लोकक बात कोना ने करू
जग बीच हँसी सहबो इ' बरू

बहु गीतहिँ गारि सुनाउ तहाँ
वर पार्थहिँ मण्डप लाउ जहाँ
नृप पूजल भूषण रत्नहिँ सौं
जत शास्त्रक रीति प्रयत्नहिँ सौं

बहु भाँति पुराओल पूर्व क्रिया
मड़बा पर आनल राजधिया
छवि देखि दबै दिवि देव-तिया
तिहुँलोकक नागरि लाजु हिया

दुति दम्पति दिव्य देखैत सतै
उपमा रति कामक होअ कतै !
उपमेय विचारि जौं ताहि कही
तन छीनहिँ हीनहिँ मौन रही

तनया कर पार्थ करोपरि कै
दर फूल फलो जल सौं भरि कै
नृप दानहिँ दै सुख पाओल जे
कवि सौं नहि जाइछ गाओल से

वर पार्थ कनी भगिनी हरि जे
गुण आकर ई गुण आगरि से
उद्वाहक बन्धन जोड़ि रहै
विधिओ वसुदेवक भाग्य चहै

बरियातक मोद बखानत कै
दिवि दुन्दुभि देव बजाबत जे
सभ आगतहीक समादर कै
रह लोक सोहागक आशिष दै

दृग दम्पति भै चकवा चकवी
चित चाह मिलैक समै भल ई
गुरु लाज निशा अवरोधल जैँ
अभिलाष अछैत न मीलल तैँ

दुहु कैल क्रिया हवनादि कतै
कुलरीतिक सप्त पदादि जतै
भै गेल विवाहक पूर्ति क्रिया
तहँ दम्पतिहुक जुड़ाउ हिया

नृप भै कृतकृत्य महा सुख सौं
बच गद्‌गद ने निकसै मुख सौं
जग याचक तोष करू धन सौं
जन एक ने निर्धन से छन सौं

पटशाल दोशाल गने ने तहाँ
रतनादि लुटावथि भूप जहाँ
छल ने छथि ने होएतो ने कहैं
महिपाल क ई यश गाबि रहैं

रनिवास महोत्सव माँचि रहू
सुख सिन्धु क दिव्य प्रवाह बहू
लए दम्पति नागरि यूथ तहाँ
पहुँचाओल कोवर गेह जहाँ

किछु व्यङ्ग कथा करु कृष्ण - प्रिया
हँसि कै पुनु पूछ कहू रसिया
भए नारि विराट ओतै अपने
रखने रहि लाज कोना अपने

कत तर्क करै पुर नारि हिया
कहु सोंपल की बूझि भूप धिया
यहि वंश समन्वहिँ विश्व यशो
नहि तौँ जग होइत पूर्ण हँसी

सुनु व्यर्थ कथा : कहवे कि करू
अपनौलन्हि जैँ सहवे इ करू
कुल मध्य अहाँक कुकीर्त्ति जतै
तहँ चोर क काजहिँ लाज कतै

सुनि उत्तर पार्थ कहू हँसि कै
मति ई मम भेल एतै बसि कै
अहँ कृष्ण क अस्त्र खोओलहुँ जैँ
विपथा पथ मे पद देलहुँ तैँ

कत हास विनोद कथा कहि कै
किछुए छन कृष्ण प्रिया रहि कै
उपदेश करू कए चातुरता
चलथाक जनाए कै आतुरता

मद मत्त अली रस - लोलुपतैँ
कर, कंजहि कौतुक क्रूर करै
पुनि आबि सिरीष प्रसूनहिँ से
पद धारथि तौं अति धीरहिँ से

धन पाबि करै क्रम भोग करी
नहिँ उद्धत कर्म्महिँ चित्त धरी
चिर काल सुखी रहि होइ यशी
गति आतुरतैँ जग मध्य हँसी

धन स्वीय सदा रहते घर मे
अति आतुर भै न पड़ी भ्रम मे
अहँ नीति हृदै बिच राखथ ई
बस आब विशेषहुँ भाषब की

कहि भेलि विदा, गृह शून्य भेने
नव दम्पति मोद सभै मिलने
कत लाज मनोभव द्वन्द्व रचै
तिय - हीतल अद्भुत खेलि मचै

नव नागरि नागर सङ्गम सौं
घिरतो रहु प्रेयसि अंकम सौं
उर भाव प्रकाशय रुद्ध तेना
गढ़ बन्द चलू चित जोश जेना

कहु प्रेयसि कानहि पार्थ तहाँ
मुँह मूनि रही सुख वेरि कहाँ
रजनी यदि जाइति लाजहि मे
पड़ विघ्न बुझू रस काजहिँ मेँ

छल जे हिय मे अभिलाष ओते
रण जीतय मे कर यत्न जते
भल भाग्यहिँ पाओल ई सुघड़ी
उपहारक वेरि ने लाज करी

रण-खेतहिँ शत्रुक चोट जतै
रण तुल्यहिँ काटल की ने ? ततै
ज्यइँ कौं कए ढाल चलायए जे
फुल बाणहुँ काम सतावए तैँ

निज अंगहिँ अंग सतावए जे
अरधाङ्गिनि ! की यश पावए से
नहिँ आब विरोध लजाउ अहाँ
सुख भोगक लै रहु मोक्ष महा

सुनि उत्सुक उत्तर हेतु भेली
किन्तु सोचि पुनः सकुचाय गेली
सुनि भूखल याचक आर्ति कथा
रह द्रव्य अछैतहुँ सोम यथा

रह शाज गढ़ो मजबूत जतै
चतुराइ चमूक चढ़ाइ ततै
जनु प्रेमक व्यूहहिँ टूटल से
सभ सम्पति नारिक लूटल से

विजयी गढ़ तोड़ि ने मानल जैँ
रण रंग महा तहँ ठानल तैँ
पड़ु घाइल रूपहि, देखि कही
भए गेलि पराजित नारि सही

मचि द्वन्द्व एकान्तहिँ भेल जहाँ
नहिँ आनक हो परवेश तहाँ
मन कल्पित बात बखानत के
अनुमान प्रमानहुँ मानत के

पुनि द्वन्द्वक अन्तहिँ भेल कथा
सुनि नागरि क्रोधि जनाय व्यथा
रस-हुलसि रोष बुझाओलि से
किन्तु काल कला दरशाओलि से

पुनु मानल मानिनि बात कोना
नृप हारल कैँ गति होअ जेना
बिसराओलि वैर विरोध जतै
जहँ प्रेम बढ़ै तहँ रोष कतै !

गृहिणी गुन आगरि पाबि गृही
बढ़ि स्वर्गहु सौं सुख मानु मही
दुहु मोद महोदधि मग्न महा
परब्रह्म-पदो-सुख तुच्छ तहाँ

मधुमास मधुमय सुमन सौरभ मधुर मोद बढ़ाव
मधु मत्त कोकिल मधुर कुहु कुहु कुहुकि मदन जगाउ
मधु यौवनक मधु मोति दम्पति निरत मधु परिहास
मधु-यामिनी मधु-मिलन मधु छवि जगत मधुमय भास

मति काम कला-रस मे सुख सौं
मधु पात्र छुटै न दुहु मुख सौं
नहि छाक सुधा पुरने छन मे
रहि जाय दुहुक त्रिषा मन मे

बहि गेल विनोदहिँ रैनि कोना
छपितो जन पाणिक पानि जेना
बिसरौ बुझि दम्पति हारि रहै
विरही दुख के कवि गाबि कहै

रैन-रानिक तिमिर-पट कैँ निठुर खैंचे हाय
सुन्दरी सेफालिका कैँ रहै सौंटि मिलाय
तोड़ि आशा नवल जोड़ी विरह घोर चकोर
कत अनर्थ ने करए नित प्रति महापापी भोर

भोर प्रेम विभोर दम्पति विकल सुनि खग गान
चौंकि उठि दुहु निन्द निशिकैँ मन विछोहक ध्यान
हार टूटल संचि संचहिँ चलशि तजि पिय संग
नव वधूकेँ दुखित चिन्तित करए लाज अनंग

त्रिभुवन निरत नव नागरिक सिन्दुर पसरु जे भाल
गगनक मुकुर मे सेह की प्रतिफलित प्रातः काल
सुन्दर वदन अति आलसहिँ छवि छीन देखना जाए
चन्द्र राका दिवस उपगत रूप रह दरसाए

चलु अर्जुन कोबर कौतुक कै
बरियात बिदाइक यौतुक लै
नृप देल, महासुद पाबि रहू
बलराम बिनै युत बात कहू

दिन बारह वर्षक शेष जते
रहि पार्थ बितावथु ताहि एतै
अभिलाष, युधिष्ठिर सौं कहु से
हठ जानि विछोह व्यथा सहु से

बरियातक संग युधिष्ठिर सैँ
चलु अर्जुन कैँ तजि निष्ठुरतैँ
मन भाइक प्रेमहिँ राखि एतै
सब जाए हठे निज देश जतै

एत हो नित रंग तरंग महा
नव कौतुक मे चित काल तहाँ
तिय गावथि गारिक गीत कते
बिहुँसै सुनि अर्जुन मोद मते

मन पार्थक मोदहिँ मस्त जहाँ
दिन शेष वितैत विलम्ब कहाँ
दुख काल पहाड़हुँ चाहि गरू
सुख बासर सौं क्षण मात्र टरू

जखन मन पड़ माय भाइक विमल प्रेम अगाड़
छनहि छन उद्वेग निज घर हेतु पार्थहिँ बाढ़
अवधि-अहपति अस्तथल कैँ क्रमहि क्रम लगिचाउ
सुख-चरी चित-चिड़ै चरितहुँ चास दिस टक लाउ

पार्थ कहु नहिँ उचित एहि थल बैसले रहि जाइ
श्वसुर नामहिँ होअ परिचय कुलक कीर्ति नसाइ
नित अवज्ञा क्रमहि सम्भव जगत के नहिँ जान
श्वसुर सदनहिँ सतत रहनहिँ श्वान सन सनमान

विनय युत अर्जुन बलीकेँ ई वचन कहि देल
प्रण पुरक दिन आब हमरा अति निकट भै गेल
उचित थिक जे पाबि अनुमति जाइ हम निज देश
माय भाइ समाज चित सौं छुटए कष्ट कलेश

एजो भाइ वाणी मधुर रस सानी विनय सौं
मने मानी कोशेँ गमन हठ ठानी एतय सौं
थिकौ जेँ अज्ञानी हम ने किछु जानी कि उचितो
अहाँ छी ज्ञानी तेँ क्षमय त्रुटि भानी नमित भै

पार्थ ई बलभद्र वच सुनि कहल अति हरषाए
अहँक कृत सम्मान जे नित से कहल की जाय ?
तेँ उचित नहि थीक ई जे प्रणक सुधि बिसराय
रहि बिलमि हम आब अनतए ई ने उचित बुझाय

गनथि दिवस नित माय गनथि दिन नृप भ्राता गन
मन-माला मे दिवस द्रौपदी गनथि छनहि छन
प्रजा-पुञ्ज गनि रहै अवधि दिन दुख सौं टारै
मन मन नारद सबहिँ निन्दि सभ खन धिक्कारै
प्रण पूरल पर पलटि कै देश गमन पथ नहि धरी
जगत अयश नहि होयत की बहुत आब हम की कही

सुनि वचन बलरामो मानल सभमिलि कैलन्हि उचित विचार
रनिवासहुँ मे खबरि पठाओल संचित होअ वस्तु व्यवहार
अन्तःपुर मे आयोजन हो विविध वस्तु के करत सुमार
वस्तु विदाइक बाहर लै लै सोंटल बहुविधि भारक भार

श्वसुर घर दुहिता गमन दिन देवकी सुनि लेलि
बालिकाक वियोग बुझि से अति बेआकुलि भेलि
जाहि यतन अनेक सौं कत बरष पोषण कैल
से सिनेहक पुती कैँ हा ! लए अइत पथ गेल

आब केकरा बाल प्रेमक करब हम व्यवहार
आब ककरा प्रात उठि कै करब चारु सिंगार
आब ककरा कार्य्य कौशल रीति नीति सिखाय
बालिका कलिका विकच लखि नयन लेब जुड़ाय

जनम सौं कत यतन पोसल सुखक आशा लगाय
निरखि किछुओ दुखित देलहुँ राति राति बिताय
तकयलहिँ लै चलु अपरिचित तोड़ि आशा फूल
बिधि लिखल थिकि भाग्य बाला माय काकरु तूल

सोचि जग युवतीक गति लखि धैर्य्य हिय मे धैलि
से विविध उपदेश अनुपम भद्रिका कैँ कैलि
कहलि तिय तन पाबि जगमे एहु जानब नीति
भए सुहागिनि जाइ सासुर सिखी पति कुल रीति

श्वसुर गृह कुल वधुक हित थिक अपर जन्म स्वरूप
छुट पिता कुल रीति हो पति कुलकहिँक अनुरूप
सावधानहिँ चलब बाजब काज मे मन दीअ
पद कुपथ वच कुवच हो नहिँ थाख रालब हीअ

दन्त पंक्तिक बीच रसना करै निशि दिन वास
दाँत सौं पचितहुँ दुखी रह दुखी दाँतक पास
कुल जनक कटु वचन सहिना सहब नीकक आश
प्रेम सेवा निरत रहि नित करब सासुर वास

श्वसुर पिता भन मानि सासुकेँ माता मानब
पतिक सहोदर भाइ सनिक तिय भगिनी मानब
सौतिनि संगिनि ननदि सखी मानब परिवारे
सग्न संग सभ समय सरल राखब व्यवहारे

पति कें मानब देवता प्रेम सहित सेवा करब
एहि लौकिक परलौकिको गहन गहन सुखसौं तरब

गृहिणी भै गृह कार्य्य कुशलता सभ खन मनमे लाबी
पाक पटल पटुता पौनहिपर परहुँ प्रशंसा पाबी
पट परिहन रचना सुचि नव नव कला कुशल दरशाबी
पाबी पति घर परम प्रतिष्ठा प्रीति रीति अपनाबी

प्रपा रूपहिँ तृषावन्तहिँ करब जीवन दान
अन्नपूर्णा सदृश क्षुधितक हेतु अन्न प्रदान
रोग पीड़ित जनक सेवा रूप निशिदिन ठाढ़
दीन दुखिया दुख हरण मे निरत प्रेम प्रगाढ़

रौद दग्धक हेतु छाया शान्त व्यजन समान
आर्त हित आश्वास वाणी शत्रु चण्डी जान
सतत चित्त उदार राखब वचन मधु सन भान
गृही हेतुक शुद्ध लक्ष्मी बनि करब कल्याण

एहि रूपेँ कत कत उपदेशक वचन रेवती देल सुनाय
मातु पिता दुहु दुहु बिछुरन दुख असह्य सहन कर कहल ने जाय
प्राप्त समय शुभ लग्न महोदय शुभ शुभ मंगल गीतक गान
गाबि चुमाओन करथि नारि गण जे विधान थिक समय पयान

सखि सम्बन्धिनि जननी भगिनी रोदन कैं निज नेह जनाब
बड़ बिछोहक वेदन हीतल मिलनक सुख दुर होइछ आब
मिलि मिलि सभसौं व्याकुल भावहि बिलखि सुभद्रा रोदन ठान
दारुन दुख प्रिय जन विश्लेषक असह्य जानिकै के नहिँ कान ?

भद्रा हीतल प्रेम पतिक पद प्रतिपल प्रबल रूप भै जाग
नेह नैहरक नोर व्याज सौं नयनक पथ सौं कय रहु त्याग
करथि बिदा कुलरीति-मतहिँ सभ भूषण वसनहिँ कै सन्मान
खास खवासिनि दासी शिबिका संग वस्तु दय आनो आन

कत कत धन दै रहु अर्जुन कैं हलधर भाव कहल नहिँ जाय
बिदा समय सहितहुँ बिछोह से नम्रहिँ रहु कत विनय सुनाय
कैल बिदा बहुविधि आदर सौं अतिशय प्रेम भाव दरसाय
बिछुरन दुख सहु विह्वल भै सभ कृष्ण संग भै चलला भाय

पथ विश्रामो बिसरु व्यग्रतेँ निज मन्दिर मन लागल ध्यान
पन्थी दिन अवसान जानि जैँ आतुर कर निज वास पयान
बाट बटोही ग्राम-वधू कइ धनि धनि रमनी व्याहु नरेश
सहित सोहागहिँ सुत युत सुख सौं रहथि शुभाशिष देथि अशेष

पार्थ आगम दिवस मन गुनि मोद कत मन जागु
इन्द्रप्रस्थहिँ साज साजन सभ पुर जन लागु
भाइ भूपक संग कुन्तिक हिय हरष अधिकाय
द्रुपद-तनया मनक गति जे से कहल नहि जाय

नगर भरि मे मचु महोत्सव ध्वज-पताका ठाठ
स्वच्छ सुरभित सलिल सिंचित सभ सड़क लघु बाट
यत्न सौं रचि रचि समारल सबहुँ निज निज धाम
बढ़ल शोभा इन्द्रपुर सौं इन्द्रप्रस्थ ललाम

आगतपतिका सदृश प्रसाधन नागरि नगरिक भेल
बढ़इत छल जे विरह-मलिनता से सहजहि दुरि गेल
डगर डगर घर-घर नर-नर मे चहल पहल दरसाय
जनु उमगति उल्लासक नद नव उन्मद वेग लखाय

पार्थ प्रएल दिन पुरल मन गुनि प्रजा प्रमुदित भेल
कल्प सन पल-पल बिताबय आन सुधि सभ गेल
छनहि छन सब पंथ ताकए चित्त चैन ने पाउ
ईद दिन मे यवन जहिना चान दिश टक लाउ

अर्जुनीक आगमो उचार चार मोद सौं
बाट स्वागतीक बाढ़ि भीड़ भै विनोद सौं
बाजनो बजैत हर्षनाद सुनि लेहु ई
पार्थ चन्द्र हेतु प्रेम सिन्धु ऊठ हेहु की

बीच बाटहि मे समागम भेल पार्थक संग
भाषि जय-जय सबहुँ हेरहु माल प्रेम उमंग
पार्थ नृप पद प्रणत नमहिँ भाव गद्गद भेल
नेह नीर बहैत हुनका अंक मे गहि लेल

पार्थ सौं परसैत पद लहुँ भीम लेल उठाय
कहल मम तन मध्य मानू प्राण पलटल आय
नकुल ओ सहदेव कैलन्हि पार्थ पदहिँ प्रणाम
पुलक पूरल मुग्ध दुहु जन मूक चित्र ललाम

प्रजा समूहो अभिवादनो करै
पुछैत पार्थो कुशलो मुदो भरै
शनैः शनैः से नगरेँ पथेँ चलू
कहै भला के सुषमा जते लहू

नगर नारि अटारि चढ़ि-चढ़ि देखि मुद मन पाउ
स्वागतक उल्लास सूचक फूल बहु बरिसाउ
ठाम ठामहि आरतीहुँक अमल छवि दरसाय
नगर मोद महोत्सवहि मे मगन बुझना जाय

कुन्ती संगहि कुल कामिनि गण भवन द्वार पर ऐली
दम्पति परिछन हेतु सबहि मिलि वस्तु साजि कै लैली
गाबथि गीत गान समयोचित सुनि सुनि मुद मन पागी
कतेक लखब सुन्दर नव जोड़ी आतुरता अति जागी

पार्थ शीघ्र आबि कै प्रणाम कैल माए कैँ
माथ हाथ राखु मा विशेष मोद पाए कै
दीर्घ ओ विछोह यामिनी अमाऽवसान मे
भानु रूप भासमान भेल पुत्र ध्यान मे

रहु दम्पतीक दिश दृष्टि द्रौपदी दैने
मुद लहरि छोर में छिपल दुःख कण दैने
कर चुरी शीश सिन्दूर हमर थिर राखथु
मम प्रति सिनेह पति घटल जगत यरु भाषथु

कुलक रीति परिछन कै दम्पति लै चलली रनिवास
नागरि गण मिलि विधि विधान सभ पुरयथि मानि हुलास
द्विजगण दूर्वाक्षत सौं आशिष वंश वर्द्धनक देल
शुभ शुभ गाबि चुमाओन मे रत नारि सुहागिनि भेलि

कै समाप्त विधि विधान
नारि वृन्द करु पयान
पार्थ मोद मगन भेल
द्रौपदीक भवन गेल

पाञ्चाली लखि पार्थ आगत तहाँ नम्रे करु वन्दना
पार्थो प्रीति प्रगाढ़ मोदित मने भाषु सुनू हे प्रिये !
ई सन्देश विदेशहुँक अनलौं प्रेमे करी अर्पणो
आज्ञाकारिणि भै सदैव रहती इत्यादि कैँ त्याग कै

कहु कृष्ण, सन्देश नवीने प्रेमहि पावित दान
एहन रतन केँ के नै भला कहु सतत करत सन्मान
पद अनुकूल त्याग कैनहुँ पर मन राखब अनुकूल
दक्षिण भै दक्षिण पद पूरब होएब नहि प्रतिकूल

पार्थ मुदित विहुँसैत चलू आँगन सौं
आबि सभा मे मिलू प्रजा परिजन सौं
पुछथि सेवकहुँ कुशल कहथि पुन सब सौं
नगर महल रहु गूँजि महोत्सव-रव सौं

बसु विनोदक मण्डली कहुँ कृष्ण कै लए संग
करु उमंगहि सबहुँ मिलि-जिलि सार हासक व्यङ्ग
दही पार्थक केहन कटगर तकर त्यागि विवाद
पुछल हरि सौं कहु धौपिनि घरक भातक स्वाद

श्रीकृष्ण कहलन्हि, बाल वयसहि स्वादु बारिक भात
पहिलो पितर कहु ककर धीयरि भात पोसल गात
पुनि प्रश्न करु वसुदेव, सुत की थिकहुँ नन्दक लाल ?
फरिछाए कहु सन्देह मूलहि मे उठल एहि काल

विहुँसि हरि कहु, पिता श्री नन्द पालक मात्र
करक कुल के ककर जनमल से कहत के आन
सुनि सकल समाज हरि-वच मुग्धता गहि लेल
लखि युधिष्ठिर ततए अबइत से सभा उठि गेल

व्योम बाट सौं देखल मधु मोद महाने
पार्थो पुर प्रत्यागम कैलन्हि अनुमाने
जाइ अवश नरपति पहुँ मन मध्य विचारू
नभ-पथ तजि इन्द्रप्रस्थ ऋषिराज पधारू

नृपो नारदो आगतो सुनि कै
मिलू भाइ सँगे शुभे गुनि कै
करै भक्ति-भावार्चना लाए कै
रहै मोद शंका दुहू छाए कै

मुनिवर शुभागमो सुनि कुन्ती नवल वधू लै
तहँ आबि नत करु सिर विनती कहु मुदित भै
पद कल्पतरु अहँक धन चिन्तामणिक समाने
करु आशिषहि कृतारथ वर माँगबे की आने

कहल मुनिवर, अहँक अभिमत आब ध्रुव पुरि जैत
वंशवर्द्धिनि भद्रिका सुत किलकि कोर खेलैत
अल्पवयसहि देत से बल दर्प दुष्ट नशाय
दिवस-निशि जग जगमगित यश रहत स्वर्गहुँ छाय

आबि द्रौपदी भक्ति भाव सौं मुनि केँ कैल प्रणाम
सौम्य भाव सौं देलन्हि आशिष, पुरत सकल मन काम
दुहू सपत्निक उर-गंगा मे बाढ़ी प्रेम-प्रवाह
एहि कुल मध्य पृथा ओ माद्री यथा करु निर्वाह

मुनीशो कहु पाण्डवो सौं कथा ई
लखी आगमी फाल्गुनो उत्सवो ई
नभो मार्ग कौतुहलेँ त्यागलौं जैँ
कहो इन्द्र सौं जाए शीघ्रे चलौ तैँ

कह अर्जुन, मुनि ! कृपा-तरी बल तरलहुँ अथविक उदधि महान
सबहिक नीकक अहँ केँ इच्छा रहु ज्ञानी अथवा अज्ञान
तैँ हमरहुँ सन अधमक उपर अतिशय कृपा कैल मन मान
जलद कि ऊसर उर्व्वर भूमिक वर्षा मध्य करै विलगान

कहल मुनीश विश्व मे अर्जुन ! ई उज्ज्वल यश लेल महा
पाबि प्रयेँ पुरुषार्थहि पौलहुँ पद प्रातः स्मरणीय अहाँ
जीतू जे जग शत्रु - भाव धर वीर वंशधर प्राप्त करू
भोगू राज्य अखण्ड सबहुँ मिलि धर्म्म गृहस्थक जनु बिसरू

करू प्रेम निज बन्धु - वर्ग मे मतभेदो किछु पड़ै बरू
पडू भ्रमहुँ नहि पिशुन प्रपञ्चहि धर्म्म मार्ग केँ जनु बिसरू
हरू दुःख दुखार्ति देखि कै प्रण - पथ मे प्राण जाए पडू
हरू प्रभू सौं धैर्य्य धरू जग पुरुष थिकहुँ पुरुषार्थ करू

शंख चक्र राजित कर सुर गण सेवहि नुति नित भाव
भोगी शयन रमा - रत नित प्रति पूज्य प्रजापति राव
गोपालक विश्वम्भर पूरक प्रण यश जाग अनूप
आश्रय आश्रम आश्रमस्थ गृहि नर नारायण रूप

तखैं बिहुँसैत कृष्णो आबि गेला
मुनिक लग जोड़ि कर नत माथ भेला
पकड़ि कर - कंज मुनि ई नम्र भाषू
अपन माया क जालो समटि राखू

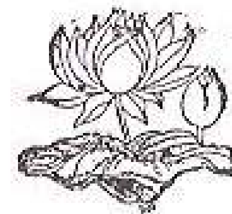
हे कृष्ण ! सृष्टि गृह नाटक सूत्रधार
माया नटीक वश जीवक नृत्यकार
कर्म्मानुसार बहु रूपक स्वाँग लाब
मानू बिनै जनु फँसाबिय मोहि आब

कृष्णहि सौं मुनि नम्र बिनै कए पाण्डव सौं पुनु ई बजला
आब चली अमरेशपुरी कर वीणा कमण्डलु लै चलला
सोदर संगहि भूप पड़ू पद - पद्महि नारद बेरि बिदा
दै 'रुचिरा'शिष दैत चलू श्रीरस्तु सदा, शुभमस्तु सदा

इति श्री 'सुभद्राहरण' महाकाव्ये पार्थपुनरागमननाम

त्रयोदशः सर्गः ॥

श्री मंगलमयि मूर्तिमती मा ! मंगलकारिणि विनय करी
मंगलमय मम वचन रचन ई मंगलदायक करहि धरी
मंगल काव्य प्रसाद अहिक थिक नत रघुनन्दन माँगि रहो
मंगल मोद रसिक जन पाबथु मंगलमय हो सकल महो



व्योम रस वसु चन्द्र(१८६०)वत्सर शालिवाहन भूप
शारदी दुर्गोत्सवक तिथि शम्भु परम अनूप
दिवस रवि सुत पूरि पुस्तक पूजि पद जगदम्ब
कैल अर्पण नमित मस्तक आश शुभ अवलम्ब

—:०::०:—

कवि-वंश-परिचय

नान्यदेव कर्णाट - नृपति - कुल - रवि सन मानी
मिथिला देशक निशि - अराज नशि प्रगटल जानी
निज प्रभुत्व बल देश विदेहक शासक भेला
राज्य व्यवस्था सहित धर्म्म-ध्वज थिर कैँ देला
दुखित दशा निज देशहिक देखि दया उर आनि कै
अवतरला पुनु जनक जनु लोक रहै अनुमानि कै

चित्रगुप्त - वंशीय कर्ण कर्णाटक वासी
मूल वलाइन 'लक्ष्मीकर' बीजी सुख रासी
मम वंशज कायस्थ कमल कुल मंत्री श्रीधर
संग आनि नृप नान्यदेव मिथिला शासन कर
श्रीधर 'श्रीधर' मूर्ति कैँ अन्हराठाढ़ी ग्राम मे
स्थापित कै सुरपुर गेला उज्वल कै निज नाम के

'बोधिदास' पर - दार - द्रव्य - हिंसा परित्यागी
गिरा गौरवित भाषु गंगहिक प्रति बड़ भागी
"गंगे ! याहि पवित्रताम्" ई वचन सुनाओल
'पुरुषपरीक्षा' मध्य ताहि विद्यापति गाओल
अति प्रशंस मम वंशहिक ओ जनु अवतंशे छला
धर्म्म चरित्रक बलहिं से परब्रह्महुँ मे लय भेला

ओइनवार - कुल - नृप - किरीट शिवसिंह प्रतापी
जनिक 'अमियकर' सचिव 'बोधि' वंशज यश व्यापी
मिथिला राजक अभय दान ओ पुनि लै आओल
गाढ़ समय मन्त्रित्व धर्म्म पालक यश पाओल
हुनक रचित कविता कलित कीरतिकैँ राखल अचल
जनिक गुणावलि गान ने विद्यापति ई पद रचल

"नीति निपुण गुणनाथ थंक से अतिशय आगर
कोष काव्य व्याकरण अधिक अधिकारक सागर
सबकर कर सम्मान सुजन सौं नेह यथाविध
विप्र दीन अति दुखी सबहुँ कौ विपद छोड़ाविध
कायस्थ माँह सुर सिद्ध भउ चन्द्र सुधा इव शशिधर
। हरिकंठहार'कल प्रचारइ अमिय बरसइ 'अमियकर'"

'अमृतकर' सुत नृपति सचिव पद प्राप्त "विजयकर"
तनिक तनय 'रघुनाथ' सदा से सेवक रघुवर
पुत्र - रत्न कर प्राप्त 'कृष्णकर' सन बड़ भागी
'कंदानरायण' नृपति सचिव * हरि पद अनुरागी
'अच्युत' 'भीमादि'क तनय तनिक भूप सेवा निरत
कुल परम्परा धर्म्म कें पालब मानथि परम व्रत

खण्डवलाकुल कमल प्रभाकर महिप महेशे
जे विद्या बल प्राप्त कैल मिथिला सन देशे
नृप 'राघव' राघव समान तेहि कुल मे जानू
थो 'अच्युत' सुत 'नाथ' 'बखाइ' सचिव † सनुमानू
नृप सुधास बीरू रहै पाबि अनुग्रह धनक मद
नृप अनुशासन त्यागि से 'बीरूसाह'क गहल पद

नरपति 'राघव' क्रुद्ध युद्ध करबे चित धैलन्हि
दल बल बख्सी प्रेषि नाश तकरो कै देलन्हि
कैल प्रदर्शन सुभग 'बखाइ'क 'काली' बुद्धि बल
पाबि विजय नृप हर्षेहि देलन्हि महि सेवा फल
तनिक वंशधर गण ततहि बसला मोद अपार मे
नृपक देल महि पूर्वजहि भोगी हम "टटुआर" मे

* रास बिहारी दास— मिथिला दर्पण
† मुकुन्द झा बख्सी—मि० भा० इतिहास

'नाथ' तनय रहु नाम 'लालमणि' वंशक मणि सन
तनिक पुत्र हरि भक्त नृपक सेवक 'नारायण'
'हरष सिंह' तसु तनय तपहि मे निरत सदच्छन
'जयजयराम'क सन सुपुत्र जैं पात्र विचक्षण
'भाइलाल' पुनु 'पलटसिंह' जयजयरामक पुत्रवर
एक सेवल नृप रुद्र कैं तनिक अनुज गण कें अपर

'पलटसिंह' हरिभक्तिक बल दुइ पुत्रो पाओल
'रघुनन्दन' 'हरिनन्दन' दुहु जन नाम धराओल
'रुद्रसिंह' नृप सुत 'गोपीश्वर' अतिशय ज्ञानी
काव्य रसिक,कवि, कविसमाज घसि तेहि सनुमानी
बालहुँ वय मे कै कृपा दिए जीविका देल से
काव्यकला रुचि क्रमहि मोहि संसर्गक फल भेल जे

नृपकुल सेवा निरत बहुत निज वयस बिताओल
कवि जन संगहि क्रमहि काव्य रचना मन लाओल
जखन जेहन मति देथि अम्बिका से रचि लेलहुँ
मैथिलि हिन्दी वचन मध्य बहु रचना कैलहुँ
नीक भेल अथवाद वा अम्ब कृपा फल थीक ई
बुध जन सैह विचारि कै अपनाबथि से नीक ई

बसि सखवाड़े ग्राम ग्रन्थ मैथिली मे रचल
नत सिर कोटि प्रणाम करिअ मैथिली चरण मे

—॥ इति शुभम्भूयात् ॥—